लजकोटर

ई उपन्यास कोनो व्यक्तिविशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

लजकोटर

उपन्यास

(प्रवासीक जीवनपर आधारित)

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5346-101-0
दाम : 350 रूपया

पहिल संस्करण : 2018

लेखक एवम् प्रकाशक : श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No : C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No : 6 Builders Area Greater Noida
District : Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
Phone : 01202343563 M-9968502767

लजकोटर

A Maithili Novel
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण

समस्त प्रवासी मैथिलकेँ!
गाम-घरसँ फटकी रहितहुँ ,
जिनकर मोन सदिखन ओतहि टाङल रहैत छनि।

दू आखर

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल। एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि।

हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव समय-समय पर भेटैत रहल अछि । हमर अनन्य मित्र श्री ओम प्रकाश सपरा,श्री मदन मोहन सिन्हा, एवम् श्री संजीव सिन्हा हमरा लिखबाक हेतु निरंतर उत्साहित करैत रहलाह। हिनकासभकेँ हार्दिक धन्यवाद ।

आशा अछि जे पाठक लोकनिकेँ ई पुस्तक पसिंद पड़तनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा
दीपावली २०१८
७.११.२०१८

लजकोटर

हमर गाम अछि श्रीपुर । एक समयमे श्रीपुर आओर एकर आस-पास खाजपुर,इहपुर,भोजौल नामी गामसभ छल। खेतीबारीसँ लए कए मालजालक पैकारी धरिमे एकर जोड़ नहि छल। गाम-गामसँ लोकसभ मालजालक मेलामे एतए अबैत छलाह। समय पलटी लेलक । सालक-साल रौदीसँ गाम -घरमे लोकक हालति दिन-प्रतिदिन खराब होइत गेल । जीविकाक छोट-मोट साधन सभ सेहो लुप्तप्राय भए गेल । दोकानसभ ग्राहकक बिना बंद भए गेल । क्रमशः हालति बेकाबू होइत चल गेल । लोकक गामसँ पड़ाहि लागि गेल। गामसँ कैकगोटे दिल्ली,पंजाब, गुजरात,मुम्बइ चलि गेल। देखिते-देखिते गामक-गाम भम्म पड़ि रहल छल। बूढ़ आ बच्चा छोड़ि केओ कतहु नहि देखाइत ।

हमरो घरक हालति दिन-प्रतिदिन लचरल जा रहल छल। हम कैकबेर गामसँ निकलबाक प्रयास केलहुँ। मुदा माए नहि मानथि, कानए लागथि । एकदिन ओसारापर ओ चिंतामग्न बैसल छलीह । कारण बुझि रहल छलिऐक ,मुदा समाधान आब ओहिगाममे नहि रहि गेल रहैक। हमर गामक कैकगोटे दिल्लीमे रहथि । खाजपुरक हमर सहपाठी किसुन सेहो ओतहि काज करथि। आस-पाससँ किछुगोटे दिल्ली जाइत रहए । हम बहुत मोसकिलसँ माएकेँ मनओलहुँ आ ओकरेसभक संगे दिल्ली बिदा भए गेलहुँ ।

जेना-तेना टीकसक हेतु टाकाक जोगार केलहुँ आ बिदा भए गेलहुँ । गामेमे टीसन छलैक । माए पछोड़ धेने टीसन धरि चलि आएलि । जहन ट्रेनपर बैसि गेलहुँ आ ट्रेन सीटीपर सीटी देबए लागल तँ हमर माएकेँ नहि रहल गेलैक। ओ भोकासी पारि कए कानए लागलि । आस-पास ठाढ़ लोकसभक ध्यान हमरासभ पर जाइ ,मुदा ओहि माहौलमे ककरो बेसी खोज-खबरि लेबाक समय नहि रहैक । जाबे ट्रेन खुजल नहि,माए ट्रेनक खिड़की लग ठाढ़ि भेल तरह-तरहसँ अपन आ हमर मोनकेँ मनबैत रहलि । हम साधारण किलासक डिब्बामे कातक सीटपर बैसि गेल रही । उठि नहि सकैत छलहुँ कारण बहुत मोसकिलसँ पछड़ा-पछड़ी कए ओहिमे घुसिआएल रही आ एके संगे जेना लोकक हुजुम ओहि डिब्बामे पैसि गेल रहए। कहुना कए हमरा कातबला सीट भेटि गेल रहए आ ओकरा बकोटने बैसल रही ।

ट्रेन सीटी पर सीटी मारि रहल छल । ओकर गोलका चक्कासभ घुमए लागल । हम तैओ माएक दिस तकैत रही । ओही समयमे बुझाएल जेना केओ जोर-जोरसँ हमर नाम लए चिकरि रहल अछि । मुदा सीटीक तेज अबाजमे ओ दबि गेलैक । जाबे किछु बुझितऐक,देखितिऐक ताबे ट्रेन प्लेटफार्म छोड़ि चुकल छल। हमर सभटा ध्यान माएपर छल । ओ बड़ीकाल धरि ओतहि आगू बढ़ैत ट्रेनकेँ देखैत रहलि । हमहुँ ओमहरे तकैत रहलहुँ । किछुए कालमे सभ किछु अदृश्य भए गेल ।

ट्रेनकेँ खुजि गेलासँ यात्रीसभकेँ उसास भेलैक । ओहुना दिल्ली जाएबला ट्रेनमे सभदिन भीड़ रहैत छैक ,मुदा ओहि दिन किछु बेसीए लोक ठसल रहैक । एकहु इंच जगह खाली नहि रहैक। शौचालय धरिमे लोकसभ बैसि गेल छल । ऊपरसँ ई ट्रेन

छल-जनसाधारण ,जेहने नाम तेहने काज । दरभंगासँ दिल्ली पहुँचएमे दू दिन लागि जाइत छलैक। एहि ट्रेनक विशेषता इएह छलैक जे कम भाड़ामे बिना आरक्षणोकेँ लोक जेना-तेना दिल्ली चल जाइत छल। जहिए मोन होअए,जान हाथमे लिअ आ ट्रेनमे बैसि दिल्ली बिदा भए जाउ । जै दिने जाइक ,कोनो अगुताइ कथीके रहतैक? दिल्ली मे ने काजक ,ने रहबाक कोनो ठेकान रहैक ।भने ट्रेनमे बैसल रहैत छल,किछु समय ओहुना कटि जाइत छलैक । जकरा बेसी अगुताइ रहैक से ओहि ट्रेनमे बैसबे नहि करए ।कोनो आओर जोगाड़ करैत।

ट्रेन जेना-जेना आगू बढ़ि रहल छल माएक कनैत ,झर-जर नोर बहैत मुँह वारंबार ध्यानमे अबैत रहल । थोड़बेकालमे ट्रेन दरभंगा टीसन पहुँचि गेल । प्लेटफार्मपर ट्रेनकेँ रुकितहिँ चढ़नाहर यात्रीसभमे जबरदस्त धक्का-मुक्की होबए लागल । लगैत छल जेना सौंसे दरभंगा एही ट्रेनसँ जाएत । ताबते एकटा महिला जोर-जोरसँ चिकरए लागलि । ओकरा एना हाकरोस करैत देखि कए लोकसभ अकचका गेल । की भेलैक? सभ इएह प्रश्न एक-दोसरसँ पुछि रहल छल कि ओ महिला अपने स्पष्ट केलकैक-

“ओ बाबूसभ! लुटि गेलहुँ ।"

"की भेल?"-एकटा यात्री पुछलकैक । ओ अपन नुआ दिस इसारा कए रहल छलि । ओकर जाँघ लग चीरा लागल रहैक । जाँघमे गिरह बना कए ओ किछु टाका रखने छलि । ट्रेनमे चढ़ैत काल ओकरा चारूकातसँ तेना ने घेरि लेलकैक जे ओकरा ससरब मोसकिल रहैक । ट्रेन खुजबाक समय लगीच छल । यात्रीसभ कहुना कए ट्रेनमे घुसिएबाक फिराकमे छल । एही माहौलक

फएदा उठबैत जेबकट्टासभ ओकर डाँर लग ब्लेड मारि कए टाका निकालि लेने रहैक। से बात कहि-कहि ओ कनैत जा रहल छलि।

जाबे केओ किछु कहतैक,बुझतैक जेबकट्टासभ धराधर ट्रेनसँ कुदि गेल । ओहिमे बच्चा,बूढ़,जवान पुरुख,मौगीसभ रहए। ओ सभ अपन हुलिआ तेहन बनओने रहए जेना सही मानेमे यात्रापर निकलल छल । ककरो हाथमे मोटरी,केओ पेटी, तँ केओ जनमौटी बच्चाकेँ लदने प्लेटफार्मपर ट्रेनक आगमनक प्रतीक्षा कए रहल छल । ट्रेन अएलाक बाद ओ सभ डिब्बाक मुँहथरिकेँ घेरि लेलक आ तेहन कए देलक जे कोनो यात्रीकेँ डिब्बामे पैसब पराभव भए गेलैक । एहनसन लगलैक जेना ओहोसभ यात्री अछि आ अनके जकाँ ट्रेनमे चढ़बाक प्रयास कए रहल अछि । डिब्बामे मुँहथरिएपर तेहन ने कए देने रहैक जे आन यात्रीसभकेँ सभगति भए गेलैक । ओही अफरा-तफरीक फएदा उठबैत ओसभ ओहि महिलाकेँ चारूकातसँ घेरने रहल आ सीटपर पहुँचैत-पहुँचैत हाथ साफ कए देलकैक । ओकरासभकेँ गेटपर धक्कम-धुक्की करैत हमहुँ देखने रहिऐक ,मुदा ई नहि सोचि सकलहुँ जे ई सभ जेबकट्टी करए हेतु व्यग्र अछि ।

ओमहर ओहि महिलाकेँ रहि-रहि कए चिकरब-भोकरब बंदे नहि होइक । सौंसे डिब्बामे विचित्र माहौल बनि गेलैक । सभकेँ जिज्ञासा होइक जे ओकरा बारेमे जानकारी होइ जे आखिर ओ के अछि,केओ ओकरा संगे छैक कि एसगरे अछि ,मुदा अपन सीट छोड़बाक साहस ककरो नहि होइक ,कारण जँ एकबेर सीटपर सँ उठि गेलहुँ तँ दोबारा ओ सीट भेटबाक कोनो उमीद नहि कए सकैत छलहुँ कारण चारूकात ठाढ़ यात्रीसभ धपाएल छलैक। डिब्बामे चुट्टी ससरबाक जगह नहि रहैक । ट्रेन नहूँ-नहूँ

आगू बढ़ि रहल छल । ओहि महिलाक कष्ट देखि कए हमरा नहि रहल गेल । ताबे डिब्बाक माहौलो कनी शांत भए गेल छल । हम पुछलिऐक-" की सभ छल ओहिमे?"

" हे भगवान! नहि पुछू । सभटा ओहीमे छल, गहना, टाका आ..."-से बजिते -बजिते ओ फेरसँ बफारि तोड़ए लागलि। बड़ मोसकिल हालति छलैक । कनीक सहानुभूति भेटितहि ओ हमरा लग सहटि कए आबि गेलीह । हमर लगीचमे एकटा अधबएसू यात्री बैसल छलाह। हुनका आग्रह केलिअनि जे कनी घुसकि जाथि आ ओ मानिओ गेलाह ।

ट्रेन क्रमशः गति धेने जा रहल छल । कनीकालमे समस्तीपुर आबि गेल । ट्रेनकेँ आगू बढ़बाक हेतु सिगनल नहि भेटि रहल छलैक । ओतए किछु नित्यप्रति आबए-जाएबला यात्रीसभ उतरलाह तँ किछुगोटे फेर धक्का-मुक्की कए ओही डिब्बामे पैसबाक फिराकमे छलाह ताबे किछु यात्रीसभ डिव्वाक गेटकेँ बंद कए ओहीठाम ठाढ़ भए गेलाह जाहिसँ केओ नव यात्री अंदर नहि पैसि सकए ।

ओ ट्रेन दू घंटा समस्तीपुर जंक्सनक प्लेटफार्म संख्या तीनपर ठाढ़ रहल । लाइने नहि दैक । हमरा लगमे बैसलि ओहि महिलाक एकटा टिनही पेटी सीटक नीचाँमे राखल रहैक । रहि-रहि कए ओकरा ओमहर ध्यान चलि जाइक । डिब्बामे एहन हालति नहि रहैक जे ओ अपन पेटीकेँ लगीचमे कतहुँ लए आनए। ओकर दुविधा बढ़िते जा रहल छलैक । आखिर हम पुछलिऐक-" की बात छैक ? ओमहर किछु राखल अछि की ?"

बहुत संकोचपूर्वक ओ बजलि-" एकटा टिनही पेटी सीटक नीचाँमे धए देने छिऐक । बाँचल-खूचल समान ओहीमे

अछि । कहुना ओकरा एमहर अनितहुँ से जोगारे नहि बुझा रहल अछि ।"

"कनी काल थम्हू । ट्रेन खुजए दिऔक। तखन प्रयास कएल जेतैक ।" हमर बात सुनि कए ओकरा बहुत संतोख भेलैक। मुदा ट्रेन खुजितैक तखन ने? दू घंटासँ ठामहि ठाढ़ छल । आखिर ट्रेन सीटी मारलक । लगलैक जे आब ट्रेन खुजत । ताबतेमे ट्रेन सड़कए लागल । प्लेटफार्मसँ फटकी होइतैं ओकर गति बढ़ए लगलैक । यात्रीसभमे प्रसन्नता छलैक जे आखिर ई ट्रेन ससरल तँ।

एतेक कालक बात पहिलबेर ओहि महिलाकेँ मोन हल्लुक देखलिऐक ,साइत एहि लेल जे आब ओकर पेटी बँचि जेतैक। हम सीटपर बैसल यात्रीकेँ ओकर नीचाँमे राखल पेटीकेँ आगू बढ़ेबाक हेतु इसारा केलिऐक । मुदा ओ टस सँ मस नहि भेल ।

बहुत मोसकिलसँ हम आगू ससरलहुँ आ सीटक नीचाँ हाथ दए ओहि टिनही पेटीकेँ घिचलहुँ । पता नहि ओहिमे की राखल छलैक? ओ तँ लोहोसँ बेसी भारी लागि रहल छल । कहुना-कहुना कए ओकरा अपन सीटपर अनलहुँ । से देखि ओहि महिलाक मुँह प्रसन्नतासँ लाल भए गेलैक । ओकरा अपन पेटी भेटि गेलैक सएह कोन कम ।

हमर व्यवहारसँ ओ बहुत प्रसन्न छलीह । कैकबेर हमरा दिस टकटकी लगओने देखिअनि ,मुदा ने हम किछु पुछिअनि आ ने ओ किछु कहथि । देखबा-सुनबामे ओ रमनगर छलीह । गोर-नार,बड़ी-बड़ी आँखि,सोटल देह,लगैक जेना कोनो संभ्रांत घरक महिला छथि । तखना एना साधारण किलासमे किएक यात्रा कए रहल छथि, ओहो एसगरे? बहुत रास प्रश्न हमरा मोनमे आबि रहल

छल । जखन हम किछु नहिए बजलहुँ तँ ओएह टोकलीह-"अहाँ कतए जेबैक?"

"हमरा अपनो से नहि बूझल अछि ,मुदा दिल्ली धरि तँ जेबे करबैक।"

"तकरबाद?"

"भगवान मालिक।"

हमर बात सुनि कए ओ अकचका गेलीह । मुदा ओकरा एकटा अपरिचित व्यक्तिसँ एकतरफा आओर किछु पुछबाक साहस नहि भेलैक । ओ चुप रहि गेलि । चुप हमहु रही ,मुदा मोने-मोन बहुत रास प्रश्नसभ उठैत रहल ।

कहुना कए ट्रेन पटना टीसन पहुँचल । ओतए बहुत रास यात्रीसभ उतरि गेलाह । डिब्बामे कनी उसास भेलैक । भेल जे आगूक यात्रा नीकसँ कटि जाएत । मुदा ई हालति बहुत काल नहि रहल । फौजीसभक हुजुम कतौसँ आबि कए हमरेसभक डिब्बामे घुसिआ गेल । ककरो साहस नहि भेलैक जे टोकारा दैत । सभक हाथमे हथिआर छलैक आ ओ सभ कतहु काजपर बिदा छल । एहन हालतिमे केओ की बाजैत?सभ चुपचाप रहि गेल । आब जे डिब्बामे हाल भेल से पुछू नहि ।

ट्रेनमे फौजीसभक घमंडसँ आओर यात्रीसभक हाल-बेहाल छल । ओहि महिलाकेँ ओसभ घेरि लेने छल । ओ घुसकैत-घुसकैत हमरासँ सटैत गेलि । आओर कोनो रस्तो नहि रहैक । टीसनपर ओकर दहिना हाथपर झक दए इजोत पड़लैक। ओहिमे ओकर नाम लिखल छल-मालती ।

ट्रेन आठ घंटा देरीसँ चलि रहल छल । रातिक समय छल। मुसराधार बरखा भए रहल छल । तथापि ट्रेन चलि रहल

छल । यात्रीसभ औंघाइत-पौंघाइत एक-दोसरपर खसैत आगू बढ़ि रहल छल । कैकबेर केनादनि लागि रहल छल । जेना-तेना ट्रेन आगू बढ़ि रहल अछि से सोचि-सोचि यात्रीगण प्रसन्न होइत छलाह । करवनो -ने- करवनो तँ पहुँचबे करत ।

मुदाबात एतबेपर नहि रूकल । बड़ीकालक बाद डिब्बाक गेटपर सँ एकटा यात्री चिकरल -

"आहिरे बा! ट्रेनतँ ठाढ़े अछि ।"

"ठीके ई तँ बीचबाधमे आबि कए रुकि गेल अछि"- दोसरगोटे बाजल ।

गेटपर ठाढ़ यात्रीसभ हुलकल । चारूकात अन्हार गुज्ज, किछु नहि देखा रहल छल। ऊपरसँ बरखा से जोर पकरने छल । एकटा फौजी कहुना कए बाहर मुड़ी केलक आ बाहर देखिते चिकरि ऊठल-

" जुलुम भए गेल, ट्रेनक इंजन तँ जा चुकल अछि ।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि?"- तेसरगोटे बाजल।

"नहि विश्वास होइत छह तँ अपने देखि लएह ।"

ओहो यात्री फौजी छल । कहुना कए मुड़ी बाहर केलक आ आगू-पाछू देखि ओहो ओहिना चिकरल-

"सही कहि रहल छथि, ट्रेनक इंजन तँ चलि गेल ।"

औ बाबू! एतबा बात सुनितहि सौंसे डिब्बामे हड़बिड़रो मचि गेल। ट्रेनक अगिला भाग चलि गेल रहैक आ पछिला डिब्बासभ ससरैत-ससरैत थोड़ेकालक बाद लाइनपर ठाढ़ भए गेल। रातिक समय,ऊपरसँ मुसराधार बरखा होइत ,ककरो किछु अंदाज नहि लगलैक ।

कनीके आगू गाजिआबाद टीसन रहैक । ट्रेनक इंजिन आ अगिला डिब्बासभ ओहिठाम रूकल। हमरसभक डिब्बा सभसँ अन्तमे छलैक । ससरैत-ससरैत हमरसभक डिब्बा गाजिआबादसँ पहिने बनल मानवरहित गुमती लग ठाढ़ भए गेल। ताबे फरीछ भए गेल छल । बरखा सेहो रुकि गेल छल । कतेको यात्री ओतहि उतरि टीसन दिस चलि गेलाह । हम मालतीकेँ तकैत रहलहुँ ,मुदा ओ कतहुँ नहि देखेलीह । हम आश्चर्यचकित रही जे आखिर ओ कतए गेलीह।

हमरा असोथकित देखि एकटा यात्री कहलक-" भाइ कथी दुबिधामे पड़ल छी । आब ई डिब्बा कतहु नहि जाएत । एकरा छोड़ने कुशल ।"

"ऐँ! तखन दिल्ली कोना जाएब?"

"पहिने उतरब तखन ने कतहु जाएब । सौंसे डिब्बा खाली भए गेलैक आ अहाँ एसगरे बैसल छी ।"

"से तँ सत्ते"-हम कहलिऐक । असलमे हमर मोन तँ मालती लए कए आशंकित रहए, मुदा कइए की सकैत छलहुँ? हारि कए हमहु ओहि डिब्बासँ उतरि गेलहुँ आ पैरे -पैरे टीसनपर पहुँचलहुँ। ओहिठाम ट्रेन लागल छल ,मुदा कखन खुजत तकर कोनो ठेकान नहि ।

दिल्ली गेनिहार बहुत रास यात्रीसभ ओहिमे बैसल रहथि। हमहु कोनो डिब्बामे घुसिआ गेलहुँ । कनीकालमे ट्रेन खुजल । नई दिल्ली टीसनसँ पहिने आबि कए सिगनल नहि भेटबाक कारण फेर ठाढ़ भए गेल । यात्रीसभकेँ हालति बहुत पातर भए

गेल छल। छत्तीस घंटाक जगह साठि घंटामे ट्रेन आखिर नई दिल्ली टीसन पहुँचल । यात्रीसभकेँ जान-मे-जान आएल। हमहु ट्रेनसँ उतरि प्लेटफार्मपर ठाढ़ रही कि कतहुसँ चिन्हल आबाज आएल-

"गोविंद "

हम मुड़ी पाछू केलहुँ तँ देखैत छि जे किसुन ठाढ़ अछि।

जेना ककरो प्रतीक्षा कए रहल अछि । हम पुछलिऐक-" टीसनपर की कए रहल छह?"

हमर घरनी एही ट्रेनसँ आबि रहल छथि । ट्रेन तँ आबि गेल ,मुदा ओ कतहुं देखा नहि रहल छथि ।"

किसुन संगे हम सौंसे ट्रेन ताकि लेलहुँ ,मुदा ओकर घरनीक कतहु पता नहि चललैक । ओकर हालति पातर भेल जाइत छल। ओकरा साहस दैत हम कहलिऐक -" तोहर घरनीक संगे केओ आओर छलनि कि नहि ?"

"केओ नहि छलैक भाइ । गाममे हमर माए संगे झंझटि भए गेलैक आ एकाएक बिना कोनो पूर्व सूचनाकेँ गामसँ बिदा भए गेलि । बादमे हमर सार खबरि केलक जे एना-एना बात। कम-सँ-कम नीकसँ टिकटक ओरिआन तँ कए लैत, सेहो नहि केलक । जहिना-तहिना एहि ट्रेनमे बैसि गेलि । सौंसे ताकि लेलहुँ, कतहुँ ओकर कोनो ठेकान नहि बुझा रहल अछि । ताबतेमे एकटा रेलवे पुलिस डंडा भजैत ओहिठाम आएल । किसुन अपन दुखनामा ओकरा कहए लागल। पुलिस ओकरा लेने-लेने अपन बूथपर चल गेलैक । ओकरा संगे-संगे हमहुँ ओतए पहुँचलहुँ ।

पुलिस बीटपर पहुँचतहि एकटा आओर पुलिस ओतए आबि गेल । दुनूगोटे किसुनसँ प्रश्नपर- प्रश्न पुछए लागल जेना ओ

कोनो पैघ अपराधी होअए । हमरा ऊपर सेहो ओकरसभक बक्र दृष्टि बुझाए । एक तँ तीन दिनसँ रस्ताक झमारल आ ताहिपरसँ ई एकटा नवका फसाद । पुलिससभक घमंड देखैत बनैत छल । ओसभ लगातार बेउरेब प्रश्न-उत्तर करैत रहल जाहिसँ तंग भए किसुन ठोह पारि कए कानए लागल ।

"बेसी नाटक नहि करह । तोहर पत्नी एहि ट्रेनमे चढ़ल तकर कोनो सबूत छह?"

" ओ तँ बिना टिकटेकेँ चढ़ि गेल रहए । रस्तामे टीटी बाबूसँ टिकट बनओने रहए ।"

ओकरा बेसी कनैत देखि कए दोसर पुलिस कनीक हल्लुक पड़ल । ओ कहलकैक-"तोरा लगमे हुनकर कोनो फोटो छह?"

किसुन अपन पाकिटमे हाथ देलक । ओकरा जेबीमे अपन घरनीक एकटा फोटो रहैक। ओ निकालि कए हमरे हाथमे देलक । फोटो देखि कए हम अबाक रहि गेलहुँ । ई तँ ओएह छथि। हम पुछलिऐक जे हुनकर नाम की छनि?

"मालती"-किसुन बाजल ।

आब तँ बात पक्का भए गेल जे हमरा संगे यात्रा केनिहारि ओकर घरनिए छलीह । हमरा सकपकाइत देखि पुलिसकेँ सक भए गेलैक । ओ चट दए हमरा पुछैत अछि -"बात की अछि? सच-सच बाजह ?"

हम पुलिसकेँ सभटा बात खोंइचा छोड़ा कए कहि देलीऐक । मुदा से हमरेपर भारी पड़ल। ओकरासभकेँ सक रहैक जे जरूर हमही किछु केलिऐक । लएह आब की करू? लाख

बुझबिऐक जे हम तँ अपने परेसान छी ,मुदा ओकरा सभपर कोनो असरि नहि भए रहल छलैक। ओ सभ बेर-बेर एतबे बात कहैक-

"जखन ओ महिला तोरे लग बैसल रहए तँ तोरा पता किएक नहि चललह? ओ अचानक कतए चलि गेलि आ जँ कोनो कारणसँ चलिए गेलि तँ वापस किएक नहि आएलि?"

"रस्तामे बहुत बरखा होइत रहैक । ऊपरसँ हमर सभहक डिब्बासे ट्रेनसँ हटि गेल रहैक। राति भरिक जगरनासँ हमर आँखि लागि गेल । ओही बीचमे ओ कतहु चलि गेलीह, कतए गेली, किएक गेली किछु नहि कहलीह, ने हम किछु बुझि सकलिऐक।"- अपना भरि हम पुलिसकेँ आश्वस्त करबाक बहुत प्रयास केलहुँ,मुदा ढ़ाक के तीन पात । बात फेर घुमि-फीरि कए ओतहि पहुँचि जाइत छल । हमर हालति तँ देखए जोकर भए गेल छल । एक तँ कैक दिनसँ ट्रेनमे दुर्गति भेल रहए, ऊपरसँ ई दुर्घटना । मोने-मोन कालीमाइकेँ गोहरबैत रहलहुँ। पुलिसकेँ तँ कहुना किछु समाधान करक रहैक । ओ सभ हमरा कथकड़ी लगओलक आ हाजतिमे बंद कए देलक।

एकयुगक बाद हमरा किसुनसँ भेंट भेल रहए । मोने-मोन हम कतेक खुस होइत रही जे केओ तँ भेटल । मुदा घटनाक्रम एहन रुखि लेत से तँ सपनोमे नहि सोचल जा सकैत छल। हमर परेसानीक हेतु किसुन कतहुसँ जिम्मेबार नहि छल । ओ तँ अपने चिंतामे छल । मुदा कएल की जाए जाहिसँ पुलिसिआ चक्रव्यूहसँ जान बाँचए?

किसुन आ हम एकहि संगे इसकूल जाइत रही । गामसँ चारि कोसपर इसकूल रहैक । नित्य-प्रति पैरे आएब-जाएब । रस्तामे कैक गामक कैकटा विद्यार्थी संग भए जाइक । गप्प-सप्प

करैत हमसभ इसकूल पहुँचि जाइ । समय कोना बितैक,पतो नहि चलैक। हम आगू नहि पढ़ि सकलहुँ । घरक परिस्थितिसँ लाचार भए गामेमे रहि गेलहुँ । कहुना कए कैक बेरे मैट्रिक पास केलहुँ । खेती बारीमे लागि गेलहुँ । जे कनी-मनी पढ़ने रही सेहो क्रमशः बिसराइत गेल ।

मालती आ कुसुम सहोदर बहिन रहथि । हुनकरसभक पैतृक गाम भोजौल हमर गामसँ सटले छल । मुदा ओ सभ कहिओ अपन गाममे नहि रहलीह । हुनक पिता कोलकातामे रेलवेमे टीटीइ रहथि । भरि जिनगी भाड़ाक मकानमे रहलथि । बगए-बानीसँ लगितए जे बंगालिए छथि। मुदा मोनमे अपन माटि-पानिक मोह सभ दिन बनल रहलनि । गाम अबैत-जाइत रहलाह।

कुसुम तेजगर रहथि । ओ सभदिन नीक करैत गेलीह । कालेजक पढ़ाइ हेतु बादमे दिल्ली आबि गेलीह आ तकरबाद ओतहि रहि गेलीह । ओ बिआहो अपन रुचिसँ दिल्लीएमे केलीह। मालती बिआहसँ पहिने गाम अएलीह। हुनकर बिआह हमर इसकुलिआ संगी किसुनसँ भेलनि । किसुन दिल्ली रहए लागल रहथि ,मुदा मालती गामेपर रहथि।

किसुनक घरक हालति ठीक-ठाक रहैक । ओ कालेजमे नाम लिखओलक । बीए पास केलक। सरकारी नौकरीसभक बहुत प्रयास केलक । कैकबेर साक्षात्कारो भेलैक ,मुदा फुस्स..। हारि कए एकटा मंदिरपर पुजारीक काज धए लेलक । ओहीठाम एकटा छोटछीन कोठरीमे रहितो छल । एहन हालति नहि रहैक जे परिवार संगे राखि सकए । तेँ मालतीकैँ गामेमे रखने छलैक । अपना भरि बहुत प्रयास करैत छल जे सभगोटे गाममे नीकसँ रहए । मुदा सासु-पुतहुमे खटपट होइते रहलैक आ तकरे परिणति

भेल जे मालती एकसरे विना कोनो पूर्व सूचनाकेँ घर छोड़ि कए दिल्ली बिदा भए गेलि ।

पुलिस हाजतिमे हमरा बंद देखि कए किसुन बहुत दुखी रहए ,मुदा ओहो तत्काल किछु नहि कए सकल । राति भए गेल छल । हारि कए ओ अपन डेरा वापस चलि गेल । हम राति भरि हाजतिएमे पड़ल रहलहुँ ।

पुलिसोक हाथमे किछु नहि रहैक । ओकरा हमर बातसँ हमरे पर सक होइत गेलैक । गलती हमरे छल । पुलिस लग ओतेक बाजैक नहि छल ,मुदा जे हेबाक छल से भए गेल छल। राति भरि औंघाइत हाजतिमे बंद रहलहुँ । भोर भेने हमरा कनीक पलखति भेटल । पुलिससभक काज बदललैक। ओ दुनू गोटे रतुका काज खतम कए कागज-पत्र दए चल गेल। ताबे विजय सेहो आबि गेल रहथि । ओ थानेदार छलाह । ओ कारी-कारी करड़ल मोछ,गोर-नार छः फीटक बेस नमगर-पोरगर व्यक्ति छलाह । हमरा देखि कए ओ गुम्म पड़ि गेलाह। एकटा पुलिस केँ पुछलखिन -"हाजतिमे के बंद अछि?"

"कहि नहि सरकार! हम तँ अखने अपनेक संगे अएलहुँ अछि ।"

"थानाक डायरी आनह ।"

"जी सरकार!" आओर ओ पुलिस सभटा कागज-पत्तर विजयकेँ आनि कए दए देलक। विजय कागजसभ देखलाक बाद पुछलथि-

" अहाँ एहि चक्करमे कोना फँसि गेलहुँ?"

"हमरा किछु नहि फुराएल । राति भरिक दुर्गति आ ट्रेनक झमारल छलहुँए । जोर-जोरसँ कानए लगलहुँ ।

"कानलासँ की होएत? सभ बात सच-सच बाजह ।"- विजयकेँ हम सभबात कहि देलिऐक । हमरा दुनूगोटेक गप्प चलिए रहल छल कि एकटा पुलिस टिनहा पेटी लेने हाजिर भेल। ओकरा देखितहि विजय पुछलकैक-" ई पेटी कतए भेटलह?"

पुलिस बाजल-"सरकार! ई पेटी गाज़िआबाद गुमती लग ठाढ़ डिब्बामे सीटक नीचाँमे रेलवे पुलिसके भेटलैक । ओएहसभ एकरा लए कए एहिठाम आएल अछि ।"

"ओकरा सभकेँ बजाबह ।"

"जे आज्ञा सरकार ।" से कहि ओ पुलिस दुनू रेलवे पुलिसकेँ ओहिठाम लेने आएल । ओकरासभकेँ देखितहि विजय कड़क आवाजमे कहलकैक-" ई ककर पेटी छैक?"

"कहि नहि सरकार! कोनो यात्रीक लगैत अछि ।"

"एकरा खोलह।"

विजयक हुकुम पाबि थानाक पुलिस ओहि पेटीकेँ खोललक । ओहिमे एकटा पाथरक सिलौट आ किछु कपड़ा-लत्ता रहैक । ऐकटा नीकसँ फ्रेम कएल किसुन आ ओकर घरनीक फोटो रहैक । फ्रेमक नीचाँमे आर्ट गैलरी मधुबनी छापल रहैक । फोटोकेँ देखितहिँ विजय पुछलकैक-" तूँ सभ मधुबनीक छह ?

जी सरकार!"-हम कहलिऐक ।

"हमहु ओहिठामक छी । "

से सुनि मोन हल्लुक भेल । विजय ओहि फोटोकेँ अपन कब्जा मे लैत कहलक-" एहि पेटीमे जे समानसभ अछि तकर सूची बनाबह । गप्प-सप्प चलिए रहल छल कि किसुन पहुँचल। ओकर हालति बहुत गड़बड़ लागि रहल छल । राति भरि ओ सुति नहि सकल । घरनीक कोनो समाचार नहि भेटलैक । ऊपरसँ

हमरो लए कए ओ बहुत परेसान छल । विजय ओकरा देखिते एकबेर फेरसँ फोटोक मिलान केलक। बात साफ भए गेल जे ओ पेटी मालतीक छल। तखन ओ कतए गेलि आ ककरा संगे गेलि? स्वेच्छासँ गेलीह कि कोनो दुर्घटना भए गेल ? विजयकेँ मोनमे ई प्रश्नसभ घुमि रहल छल । सभ बातकेँ ध्यानमे रखैत ओकरा विश्वास भए गेलैक जे हम निर्दोष छी आ एहि कांडमे हमर कोनो हाथ नहि अछि । ओ पुलिसकेँ बजओलक आ कहलकैक -" हाजतिसँ एहि आदमीकेँ निकालि दहक । एकर कोनो गलती नहि बुझाइत अछि ।" ओकर आदेश होइतहि हमरा हाजतिसँ बाहर कए देलक । एतेक जल्दी हमर मामिलाक तफसिआ भए जाएत से हम नहि सोचने रही ,मुदा धन कही विजयकेँ । ओकरा मोनमे कतहु-ने-कतहु दर्द बाँचल रहैक-अपन लोकक प्रति सिनेह जगलैक जे ओकर व्यवहारमे सद्यः देखा रहल छल ।

-3-

थानामे मालतीक चंपत भए जेबाक रपट लिखा गेल । आओर भइए की सकैत छल? हम हाजतिसँ छुटि गेलहुँ । किसुन संगे बिदा भेलहुँ । जाइत-जाइत विजय कहलक -" हमर मोबाइल नंबर लिखि लिअ। कोनो बात होइ तँ संपर्क करब ।"

"बात तँ भेले छैक । आब एहिसँ बेसी की हेतैक?"-हम कहलिऐक। विजय हमर मुँह देखैत रहि गेल ।

हम किसुनक संगे ओकर डेरा पहुँचलहुँ । डेरा की छल,मंदिरक पछुअतिमे कहुना कए एकटा कोठरी बना देने रहैक।

ऊपरमे एसबेस्टसक चार बनाओल गेल रहैक । एसगर व्यक्तिक लेल पर्याप्त रहैक।

हमसभ डेरामे पैर रखने छलहुँ कि विजयक फोन आएल- " नीक समाचार अछि ।"

"की भेलैक?"

"मालती भेटि गेलथि "

"कतए भेटलथि?"

“थाना आउ, सभ टा बात फोनेपर कए लेब?

हमसभ चोट्टे बस पकड़लहुँ । किसुनक मोन हल्लुक लगैत छल । हमरो चिंता कम भेल। ओ कतए भेटलखिन से सभ जानबाक जिज्ञासा बढ़ल जाइत छल । थाना पहुँचतहि देखैत छी जे मालती विजय लग बैसल छथि । हुनकर सभ किछु अस्त-व्यस्त छल । लगैत छल जेना ओ बाघक चाङुरसँ छुटि कए आएल होथि । हमरा दुनूगोटेकेँ देखिते ओ ठोह पारि कए कानए लगलीह। किसुनकेँ रहल नहि गेलैक । ओहो व्याकुल छल । हमरा किछु फुरेबे नहि करए जे की कएल जाए । मुदा एहिबातक संतोख छल जे मालती भेटि गेलीह ।

विजय हमरासभकेँ देखिते कहए लागल -" बहुत मोसकिलसँ हिनकर जान बाँचल । दूटा बदमास हिनका जीपपर बैसेने जा रहल छल कि ई हल्ला केलनि । रोडपर गस्त लगबैत पुलिस पाछू-पाछू भागल । हालति बिगड़ैत देखि ओ सभ हिनका बीच सड़कमे उतारि कए भागि गेल ।"

ने हमरा ने किसुनकेँ किछु पुछबाक साहस भेल । मालतीक अस्त-व्यस्त हालति अपने सभ किछु कहि रहल छल । किसुनकेँ बाक हरण भए गेल छलैक ।

थानामे पत्रकार,टीभी चैनेलबलासभक ढ़बाहि लागि गेल। नेतासभ तरह-तरहक गाड़ीमे अंगरक्षकसभक संगे थाना पहुँचए लगलाह । देखिते- देखिते थानामे मीस्स पड़ि रहल छल । थानामे लोकक करमान लगैत देखि कए विजयकैं मालतीकैं पुलिसक जीपमे अस्पताल मेडिकल जाँचक हतु पठा देलकैक । दुनू कात दू-दूटाक महिला पुलिस आ अगिला सीटपर एकटा मोंछबला पुलिस बंदुक तनने बैसल छल जेना कतेक भारी काज केने होअए? हम आ किसुन पछिला सीटपर बैसल रही । सरकारी अस्पतालमे मालतीक डाक्टरी जाँच भेल । जाँचमे सभ ठीके आएल। संभवतः बदमाससभक योजनामे पुलिस किछु भांगठ कए देलक । की कहल जाए? महानगरीक हेतु ई कोनो एहि तरहक एसगर घटना नहि छल ।

बढ़ैत दबाबक कारण अस्पतालोक हेतु समस्या ठाढ़ भए गेल रहैक । हालतिकैं काबू करबाक हेतु पुलिस मंदिरपर पहुँचि गेल। ओहिठाम किसुनकैं तरह-तरहक प्रलोभन देलक । मुदा ओ अड़ि गेल जे आओर किछु नहि चाही ,बस अपराधीकैं पकड़ल जाए आ सजा देल जाए । कनीकालमे विजय स्वयं पहुँचि गेलाह आ कहलाह जे हालति बहुत खराब भए रहल अछि । हमरा देखि कहए लगलाह-"कनी अहूँ बुझबिऔन । हमरा ऊपर विश्वास करू। हम बदमाससभकैं छोड़बैक नहि । कनीक समय दिअ ।"

"हमरासभसँ की चाहैत छी?"

"बस एतबे कहि दिऔक जे पुलिस ठीक काज कए रहल अछि ।"

“हमरा एहिमे कोनो दिक्कति नहि बुझाइत अछि, कहि दहक ।"-हम किसुन कैं कहलिऐक। ओ हमर बात मानि लेलक।

एतबेमे ओहिठाम मीडियाक हुजुम पहुँचि गेल । सभ ओकरासँ तरह-तरहसँ प्रश्नसभ पुछए लागल । विजय हमरा दुनूगोटेकेँ अपन कारमे बैसा ओहिठामसँ लेने चल गेल । थानामे किसुन सभ लग कहलक जे ओ पुलिसक प्रयाससँ संतुष्ट अछि । बस एतबे बाजि कए ओ कात भए गेल । विजय हमरासभ सँ प्रसन्न छल ।

हमसभ थानेमे रही कि एकटा पुलिसक जीप आएल । विजय सही साबित भेल। बदमाससभ पकड़ल गेल । बदमाससभसँ पूछताछमे पता लागल जे मालती चलती ट्रेनमे शौचालयमे गेल रहथि आ बाहर होइतकाल गलतीसँ लगीचक दोसर डिब्बा दिस चलि गेलीह । ताबतेमे ओ पछिलका डिब्बा ट्रेनसँ छुटि गेल रहैक । डिब्बामे जाइते ओ अकचका गेलि । ओकरा लगपास बैसल बदमाससभ गोलिआ लेलकनि आ की केलक की नहि जे ओ एहि हालमे पहुँचि गेलि ।

-4-

सुनने रहिऐक जे दिल्ली राजधानी छैक । एहिठाम कोनो भेद-भाव नहि होइत अछि । मुदा सभ फूसि बुझा रहल अछि । एहिठाम तँ गामोसँ बेसी खराब हाल लगैत अछि । जकरे देखू सएह- “ऐ बिहारी! कहि कए बजाओत जेना ओ अपने इंगलैंडमे रहनिहार हो । एहन बात नहि छैक जे ओकरासभमे सभ बीसे छैक तैओ ओ सभ भारी तँ पड़िते अछि ।

एक दिन किसुन हमरा मालतीक संगे फुसुर-फुसुर करैत देखि लेलक । ओकरा पहिनहिसँ तरह-तरहक सक रहबे करैक । ओहिमे इजाफा भेलैक । रातिमे जखन सुतबाक समय होइक तँ

ओ दुनूगोटे कोठरी मे चल जाइत आ हम मंदिरेमे सुति जाइ । मुदा कैक राति हमरा हल्लासँ निन्न टुटि जाइत छल । ओ दुनूगोटे दूपहर रातिमे चिकरा-भोकरी करए लागए। मुदा हम कइए की सकैत छलहुँ? सकक कोन इलाज छैक ?

“आखिर बात की छैक । एकरासभकेँ दूपहर रातिमे एना झगड़ा किएक भए रहल छैक?”

केबार लग कान सटा कए सुनए लगलिऐक । ओकरसभक गप्प-सप्प सुनि कए अबाक रहि गेलहुँ ।

" अहाँ दिन-राति गोविंद संगे सटल रहैत छी । एहिबातक कोन ठेकान जे ई बच्चा ककर अछि?"-किसुन बाजल ।

"अहाँ निर्लज्ज छी । एहन सोचैत अहाँकेँ भगवानोक डर नहि भेल । हमरा तँ अहाँ दुर्दशा करिते छी ,मुदा एकटा निर्दोष व्यक्तिकपर एहन लांछन लगेबासँ अहाँकेँ कनीको संकोच नहि भेल?"-मालती बजलीह ।

"चुप रहू । हम सभ बुझैत छी । हम अहाँ केँ कहिआ नीक लगलहुँ? तथापि हम बहैत रहलहुँ । मुदा आब तँ बात हदसँ आगू भए गेल अछि ?"

"अहाँक माथा गड़बड़ा गेल अछि । आओर किछु नहि भेल अछि?"

दुनूगोटेमे बात बढ़िते गेल । किछुकालक बाद मालती जोरसँ केबारमे धक्का मारलक आ बड़बड़ाइत बाहर भए गेलि । हम कनीके फटकी रही । पुछलिऐक-"की भेलैक?"

"सभटा तोरे चलते भए रहल अछि आ पुछि रहल छह जे की भेल? -किसुन बाजल।

" आब किछु भए जाएत हम एकरा संगे नहि रहब ।"-से बाजि मालती डेग आगू केलक।

अहाँ दुनूगोटेमे जँ हमरा लेल झंझटि भए रहल अछि तँ हम भोरे एहिठामसँ अपन डेरा फराक कए लेब ,मुदा अहाँसभ एना नहि करू।"

" जे अनर्थ करबाक छलह से केलह । आब किएक नहि जेबह?"

"हम किछु नहि केलहुँ? तोहर अपने मोन भसिआ रहल छह ।"-हम कहलिऐक।

" अपनो जाह आ हिनको लेने जाह । खाथि भीम आ हगथि सकुनी । "

हम मालतीकेँ बहुत आग्रह केलिऐक जे दूपहर रातिमे कतहुँ गेनाइ ठीक नहि हेतैक । भोर होबए देथि । मुदा ओ किसुनक संगे किन्नहु रहए हेतु तैयार नहि छलि। कहुना कए भोर भेल। रातुक बात चारूकात पसरि गेल । लोकक सहानुभूति मालतीक संग छल ,मुदा सभ सँ बेसी पराभव तँ हमर छल । ने ओतए रहि सकैत छलहुँ ने ओहि हालतिमे मालतीकेँ छोड़ि सकैत छलहुँ ।

बात मंदिरक व्यवस्थापक धरि गेल । ओ सभ आपसमे बैसारी कए किसुनकेँ पुजारी काजसँ आ मंदिरसँ बेदखल करबाक निर्णय केलथि । किसुनकेँ ओहि मंदिरपरसँ ओकर व्वस्थापकसभ हटा देलकैक । आब की होएत? ने हमरा कोनो ठेकान छल ने किसुनकेँ । ओकर काज आ घर दुनू चल जाइत रहलैक । हमरो रहबाक समस्या भए गेल । काज तँ हमरा विजय धरा देने रहए। नोएडामे कोनो कारखानामे लेबर सुपरवाइजरक काज रहैक ।

गुजर जोकर पाइ भेटि जाइत छल । मकानक भाड़ा नहि लगैत छल। भोजनोक व्यवस्था किसुनक संगे छल,तैं कम खर्चामे गुजर भए जाइत छल । किछु टाका सभ मास मनीआर्डर सेहो माएकैं कए दैत छलिऐक । गाममे माए मनीआर्डरक प्रतीक्षा करैत रहैत छलथि । कैकबेर ओकरा पहुँचएमे मासदिनसँ बेसीए लागि जाइक। अखबारमे खबरि आएल रहए जे मनीआर्डरक पाइके रस्तेमे कैकबेर गोलमाल कए लेल जाइत अछि । बाहरे दिमाग! बिना कोनो खर्चाकैं ओ सभ ओहि पैसासँ मास भरि सूदि लगा कए नीक उपार्जन कए लैत छल । लोककैं मनीआर्डर तँ भेटिए जाइत छलैक, कनी देरिएसँ सही। मनीआर्डर भेटिते माएक फोन अबैत छल जाहिसँ हमर सभ दुख हरा जाइत छल । माए आशीर्वादक बरखा कए दैत छलि।

मंदिर छुटि गेलासँ किसुनके हालति पातर तँ भइए गेलैक, हमरो व्यवस्था गड़बड़ा गेल । किसुन संगे ओकर घरनी छलैक। ओकरा मालतीपर सदरिकाल सक होइत रहैत छलैक । ऊपरसँ जहिआसँ ट्रेनमे ओ कांड भेलैक,किसुनके मोनमे मालतीक प्रति दुबिधा तँ भइए गेल रहैक । यद्यपि ओकर एतबे दोष रहैक जे ओ बिना सोच-विचारकैं गाममे सासुसँ झगड़ा कए भागि कए बिना टिकटकैं ट्रेनमे चढ़ि कए अपन घरबला लग जाइत रहए ,मुदा रस्तामे एतेक तरहक बात भए जेतैक से ओ की जाने गेलैक ? मुदा से सभ भेलैक। थाना-पुलिस धरि बात चलि गेलैक। सालो मोकदमा चलैत रहलैक ,मुदा ककरो किछु नहि भेलैक । सभ बदमास निफिकिर घुमि रहल छल। ककर ठठ्ठा छैक जे ओकरासभकैं टोकारा देत? जे से करत, से भोगत।

कहबी छैक जे गेलहुँ नेपाल आ कपार गेल संगे । हम दिल्ली आएल रही जीविका हेतु आ एहिठाम तरह-तरहक धसना धसैत देखि मोन उद्वेलित होइत रहैत छल । मुदा विकल्प तँ किछु छल नहि ? अस्तु,भोरे हम मालती आ किसुनकेँ ओही हालमे छोड़ि मंदिरपरसँ बिदा भए गेलहुँ । जाइत काल मोन भेल जे किसुनकेँ बुझबिऐक,किछु कहिऐक ,मुदा फेर की भेल,की नहि चोट्टे बिदा भए गेलहुँ । हम सोचलहुँ जे जाबे हम मालती लग रहब ओकर मोसकिल बढ़िते रहत । भए सकैत अछि जे हमरा फटकी भेलासँ ओ सभ आपसमे सलटि लिअए । हाथमे पेटी,पीठपर झोड़ा लटकेने बिदा भए गेलहुँ ।

-5-

हमरा चलि गेलाक बाद मालती आ किसुनमे फेर बाताबाती भेलैक । केओ तेसर ओतए नहि छल । तँ के ककरा सम्हारैत? किसुनक मंदिरक काज आ डेरा दुनू छुटि गेल रहैक । मालतीकेँ नहि बूझल रहैक जे दिल्ली आबि कए ओ एहन घनचक्करमे पड़ि जाएत । मालती पेटी उठओलक आ बिदा भेलि । किसुनके जेना करेंट लागि गेलैक । ओकरा बूझल रहैक जे मालती जे ठानि लैत अछि से कइए कए रहैत अछि ।

किसुन कहलकैक-" हमरासँ लगैत अछि बड़ गलती भेल । अहाँ जे दंड देब से मंजूर अछि ,मुदा एसगर एना नहि जाउ । ई दिल्ली छैक । चारूकात राक्षससभ घुमि रहल छैक ।"

“हमरा लेल तँ जेहने घर तेहने बाहर । जहिआसँ हम एतए अएलहुँ अहाँ किछु ने किछु उपराग लए ठाढ़ रहैत छी । अहाँकेँ कनिको ई बात सोचएमे नहि अबैत अछि जे जे किछु भेल वा नहि

भेल ताहिमे हमर की दोख छल? अहाँ गोविंदपर सक करैत रहलहुँ। परिणाम की भेल? ओहो चलि गेल । अहाँक काजो छुटि गेल?डेरासे छुटि गेल ? आब जहन सभकिछु चल गेल तँ अहाँकेँ होश भए रहल अछि ।"

किसुन मालतीक पैरपर खसि पड़ल । बहुत नेहोड़ा केलक । मालती स्वयं दुविधामे रहए। संतान होनहारी रहैक । एहन हालतिमे दिल्लीसन महानगरमे ओ एसगरि कतए जाइत? ओ ठोह पाड़ि कए कानए लागलि। मालतीकेँ एना कनैत देखि किसुनक कोढ़ फाटि गेलैक । किछु नहि फुराइक । समस्या मात्र मालतीकेँ लए कए नहि छल । ओकर काज छुटि गेल छलैक। मंदिरक व्यवस्थापक ओकरा दोबारा रखबाक हेतु तैयार नहि छलैक । आब की करए? बहुत कहला-सुनलाक बाद ओसभ एक सप्ताहक समय देलकैक । मोनमे कनीक उसास भेलैक।

घरमे काल्हिए साँझसँ भानस नहि भेल रहैक। दुनू व्यक्ति भूखसँ लहालोट छल । जेबीमे हाथ देलक। दसटा टाका भेटलैक। ओ मालतीकेँ कहि चौकपरहक दोकानपरसँ किछु जलखैक ओरिआन करए गेल ।

किसुन चौकपर सिंघारा कीनि रहल छल । दोकानदार गरम-गरम सिंघारा छानि रहल छल । ताबे ओ चाह पीबि रहल छल । ताबतेमे दूगोटे ओही बेंचपर बैसल । ओ दुनू आदमी बेस नमगर-पोरगर छल । कारी घनगर मोछ, हाथमे डंटा आ माथमे हरियर टोपी पहिरने छल। चाहक संगे गप्प-सप्प कए रहल छल।

" एतेक जल्दीमे आदमीसभक जोगार कोना हेतैक?"-पहिल आदमी कहलकैक ।

"कतेक आदमी चाही? -दोसर पुछलकैक ।

"कमसँ कम पचासगोटे चाही।"

“कतेक पाइ देतैक?"

" जे तूँ कहबहक सएह हेतैक ।"

“ठीक छैक। काल्हि पचासगोटे हाजिर भए जेतैक । "

ओकर सभहक गप्प सुनि किसुन कहलकैक-" हमरो राखि लिअ । हमरा काजक बहुत जरूरी अछि।"

" कोनो हर्ज नहि । काल्हि एतहि आबि जाह । संगे चलब।” किसुनक नाम आ मोबाइल नंबर लिखलक, आओर किछु-किछु पुछलकैक । मोबाइलसँ फोटो खीच लेलकैक आ तत्काल काज चलबए हेतु बिन मंगने दूसए टाका सेहो देलकैक । किसुन तुरंत ओहि टाकाकेँ जेबीमे रखलक आ सिंघारा लए डेरा दिस बिदा भेल । ओ सभ कारमे बैसल आ फुर्र भए गेल।

दू साँझसँ घरमे भानस नहि भेल रहैक । ऊपरसँ दिन-राति कलह । एहनमे मालती जीविए रहल छलि सएह आश्चर्य । मुदा बहुत किछु चमत्कार होइत रहैत छैक । से भेलैक । मालती सिंघारा खेलथि । घैलमे सँ पानि ढ़ारि पीबि बैसले छली ह की प्रसव पीड़ा प्रारंभ भए गेलैक। किसुन सिंघारा मुँहमे देनहि छल । कहुना कए ओकरा घोंटलक आ मालती दिस दौड़ल । जाबे ओ किछु बुझितए,किछु करितए,ताबे एकटा टेल्हक कानबाक आबाज सौंसे पसरि गेल । हे भगवान! आब कोना की होएत? एकर रक्षा केना होएत? किसुनक मोन व्याकुल भए गेलैक । एकदिस पिता बनबाक आत्मिख सुख तँ दोसर दिस ओहिठामक विषम परिस्थिति ।

कहबी छैक जे जकरा भगवान बचओनिहार छथि तकरा केओ की करत । एहन परिस्थितिमे ओहिठाम कतहुँसँ एकटा

बुढ़िआ मंदिरमे पूजा करए आएलि । ओ बच्चाक कानब सुनि पूजा छोड़ि चोट्टे ओतए पहुँचि गेलि । ओ भरिदिन ओतहि रहि गेलैक आ दिन भरि ओकरासभक सेवा करैत रहलैक । साँझमे जेबासँ पहिने किछु जड़ी-बुटी सेहो देलकैक । ओ के छलि,कतएसँ आएलि किछु नहि कहल जा सकैत अछि,मुदा ओकरसभक तँ जाने बचा गेलैक । फेर ओ कहिओ नहि देखेलैक। पता नहि ओ जड़ीमे कोन शक्ति छलैक जे रातिए भरिमे मालतीमे अद्भुत शक्तिक संचार भेलैक । भोरे उठितहि अपन बच्चाकेँ दुलार करैत ओकर प्रसन्नताक अंते नहि छल । ओ स्वयं बच्चाक सभ टा नेरकम केलक । दूध पिओलक । आ बेर-बेर ओकर मुँह देखैत रहलि । किसुनसे पिता बनबाक आनंदमे होइक जे की करी की नहि । मुदा भविष्यक चिंता रहि-रहि कए ओकरा मोनमे घुमरैत रहैत छल ।

मालती ओहि जनमौटी बच्चाकेँ किसुनक हाथमे दैत कहि नहि कतेक खुस रहए । मुदा किसुन चुप रहैक ।

" अहाँ एतेक चिंतामे किएक छी?"

"भगवान एतेक सुंदर बच्चा देलथि, पता नहि एकर गुजर कोना हेतैक?"

" जे भगवान जन्म देलखिन अछि सएह सभटा ओरिआनो करथिन । अहाँ एतेक नहि सोचू ।"-से कहि मालती हँसए लागलि ।

दुनूगोटेमे गप्प-सप्प भइए रहल छलैक कि केओ बजबए अएलैक ।

"चाहक दोकानपर मालिक बजा रहल छथि ।"-ओ बाजल ।

"की बात छैक?"- किसुन पुछलक ।

कािल्ह काज लेल गप्प भेल छल ने । "

"ओ! ठीके कहलह । हम तँ साफे बिसरि गेल रही ।"

जनमौटी नेना आ ओकर माएकेँ छोड़ि किसुन ओहि आदमीक संगे बिदा भेल । जाइत-जाइत मालतीकेँ कहि गेलैक- "चिंता नहि करब । कािल्ह एकटा काज गछि लेने रहिऐक । किछु टको देने रहए । तेँ गेनाइ जरुरी अछि । साँझ धरि वापस आबि जाएब ।"

“ठीक छैक " से कहि मालती ओकरा जाइत बड़ी काल धरि देखैत रहलि । किसुन ओमहर गेल आ ओ जनमौटी नेना जोर-जोरसँ कानए लगलैक । कतबो मालती बौसबाक प्रयास केलक ओ चुप्पे नहि होइक । बहुत मोसकिलसँ कनैत-कनैत ओ सुति गेलैक ।

-6-

झलफल भए रहल छल । मालती दिन भरि असगरे पिहुआकेँ लेने समय कटलक । मंदिरमे लोकक आवागमन बहुत कमे छलैक । ओही परिसरमे एकटा कोनपर बनल ओकर कोठरीमे अन्हार पसरि रहल छलैक । बिजलीक लाइन कटल छलैक आ लाल्टेनमे तेल नहि रहैक । राति घनगर होइत गेल । मुदा किसुन लौटि नहि आएल । मालतीक धैर्य टुटि गेलैक । ओ हमरा फोन केलक ।

" हम मालती बजैत छी ।"

"कोना छी?"

"की कहू?"

"की भेल?"
"काल्हि नेनाक जन्म भेलैक । सोचैत रही जे छठिहारमे बजाएब। मुदा..."
"मुदा की...?"
" ओ भोरे कतहु काज करए गेलखिन से एखन धरि नहि लौटलथि। घर अन्हार छैक । कतहु केओ नहि छैक । नेनासे कानि रहल अछि । किछु नहि फुरा रहल अछि?"
"चिंता नहि करू । हम चोट्टे आबि रहल छी।"

हम अखने डेरा आएल रही । स्टोपपर चाह खौल रहल छल । ओकरा बंद कए ठामहि बिदा भेलहुँ । हमर डेरा बसस्टापसँ सटले छल । तुरंत बस भेटि गेल । ओहिठामसँ मंदिर पहुँचएमे आधाघंटा लागल । मंदिर लगक चौकपर चाह-पानक दोकानबला हमरा जनैत छल। ओकरासँ किसुनक हालचाल पुछलिऐक ।
" हुनका भोरे किछुगोटेक संगे ट्रकपर चढ़ैत देखने रहिआनि । तकरबाद नहि देखलिअनि ।"-ओ बाजल । हम धरफराएल आगू बढ़लहुँ । मंदिर लग पहुँचि भगवानकेँ गोहरेलहुँ । मालती कोठरीमे एसगरि नान्हिटा टेल्ह संगे पड़ल छलि। रातिक साढ़ेदस बाजि रहल छल । घर अन्हार छल । मोबाइल फोनसँ इजोत केलहुँ । हमरा देखिते ओकर जान-मे-जान आएल । हम ओहि नेनाकेँ देखैत रहि गेलहुँ । अनमन मालतीसन लगैत छल । मोबाइल फोनसँ इजोत कतेक काल धरि केने रहितहुँ? रहि-रहि कए ओ कोठरी अन्हार गुप्प भए जाइत छल । राति भरि हम कोठरीक बाहर पटिआपर बैसल रहि गेलहुँ । मालती हमरा ओना बैसल देखि कैकबेर टोकथि ,मुदा कोनो आओर उपाय नहि छल । भोरे

हमरा काजपर जेबाक रहए। मालतीक खेबाक हेतु किछु ओरिआन कए हम काजपर चलि गेलहुँ ।

साँझमे फेर मालतीक फोन आएल -

" हुनकर तँ किछु पता नहि चलि रहि अछि? ने अएला,ने कोनो खबरि केलाह । एसगरि हमरा बहुत डर लागि रहल अछि ।"

"अच्छा हम अबैत छी ।"-से कहि हम फोन राखि देलिऐक आ बस पकड़ि मंदिर दिस बिदा भेलहुँ । एहिबेर चाहबलाकेँ हम की पुछबैक, ओएह पुछलक-

" की बात छैक?"

" की कहिअह? किसुन काल्हि गेलासे अखन धरि नहि घुरलाह ने कोनो खबरि केलाह अछि।"

"हमरा ओ आदमीसभ नीक नहि बुझाए । हम हुनका किछु कहए चाहने रहिअनि, मुदा से मौका नहि भेटल ।"

"आब की करी? ओकर परिवार असगरे छैक । नान्हिटा टेल्ह सेहो भेलैक अछि । घर सुन्न छैक।"

बड़ चिंताक गप्प अछि ,मुदा कएल की जाए ?"

"पुलिसमे कहिऐक की?"

"एक-दू दिन ठहरि जाउ । की पता कोनो काजमे बाझि गेल होथि?"

"मुदा फोन तँ कए सकैत छलए?"

“बात तँ सही कहि रहल छी ।"

चाहबलासँ किछु बिस्कुट,मोमबत्ती ,चाहक पत्ती कीनलहुँ आ मंदिर दिस पहुँचलहुँ तँ देखैत छी जे मालती कोठरीक आगूमे ठाढ़ि छथि । मोन-मोन भगवानकेँ गोहरबैत मालती लग पहुँचलहुँ। हमरा देखितहि कहए लगलीह -

" हम आब एहिठाम नहि रहि सकैत छी। किसुनक किछु समाचार नहि भेटि रहल अछि। दिन भरि एसगरे नेनाकेँ धरु कि हुनकर चिंता करू किछु नहि बुझा रहल अछि?"
" अगुताउ नहि । हम आइ विजयसँ भेंट करबाक प्रयास करब । किछु तँ बात हेतैक नहि तँ ओ एना किएक चंपत भए जाइत?"
" जे होइक ,मुदा हमरा आब एहिठाम एसगर एहि नेना संगे रहब मोसकिल बुझा रहल अछि ।"
हम गुम्म पड़ि गेलहुँ ।
साँझमे कारखानासँ निकलि कए हम सोझे विजय लग गेलहुँ। हमरा देखितहि ओ कहए लागल-
"हम अहींकेँ फोन लगबैत रही। किसुन तँ पकड़ा गेल?"
" की भेलैक?"
काल्हि रातिमे कनाटप्लेसमे गहनाक दोकानमे डकैती भेलैक । संयोग एहन भेलैक जे पुलिस डकैतसभकेँ रेलवेटीसनपर ट्रेनमे चढ़ैत काल पकड़ि लेलकैक ।"
“मुदा किसुन कोना फँसि गेल । ओ तँ एना नहि लगैत छल?"
“की पता? ककर बुद्धि करवन केहन भए जाएत तकर कोन ठेकान?"
अखन ओ अछि कतए? -हम पुछलिऐक ।
विजय हाजति दिस इसारा केलक । पुलिस हाजतिमे पाँच गोटे बंद छल । सभ सँ पाछू कोनमे किसुन पड़ल छल । लगैत छल जेना सभगोटेकेँ बढ़िआँसँ मरम्मति भेलैक । सभकेँ पुलिसक मारिसँ दोदरा फूटल छल । हमरा देखितहि किसुन हिचुकि-हिचुकि कए कानए लागल । किसुन अपन पीठ देखाबए लागल। विजय कहलथि –“ दुखक बात जे ई सभ अपने ओहिठामक

छथि। मानलहुँ जे परेसानीमे रहल हेताह ,मुदा तकर माने तँ ई नहि जे डकैतीसन कुकर्म करी ।"

"आब की हेतैक?"-हम कहलिऐक । विजय तमसाएल छल । चुप्पे रहि गेल । असलमे पुलिसकेँ ओकरासभ केँ पछोड़ करबामे बेस मेहनति भेल रहैक । ऊपर सँ अधिकारीसभ फोन-पर-फोन करैत छल । आखिर ओ सभ पकड़ल गेल । हम बुझि गेलहुँ जे विजयसँ अखन गप्प करबाक उचित समय नहि अछि । लाख ओ अपना ओहिठामक लोक अछि ,मुदा अछि तँ पुलिसे। असलमे हमरा मोनमे बेर-बेर ई होअए जे किसुन एहन लोक नहि अछि आ जरूर कोनो षड़यंत्रसँ ओकरा फँसा देल गेल अछि ।

डकैतीक गंभीर आरोपमे किसुनकेँ फँसि गेलाक बाद कतेको दिन हम थाना,कोट कचहरीक चक्कर लगबैत रहलहुँ । मुदा ओकरापर ततेक गंभीर धारासभ लागल छल जे जज जमानति देबाक हेतु तैयार नहि भेलैक। हमरा पास जे किछु टाका छल से खर्च भए गेल । एहिमास गामो मनीआर्डर नहि कए सकलिऐक । माएक तगादा आबि चुकल छल । ओमहर मालतीक हालति -बेहालति छलैक । नान्हिटा टेल्ह संगे महानगरमे बिना कोनो सहाराकेँ ओ कतेक दिन रहि सकैत छलि ,मुदा जाइत कतए । सासुरमे झगड़ा कए आबि गेल छलि। घरबला जहल पहुँचि गेल रहैक । काज कोनो रहैक नहि । तखन ...

थानासँ हम अपन काज पर चलि गेलहुँ । साँझमे जखन मंदिरपर पहुँचलहुँ तँ मोन आशंकासँ भरि गेल। आगू बढ़लहुँ । कोठरी भम्म पड़ैत छल । केओ कतहु नहि । कतए गेल ई सभ। किछु कहबो नहि केलक । वापस गेटपर चाहबला लग अएलहुँ । ओ हमरा देखिते कहए लागल-" किछु पता लागल?

"की?"

"किसुन तँ डकैतीमे पकड़ल गेल आ जहलमे बंद अछि।"

"आ ओकर परिवार?"

" ओकरासभकेँ पुलिस दूपहरिआमे ट्रकपर चढ़ा कए लए गेलैक?"

"कतए?"

"किछु पता नहि? मुदा थानेदार ओकरासभकेँ देखि कए बेर-बेर मोंछ फेरि रहल छलैक।"

हम चोट्टे थाना पहुँचलहुँ । हमरा देखितहि विजय हँसि पड़लाह । हम कहलिअनि-

" किसुनक घरबाली मालतीकेँ पुलिस घरसँ उठा अनलकै ।"

" से अहाँ कोना बुझैत छी? खामखा अपन जान संकटमे किएक दए रहल छी ? ई महानगरी छैक । अपन काजसँ मतलब राखू।"

" से की?"

"बेसी बुधिआरी महग पड़ि सकैत अछि?"

"हम की केलहुँ?"

"तेँ ने कहि रहल छी जे अपन काजसँ मतलब राखू । सीआइडी रिपोर्टमे अहूँक नाम आबि रहल अछि ।"

हमरा तँ लागल जेना माथपर नब्बेमोन पानि पड़ि गेल हो ।

विजयकेँ कहलिऐक-"हम तँ मानवतावश ओकरासभक मदति कए रहल छी ।"

"मुदा जखन फँसब तँ केओ काज नहि देत ।"

हम विजयक बात सुनैत रहि गेलहुँ । हमरा चुप देखि ओ कहलक-"अपन लोक छी,नीक बुझाइत छी,तेँ कहि देलहुँ ,नहि

तँ हमरा कोन मतलब । हम तँ सरकारी आदमी छी,अपन काज करब की लोकक निबेरा करैत रहब ।"
विजयक बात सुनि माथपर हाथ दए थानासँ बिदा भए गेलहुँ ।

-7-

पाँचो आदमी जकरा पुलिस पकड़ने छल से अपने ओहिठामक छल । भोर भेने जखन ई समाचार छपल आ ओहिमे ई बात प्रमुखतासँ आएल जे ई कोना भेलैक जे सभटा अपराधी ऐकहिठामक छथि तँ लोकसभक माथा ठनकलैक । लोकसभ आपसमे चर्चा करए हेतु बैसार केलक । तरह-तरहक भाषणबाजी सेहो भेलैक ,काजक गप्प सेहो भेलैक । ई तय भेलैक जे चुप नहि बैसल जाएत । एहि मामिलाकेँ उच्चस्तर धरि लए जाएल जाएत जाहिसँ सहीबात सभक सामने आबि सकए । मामिला ततेक गनगनेलैक जे पुलिस अधिकारीसभकेँ उत्तर दैत-दैत आफद भए गेलैक । उच्चस्तरीय जाँच-पड़ताल भेल आ ई बात सिद्ध भए गेल जे पाँचोआदमी अनेरे फँसा देल गेल छल जाहिसँ असली अपराधी बाँचि जाए । सरकार ओकरासभक खिलाफ केस वापस लेबाक आदेश देलक । ओ सभ हाजतिसँ छुटि-छुटि अपन-अपन घर आएल । सभक हालति खराब छल । पुलिसक मारिसँ गत्र-गत्र दुखा रहल छलैक । हालति ठीक नहि रहबाक कारण पाँचो आदमीकेँ पुलिसक हाजतिसँ सोझे अस्पताल लए गेल । ओहिमे सँ एकटा अस्पताल जाइत-जाइत दम तोड़ि देलक ।

आओर दूटाक हालति बहुत खराब छलैक । दुनूकेँ आइसीयूमे भर्ती कराओल गेल । शेषदूटाकेँ जाहिमे किशुनो सेहो

छल , आपत्तिकालीन विभागमे राखल गेल । आइसीयूमे भर्ती दुनूगोटे भोर होइत -होइत दम तोड़ि देलक । बाँचल दुनूगोटेके बचेबाक हेतु अस्पताल एड़ी-चोटीक पसीना एक कए रहल छल,मुदा ओहोसभ बेसुध छल । ई समाचार करेंट जकाँ सौंसे दिल्लीमे पसरि गेल । सरकारी अस्पतालक बाहर जबरदस्त सुरक्षा व्यवस्था कएल गेल । तथापि लोकक हुजुम रोकल नहि जा सकल। सभ उन्मत्त भेल अस्पतालमे घुसि गेल । लाठिचार्ज भेलैक । कतेको लोक घायल भेल । मुदा हालति काबूमे नहि आबि रहल छलैक । तीनू बेकसूर लोकक लहासकेँ अपना कब्जामे कए हजारो लोकक हुजुम चलि रहल छल,तरह-तरहक नारा लगा रहल छल ।

ताबतेमे केओ खबरि देलक जे एकटा आओर आदमी नहि रहल । ओकर नाम-ठेकाना पुलिसकेँ पता नहि चलि रहल छलैक । हमरा ई समाचार सुनि ठकबिदोर लागि गेल । कहीं ओ किशुने ने होअए?मुदा ई खबरि सही नहि छल । पुलिस तुरंत एहि समाचारक खंडन केलक ,संगहि इहो कहलक जे अस्पतालमे भर्ती दुनू गोटेक हालतिमे सुधार भेलनि अछि आ भए सकैत अछि जे साँझ धरि हुनका सभकेँ छोड़ि देलि जानि । सरकारक तरफसँ मृत व्यक्तिक परिवारकेँ पाँच-पाँच लाख मुआबजाक एलान सेहो कएल गेल आ इहो आश्वासन देल गेल जे एहि घटनाक जाँच हेतु एकटा न्यायाधीशक अध्यक्षतामे आयोगक गठन कएल गेल अछि जे तीन मासमे अपन प्रतिवेदन देत आ दोषी व्यक्ति चाहे ओ जे हो,बकसल नहि जाएत । माइकपर वारंबार ई घोषणा होइत रहल। ओहि भीड़मेसँ दू-तीन गोटे सकरकारक समर्थनमे बजैत सभकेँ बुझबए लगलाह जे आब बेसी गरमेबाक गप्प नहि थिक

कारण सरकार जे कए सकैत अछि से तँ भइए रहल अछि आ फेर जखन किछु गलती भेलैक अछि तँ ओकर निमेरा करएमे सेहो किछु समय तँ लगबे करतैक । किछु गोटे हुनकर सभक बातक समर्थन केलथि । ऊपरसँ पुलिस प्रशासन लागले छल। कहुना कए मामिला थम्हल ।

तीनू मृत व्यक्तिक लहासकेँ पुलिसक संरक्षणमे यमुनाकातमे डाहि देल गेल । लोकसभ अपन-अपन घर वापस भए गेल । हमहुँ अपन डेरापर अएलहुँ । पता लागल जे पुलिस कए बेर हमरा तकैत ओतए आएल छल । से सुनि मोन अधीर भए गेल । ई कोन नव लफरा भेल? हम की केलिऐक जे पुलिस पछोड़ कए रहल अछि ?

डेरा पहुँचले रही कि विजयक फोन आएल -" किसुनक हालति सुधरि रहल छैक । काल्हि दसबजे अहाँ थाना आबि जाएब। ओहिठामसँ संग अस्पताल चलब ।"

"हम नहि आबि सकब कारण हमरा काजपर जेबाक अछि । फेर हम कहिआ धरि एकरासभक चक्करमे पड़ल रहब। हमर हालति तँ अपने पातर चलि रहल अछि । कारखाना बंद होबएपर छैक । कैकगोटे काज छोड़ि गेल । हमरो कैकबेर मालिक कहि चुकल अछि । अहीं कहू जे हम की करू?"

"काल्हि कहुना कए आउ । फेर सभबातपर विचार करब। नहि होअए तँ छुट्टी लए लिअ।

"ठीक छै । हम आएब ।"- से कहिते रहिऐक कि फोन कटि गेलैक।

प्रात भेने हम थाना पहुँचलहुँ तँ विजय ओतहि छलाह । विजय संग पुलिसक जीपसँ हम दुनूगोटे अस्पताल बिदा भेलहुँ । रस्ते- रस्ते गप्पक क्रममे ओ कहए लगलाह-

“देखू, अहाँ अपन लोक छी, तेँ कहि रहल छी । ई महानगर छैक, एहिठाम अपन काजसँ काज मतलब राखी। केओ ककरो नहि छैक । झूठ-फूसमे फँसा देत आ केओ काज नहि आओत । फेर एकरसभक कोनो ठेकान नहि छैक । अही संगे रहत आ अहींक जड़ि काटएमे लागि जाएत । जाति-पाँतिक एतहु चला-चलती छैक । जकरेसँ गप्प करए लागब ने सएह पहिने जाति अखिआसए लागत । एहन हालतिमे अहाँ कथी लेल लफरासभमे पैर देने रहैत छी । अपन काज करू, घर जाउ । हमरासँ जे मदति भए सकत से हम करबे करब आ कइए रहल छी, मुदा जखन तेहन कोनो मामिलामे फँसि जाएब तखन हमही की कए लेब? बात बुझलिऐक कि नहि?"

"अहाँ अनुभवी लोक छी । सोचिए कए किछु कहैत होएब, मुदा किसुन आ मालती आन नहि अछि । किसुन तँ हमर इसकूलक संगी अछि, मालती ओकर घरनी छैक । एनामे हम केना हटि सकैत छी, ओहो जखन कि ओ सभ घोर संकटमे पड़ल अछि । समस्याक समाधान भए जाइक, तँ हम स्वयं एहि लफरासभसँ कात भए जाएब ।"

"एहि समस्याक समाधान करब कुकुरक नाङरि सोझ करब थिक । किसुन तँ अहींक सिकाइत करैत रहए आ अहाँ चललहुँ अछि ओकरा शुभचिंतक बनए?"

"किसुनक गप्प छोड़ू । मालतीक की दोख छैक?"

"दोख छैक किएक नहि? एतेक सुन्दर होएबे सभसँ बड़का दोख छैक । सीता महरानीकेँ रावण किएक तंग केलकनि? रामक कोन दोख रहनि ? आ सीता महरानी तँ एकदम निर्दोष रहथि ,मुदा कतेक कष्ट काटलनि? बात बुझि रहल छिऐक कि नहि?"

विजय स्पष्ट कहलक जे मालतीक चिंता करबाक काज नहि अछि । ओ स्वयं मालतीक व्यवस्था कए रहल अछि । ओ इहो कहलक जे मालती आब ओकरे लग रहत । ओ फटकिएसँ एकटा घर दिस इसारा करैत कहलक जे मालती एतहि छथि । विजयक जीप ओहिघरक लगीचमे छल । हम देखलहुँ जे मालती घरक आगू रौदमे पटिआपर बच्चा संगे छथि । पता नहि ओ हमरा देखलक कि नहि ,मुदा हम तँ नीक जेना देखलिऐक आ बुझबो केलिऐक । हमर मोनकेँ विजय पढ़ि रहल छलाह । ओ हमरा छगुन्तामे देखि हँसए लगलाह ।

असलमे विजय असगरे छल । ओकरा मालती नीक लागि गेल रहैक । बहुत दिनसँ ओ गुनधुनमे छल । अवसर देखि ओ अपन काज कए गेल । हम ओकरा संगे मुँहा ठुठ्ठी करब ठीक नहि बुझि चुप रहि गेलहुँ। किछु नहि बाजि सकलहुँ। विजय संगे हम अस्पताल पहुँचलहुँ । विजय फटकिए रहि गेल ।

किसुनकेँ संगे जे दोसर आदमी छल से कहि नहि करखन आ ककरा संगे अस्पतालसँ चलि गेल । किसुनकेँ जेबा जोकर हालति नहि रहैक । डाक्टरक हिसाबे किसुनकेँ अखन किछुदिन अस्पतालमे रहए पड़त । हमरा देखितहि ओ भोकासी पाड़ि कए कानए लागल । हम ओकरा तरह-तरहसँ बुझेलिऐक । ओ रहि - रहि कए मालतीक हाल पुछैत रहल । हम की कहितिऐक? झूठ

बाजि नहि सकैत छलहुँ आ सच कहि नहि सकैत छलिऐक । कहुना कए ओकरा बुझासुझा कए हम अपन डेरा वापस आबि गेलहुँ ।

डेरामे पैर रखनहि छलहुँ कि गामसँ फोन आएल ।

" हम दिनेश बजैत छी ।"

" गोर लगैत छी काका? की समाचार ?"

"समाचार ठीक नहि अछि ।"

"की भेलैक?"

"तोहर माए बहुत दुखित छथि । हालति ठीक नहि छनि ।"

"की भेलैक?"

"जल्दीए आबह । अएलापर सभबात बुझेतह ।"

से कहि ओ फोन राखि देलथि । हमर मोन एकदम परेसान भए गेल । एहिमास गाम टाको नहि पठओने रहिऐक । किसुन आ मालतीक लफड़ामे पड़ि कैक दिन काजोपर नहि जा सकलहुँ । सभटा व्यवस्था गड़बड़ा गेल छल । ऊपरसँ ई नव संकट । तुरंत रेलक टिकटक ओरिआनमे लागि गेलहुँ । कहुनाक तत्कालमे टिकट भेटल। बारह बजे एकटा ट्रेन छलैक जाहिमे आरएसीमे टिकट भेल । जे भेल, जेबाक तँ छलहे, से बिदा भए गेलहुँ ।

एगारह बजे रातिमे एसगर टीसन दिस बिदा भेलहुँ । रस्ता भम्म पड़ि रहल छल । कतहु कोनो सबारी नहि छल । ताबे एकटा कार जाइत देखाएल। हाथ देलिऐक । ओ कार रोकि देलक। हमर हालति देखि ओ हमरा कारमे बैसा लेलथि। मोनमे डरो होअए जे

पता नहि केहन आदमी अछि । मुदा ओ नीक लोक छल। हमरा सोझे टीसनपर उतारि देलक आ अपने आगू बढ़ि गेल ।

-8-

दोसरदिन साँझमे गाम पहुँचलहुँ । मोनमे बहुत चिंता रहए जे पता नहि माएक की हाल होएत? बहुत दिनक बाद गाम आएल रही ,मुदा किछु बदलल नहि छल। सभकिछु ओहिनाक -ओहिना छल । हमरसभक घर गामक शुरुएमे अछि । टेम्पु सोझे हमर दनानपर ठाढ़ भेल । दनानपर केओ नहि छल । आगू बढ़लहुँ। घरक ओसारापर सेहो केओ नहि छल । घरमे गेलहुँ तँ माए चौकीपर पड़ल छलि । हमरा देखितहि उठबाक प्रयास केलीह,मुदा उठि नहि सकलीह। बहुत कमजोर लगैत छलीह । मुदा होशमे छलीह । हाल-चाल पुछैत-पुछैत कानए लगलीह ।
हम पुछलिऐक-"की होइत छौक?"
" की कहिअह? असगर रहैत-रहैत मोन औँट भए गेल । बोखार से लगैत अछि ।"
"दबाइ नहि खाइत छही?"
" दबाइ के आनि दैत? केओ नहि फटकै छैक । आब गाम ओ गाम नहि अछि । सभ अपन घरे-घरे बंद रहैत अछि । ककरोसँ कोनो मतलब नहि । पाबनि तिहारोमे सभ अपने धरि सीमित रहैत अछि ।"

हम चोट्टे बैदकेँ बजा अनलहुँ । गामक सभरोगीक इलाज ओएह करैत छलाह । माएक नारी देखिते कहलखिन –“हिनका

कोनो बिमारी नहि छनि । एसगर रहैत-रहैत ई हाल भए गेलनि। किछु दबाइसभ दैत छी । दू सँ तीन दिनमे ठीक भए जेतीह ।" बैद जी जाइत-जाइत कहि गेलाह-" हिनका आब असगर नहि छोड़बनि ।"
माएक आधा बिमारी तँ हमरा अएलेसँ ठीक भए गेलैक । बैदजीक दबाइ सेहो बहुत फएदा केलकैक । माएक हालति क्रमशः ठीक होइत गेल । हमरा संगे रहलासँ ओकरा बहुत उसास भेलैक। लगबे नहि करैक जे ओ एतेक दुखित छलि ।

हम कतेक दिन गाममे रहितहुँ । ओहिठाम किछु जोगार नहि रहैक । जथापात बिका गेल छल । जे कनीमनी बाँचल छल से दिआदसभ तेहन ओझरमे देने छलाह जे कहिओ तफसिआ नहि भए सकैत छल । तेँ दिल्ली तँ वापस जेबेक छल ,जहिआ जाइ । मुदा माएक की होएत? एहि चिंतासँ निन्न नहि होइत छल। गामक हालति आब ओहन नहि छल । फगुआक समय छल । कतहुँ फाग नहि,केओ ककरोसँ भेंटघाँट नहि करैत देखाइत । सभ अपन-अपन दरबाजा पर बैसल समय बितबैत छलाह ।

एकटा समय छल जे फगुआसँ पन्द्रह दिन पहिनहि गीतनाद शुरु भए जाइत छल । फगुआ दिनक तँ बाते छोड़ू । रंग-अबीरसँ सौंसे गामक लोक सराबोर रहैत छल । डाफपर नचैत -गबैत लोकसभ भेदभाव बिसरि घरे-घर घुमि जाइत छल । मुदा ई समय थिकैक। बदलैत रहब एकर स्वभाव छैक । बहुत किछु बदलल तहिना इहोसभ बदलि गेल । गामोसभ सहरक नकलमे लागि गेल । परिणाम ने ई गाम रहल ने सहर बनि सकल ।

माएकेँ गाममे एसगर छोड़ब उचित नहि छल । तखन तँ ओकरो संगे लेने चली सएहटा समाधान बुझाइत छल ,मुदा ताहि

हेतु ओकरा मनाएब मोसकिल काज छल । तथापि प्रयास करए लगलहुँ । माएकेँ कहलिऐक-" गामक हालति देखिए रहल छिही। एहिठाम गुजर होएब संभव नहि अछि । सहर जाए पड़त । एहन हालतिमे तोरा एसगर कोना छोड़ि दिऔक? "

" से किएक, गाममे एतेक लोक अछि, तकर गुजर कोना होइत छैक? तोरो भए जेतह । गामे रहह ।"

हमरा जोरसँ हँसी लागि गेल । माएक लगमे ओकर बेटा रहैक एहिसँ नीकबात आओर की भए सकैत छैक? मुदा जीवन मात्र भावनासँ नहि चलि सकैत छैक । गाममे आब छैहे की? ककरा लए कए रहत ? मुदा दिल्ली जेबाक हेतु माए तैयार नहि होथि । एहि समस्याक समाधान नहि भए रहल छल ।

हम अपन माए-बापक असगर संतान छलहुँ । जे करक छल से हमरे । ककरोपर टारि नहि सकैत छलहुँ। माए तँ माए होइत अछि । जखन बहुतबेर बहुत आग्रह केलिऐक तँ ओ मानि गेल । फेर बिचार केलहुँ जे गाममे जे किछु जमीन बाँचल अछि से यदि बिका जाइत तँ दिल्लीमे छोटोछीन घर लए लितहुँ जाहिसँ मासिक भाड़ा देबएसँ पिंड छुटि जाइत ।

ककरो-ककरोसँ एहि विषयमे गप्प केलिऐक । एकाधगोटे कनीमनी बातो केलाह । मुदा गाम तँ गामे होइत अछि। केना-ने-केना हमर काका केँ ई बात पता लगलनि । ओ दौड़ले हमरा दलानपर अएलाह आ चिकरि-चिकरि कहए लगलाह-"हमर बाप-पितामहक चीज दोसर कीनत। भए नहि सकैत अछि । हम आइए,एहीठाम मटिआतेल ढ़ारि कए मरि जाएब ।” औ बाबू! आब की होएत ? हमर माए बाहर अएलीह -

"अहाँकेँ ई बातसभ के कहलक अछि? एकर कोनो चर्चो नहि छैक। अपन कान देखब कि कौवाके खिहारब ।'

"से सभ हम नहि जानी । एक तँ आब अहाँक हिस्सा बाँचले कहाँ अछि? आ यदि हेबो करत से पहिने हमर होएत कि गौँआक? अहीं कहू?"

एकटा दोसरे झंझटि शुरु भए गेल । हम ओहि समय घरमे नहि रही । कनीकालक बाद अएलहुँ तँ माए सभटा बात कहलक। आब की कएल जाए? मोने-मोन ई प्रश्न घुमए लागल।

गामक बात बुझि गेलिऐक । एहिठामसँ किछु निकालब मोसकिल काज थिक । दोसरदिन भोरे बिना ककरो किछु कहने माएकेँ संग केलहुँ आ अहल भोरे दरभंगा बिदा भए गेलहुँ। दरभंगासँ बिहार संपर्क क्रांतिमे आरक्षण छल । दुनूगोटे समयसँ अपन जगहपर बैसि गेलहुँ । माएक मोन बहुत उदास छलैक । ओ दिन मोन पड़ि रहल छल जहिआ हमरा माए पहिलबेर दिल्ली बिदा केने रहए । आइ हम ओकरो लए कए दिल्ली जा रहल छी। तथापि ओ उदास अछि । अपन लोकवेद,गाम-घर छुटबाक कष्ट ओकरा बौक बना देने रहैक । किछु बाजि नहि रहल छलि । ताबे रेल सीटी मारलकैक । प्लेटफार्मपरसँ ट्रेन सड़कि रहल छल । माए चुपचाप अपन नोर पोछि रहल छलि ।

जहिना -जहिना ट्रेनक पहिआ घुमि रहल छल तहिना-तहिना माएक मोन दुखी होइत गेल। ककरा की कहितिऐक ? गप्प-सप्पमे ओकरा ओझरेबाक प्रयास करैत रहलहुँ । मुदा ओ गप्पो गामे घरक करैक? बातो सही छैक । भरि जिनगी गाममे रहलैक ,गप्प कथीक करतैक? ट्रेन सिमरिआसँ गुजरि रहल छल। माएकेँ से कहलिऐक । ओ मोनहि मोन गंगाकेँ प्रणाम केलक आ

किछु कैंचा जोरसँ गंगामे फेकि देलक । ट्रेन आगू ससरि गेल । ट्रेनक पहिआ गुड़कैत गेल । हमसभ आगू बढ़ैत रहलहुँ ।

पहिलबेर दिल्ली जाइतकाल ट्रेनमे बिना आरक्षणकेँ पैसि गेल रही । तकर दुखद अनुभव अखनो मोन पड़ैत रहैत छल । ट्रेनमे यात्रीसँ बेसी हेम- छेमक फल सेहो भोगने रही । मालतीक प्रति व्यर्थ सहानुभूतिक कारण कतेको परेसानीमे पड़ि गेल रही । तेँ एहिबेर अपना भरि बहुत सतर्क रही । टिकट आरक्षण करओने रही। ककरोसँ गप्प-सप्प नहि करी । मुदा ताहिसँ की होएत? रेल तँ रेल थिक । कनीके कालमे एकटा नेताजी अपन सिपहसलारक संग आरक्षित डिब्बामे पैसि गेलाह । निरंतर पान चबा रहल छलाह तेँ किछु बाजल नहि होनि । सभटा काज चेला-चपाटीसभ करथि। बेस मोट-सोट छलाह । हुनका लेल निचला शायिका चाही। जेना-तेना कए एकटा यात्रीकेँ मनाओल गेल आ नेताजी निचला शायिकापर बैसलाह । चेला-चपाटीसभ पानि अनलक,चाह अनलक ,तरह-तरहसँ हुनकर सेवा करए लागल । ककरो सीट नहि रहैक । तेँ दोसर यात्रीसभक जगह धकिअओने जा रहल छल । के बाजत आ के सुनत? सभ किछुक बाद नेताजी सुतबाक दबाइ खेलथि आ शायिकापर पसरि गेलाह ।

नेताजीक मुँहमे थूक भरि गेल छल । ओ पच दए पीक फेकलाह । डिब्बामे त्रहिमाम मचि गेल । सभटा थूक एकटा बूढ यात्रीक माथपर जा कए खसल । तकरबाद जे भेल से की कहू ? चारूकातसँ ओकर लोकबेद नेताजीकेँ गरिआबए लागल । ओकर चेला-चपाटीसभ फोंफ काटि रहल छल । जाबे-जाबे केओ किछु बुझितए सभ नेताजीकेँ धै मारलक। नेताजी बाप-बाप कए रहल छलाह । उपरका शायिकापर फोंफ काटि रहल हुनकर चेलासभक

निन्न टुटलैक । मुदा ताबे तँ नेताजीक सभगति भए गेल छल । चलैत ट्रेनमे एहन घटना नहि देखने छलहुँ । बहुत मोसकिलसँ मामिला सम्हरल । दोसर दिन दूपहरमे ट्रेन दिल्ली टीसन पर पहुँचल । दिल्ली टीसन पर नेताजीक चेलाचपाटीसभ ओहि बुढ़बा आ ओकर लोकवेदसभकेँ घेरि लेलक आ गारि-मारि करए लागल। हम माएकेँ लेने कहुना कए जान बचा कए ओतएसँ घसकि गेलहुँ ।

-9-

माएक संगे हम अपन डेरा पहुँचलहुँ । एकहि आङनमे एकपाँतिसँ दसटा कोठरी छल जाहिमे किरायेदारसभ रहैत छल । एकहिटा शौचालय-स्नानगृह छल जाहिमे बेराबेरी सभक काज चलैत छल । कोठलीसभक आगूमे कनीटा खाली जगह रहैक जतए भानस बनैत छल । आङनमे लोकक मिस पड़ैत रहैथ छल। रच्छ ई छल जे लगीचेमे एकटा पार्क छल । जकरा ककरो मोन उबिआइत तँ ओहि पार्कमे चल जाइत छल । माएकेँ आबि गेलासँ हमरा मोन हल्लुक लगैत छल ,मुदा ओकरा सदरिकाल गुम्मे देखिऐक । कखनो किछु नहि कहैत ,मुदा मोनमे प्रसन्नता नहि रहैत छलैक ।

एहिबेर दिल्ली अएलाक बाद कारखानाबला काज छुटि गेल। बहुतरास कर्मचारीसभकेँ हटा देने रहैक। हम अपना भरि बहुत प्रयास केलहुँ जे थोड़बो दिन काज करए दिअए ,मुदा मालिक नहि मानलक । तखन किछु तँ करबेक छल । हनुमानमंदिरक आगू पटरीपर चाह-पानक दोकान खोलि लेलहुँ । भोरसँ राति धरि दोकानपर रहए पड़ैत छल । क्रमशः दोकानमे

बिक्री बढ़ए लगलैक। मुदा स्थानीय गुंडा सभ हफ्ता लैत छल । जतेक कमाइ होइक तकेर आधासँ बेसी ओकरेसभमे चल जाइत छल ।

पुलिसिआ आतंकसँ बचबाक हेतु हम विजयकेँ कैकबेर फोन करिऐक ,मुदा ओ फोन काटि दिअए,कहिओ गप्पे नहि करए। बुझेबे नहि करए जे बात की छैक? पटरीपर दोकान करब एतेक मोसकिल काज थिक से हमरा नहि बूझल छल । दोसर कोनो व्योंत नहि छल,तेँ सभ किछु बरदास करैत रहलहुँ । घरमे माएक हालति चिंताजनक भेल जाइत छल । ओकरा रहि-रहि कए गाम मोन पड़ैक,गामक मंदिर,व्रह्मस्थान,तिथि-त्योहार सभबातक चर्चा करैत रहैत । कोना-कोना के-के झगड़ा केलक,कोना सोलह भेलैक, कोना के जहल चल गेल से सभ सुनबैत रहैत । असलमे दिन-राति ओकर माथमे गामे घुमैत रहैत छलैक,ओ करितए की?

क्रमशः ओकर हालति खरापे होइत गेलैक । एकदिन तँ बैसले-बैसल माथा घुमि गेलैक आ धराम दए खसलि । हम दोकानपर रही । अगल-बगलक लोक फोन केलक । दौड़ल डेरा पहुँचलहुँ । दहिना जाँघक हड्डी टुटि गेल रहैक । उठा-पुठा कए अस्पताल लए गेलहुँ । भरिदिन अस्पतालक चक्कर लगबैत रहलहुँ। डाक्टरसभ केओ किछु, केओ किछु परामर्श दैत रहल । शल्य चिकित्सा करेबाक हेतु ने ओ अपने तैयोर छल ने हमर मोन मानए ,मुदा डाक्टरक कहब जे शल्य चिकित्सा जरुरी छनि । हारि कए हम अपन सहमति दए देलिऐक । शल्य चिकित्सामे की भेलैक की नहि ,ओकर हालति गड़बड़ाइते गेल आ दूदिनक बाद ओ अस्पतालेमे दम तोड़ि देलक।

माएक एहि तरहें गुजरि गेलासँ हमरा तँ लकबा मारि गेल। बहुत अपसोच भेल जे बेकारे एकरा अपना संगे अनलिऐक । गाममे कष्टे सही ,जीबि तँ रहल छल । मुदा आब की? जीवन भरिक हेतु एकटा अपराधबोध हमरा मोनमे होइत रहत जे हमरे दुराग्रहक कारण ओकर ई हाल भेल । भावी प्रवाल होइत छैक । आब तँ सभसँ पहिने ओकर अंतिम संस्कारक ओरिआन करबाक छल । से सभ जोगार भए गेलैक । यमुनाकातमे माएक अंतिम संस्कार संपन्न भेल।

संस्कारक बाद श्राद्धक समस्या छल । दिल्लीमे कोनो व्यवस्था नहि छल । ओना गामोक हालति तँ सएह छल ,मुदा माए सभ दिन गामेमे रहलथि । तेँ सभक इएह विचार जे हुनकर श्राद्ध गामेमे हेबाक चाही । ट्रेनमे टिकटक ओरिआन करबामे विजय बहुत मदति केलाह । अस्तु, उतरी पहिरने गरीबरथसँ गाम बिदा भेलहुँ ।

गाम पहुँचलाक बाद सभसँ पहिने हमर काका भेंटलाह। एतेक अपनत्वक कहिओ उमीद नहि छल । हमरा अएबासँ पहिनहि ओसारापर हमर रहबाक व्यवस्था कए देने रहथि । चारिम दिन छल । महापात्र अएलाह आ सभटा कृयाकर्म नियमपूर्वक प्रारंभ भेल । साँझमे काका कहलाह –

" कोनो चिंता नहि करिअह । सभटा भए जेतैक । कलमबला खेत तोरेसभक छह । ओहीसँ काज चलि जेतैक । लिखापढ़ी बादोमे भए जेतैक । घरक बात छैक । कनीमनी घटतैक तँ बादोमे दए देबह ,भौजीक काज नीकसँ भए जानि । फेर देखल जेतैक ।"

हम हुनकर बात सुनति रहि गेलहुँ । की उत्तर दितिअनि? गामक लोकसभमे सबजाना भोजक प्रचार भए गेल । ओना आबलोककेँ भोजक प्रति पुरना जमाना जकाँ उत्साह नहि रहलैक। गाममे लोको नहि अछि । बेसी लोक बाहरे रहैत अछि। काका हमरा एकटा सादा कागजपर औंठा निसान लेलथि आ श्राद्धक चिंतासँ मुक्त कए देलाह। श्राद्ध नीकसँ संपन्न भए गेल । गाम भरि एकादशा,द्वादशा दुनू दिन सबजाना भोज भेल। थैहि,थैहि भए गेल । तेरहम दिन माछ-भात भेल । तकरबाद भगवानक पूजा भेल । ओहीदिन काकाजी अपना ओहिठाम बजओलाह-" दिल्ली कहिआ जेबहक?"

"अरवन तँ ओहि विषयमे किछु नहि सोचलिऐक अछि ।"

" कोनो बात नहि । पाँच-सात दिन बादे सही । असलमे तोहरबला घरारीमे मालजालक घर बनेबाक अछि । हमर ओलार बहुत फटकी छैक आ टुटिओ गेल छैक ।"

"की कहलिऐक?'

"एना अंठेलासँ काज चलतह?"

"आब ई घरारी हमर भेल । सभबात पहिने भए चुकल अछि ।"

" की गप्प करैत छी? हम तँ खेतक गप्प केने रही । "

“खेतक दामसँ बेसी खर्चा कतए जेतैक, तूँही कहह?"

हम बुझि गेलहुँ जे ओ बैमानीपर अड़ल छथि । हिनका संगे गलथोथरी करब व्यर्थ अछि।

गाममे आब किछु बाँचल नहि छल,करबाक हेतु किछु नहि छल । अस्तु, दिल्ली लौटि गेलहुँ । संयोगसँ तत्कालमे टिकटक जोगार भए गेल । रस्तामे कोनो दिक्कति नहि भेल । ट्रेन

बहुत खालीए रहैक । दोसरदिन भेने दिल्ली पहुँचलहुँ । अपन डेरापर गेलहुँ । ओहिठामसँ चोट्टे विजयसँ भेंट करए हुनकर डेरापर पहुँचलहुँ । ओ अपने तँ नहि रहथि ,मुदा मालती भेटि गेलि । हमरा देखितहि हँसए लागलि ।

"की बात छैक, माथपर केस कटल अछि?"

"माए मरि गेलैक ।"

"से केना की भेलैक?"

"एहीठाम आएल छलि । दुखित पड़ि गेल । एतबा कहैत कहैत हमरा कनाए लागल । आगू नहि बाजि सकलहुँ ।"

मालती जलखैक ओरिआनमे लागि गेलीह । ताबे हम ओतहि बैसले रही कि विजय सेहो आबि गेलाह।

"गामसँ कहिआ अएलहुँ?"

"काल्हिए अएलहुँ अछि ।"

"ओ काज किछु चलि रहल अछि कि नहि?

"कहाँ किछु कए रहल छी।

"ठीक छैक, अहाँ काल्हि भोरे थानामे भेंट करू ।"

विजयक गप्पसँ बहुत प्रसन्नता भेल । ताबे मालती जलखै लए कए आबि गेलीह । जलखै,चाह-पान सभ भेलैक । मुदा मालती अपना बारे मे किछु नहि बजलीह । हमहुँ किछु नहि पुछलिऐक । भेल जे कहीं विजय बिगड़ि गेलाह तँ होइतो काज बिगड़ि जाएत ।

ओहिठामसँ निकलि बसस्टैंडपर ठाढ़भेल बसक प्रतीक्षा करैत रही कि किसुन देखाएल। ओहो कतहु जा रहल छल । कनी-कनी झकाइत छल । हम ओकरा देखि आबाज देलिऐक-"किसुन!किसुन! मुदा ओ नहि सुनलक आ दौड़ कए बसमे चढ़ि

गेल । ओकरासँ भेंट होइत-होइत रहि गेल । कोनो बात नहि । एतबा संतोख भेल जे ओ जीबि रहल अछि आ ठीक-ठाक अछि। आब ओ मंदिरेपर रहैत अछि कि कतहु आनठाम चल गेल से पता नहि चलि सकल ।

कनीके कालमे बस अएलैक आ हमहुँ ओहिमे चढ़ि अपन डेरा दिस बिदा भेलहुँ। बसमे जबरदस्त धक्कम-धुक्का छलैक । कहुना कए आगूदिस ससरलहुँ । किछुकालमे एकटा सीट खाली भेलैक । हम ओतए बैसि गेलहुँ । सटले दोसर सीटपर एकटा गोरनार, बेस चुहिलगर छौंड़ी बैसलि छलि । ओकर पैघ-पैघ आँखि,भरल-भरल देह बेस आकर्षक छल । मोबाइलफोनपर मैथिलीएमे ककरोसँ गप्प कए रहल छलि । ई जानि बहुत प्रसन्नता भेल जे इहो मैथिले छथि । बस चलैत रहलैक । यात्रीसभ चढ़ैत-उतरैत रहल । हम ओकरादिस तकैत रहलहुँ । ओहो गाहे-बगाहे हमरा दिस घुरैत रहैत छलि। मुदा ततबे । हमरा किछु पुछबाक साहस नहि होअए आ ओ किछु बाजए नहि । मुदा ओ छलि बेस रमनगर । बस हमर डेरासँ एकस्टाप पहिने धरि पहुँचि गेल छल । भेल जे जँ आबो नहि बाजब तँ परिचयो नहि होएत । आखिर अपना दिसक लोक छथि ,संयोगसँ भेटि गेल छथि तँ परिचय करबामे कोन हर्ज? सएह सोचि हम टोकारा देलिऐक-" अहाँक घर कतए अछि?"

"मधुबनी "

"हमहुँ ओमहरे क छी?

" एहिठाम की करैत छी?"

"किछु नहि । गाम चलि गेल रही। माएक श्राद्ध कए आबि रहल छी । काज ताकि रहल छी । “

"ओ! केहन काज तकैत छी?"

"जएह भेटि जाए । एहिमे हमर कोनो पसिंद की भए सकैत अछि?"

"अहाँ काल्हि हमरा ओहिठाम आउ । हम अपन बाबूसँ गप्प करबनि ।" ओ अपन मोबाइल नंबर आ पता लिखा देलथि। हम बहुत खुस रही । एकरा एकटा चमत्कारे कहि सकैत छी जे दिल्लीसन जगहमे अपन लोक भेटि जाथि आ ओहो एहन मददतिगार होथि । बसस्टाप आबि गेल छल । उतरैत , उतरैत हम ओकर नाम पुछलिऐक । ओ बजलीह –"लता" । हम बससँ उतरि गेलहुँ । बससँ उतरैत काल पलटि कए देखलिऐक । ओहो हमरे दिस ताकि रहल छलि । हम बससँ उतरि अपन डेरा पहुँचलहुँ । डेरा पहुँचतहि माए मोन पड़ि गेल । तरह-तरहक बातसभ मोनमे घुमैत रहल । बहुत मोसकिलसँ दू बजे रातिमे जा कए निन्न भेल।

-10-

भोर होइते चौकपर गरम-गरम सिंघारा जिलेबी खेलहुँ, चाह पीलहुँ आ लताक ओहिठाम बिदा भेलहुँ । बसस्टाप पहुँचले छलहुँ कि बस आबि गेल ,मुदा ततेक भीड़ रहैक जे चढ़ि नहि सकलहुँ । दोसर बसक प्रतीक्षा करए लगलहुँ । बड़ीकाल धरि कोनो बस अएबे नहि केलैक । लोकसभ बजैक जे भीआइपीक आवागमन छैक तेँ रस्ता बंद कए देल गेल अछि। हम बस स्टैंडपर ठाढ़े रही कि लताक फोन आबि गेल ।

" कतए छी?"

"रस्ते मे छी । बसे नहि आबि रहल छैक । बड़ीकालसँ बसस्टैंडपर ठाढ़ छी ।"

"कोन बसस्टैन्ड छैक?"

" जनकपुरी "

ओ नीकसँ अपन घरक पता लिखा देलीह । हम पैरे-पैरे ओहिठाम बिदा भेलहुँ कि देखैत छी एकटा पुलिसक जीप हमरा पछोड़ कए रहल अछि । हम तँ चिंतामे पड़ि गेलहुँ । ताबे ओ जीप रुकि गेल । ओहिमे विजय स्वयं छलाह ।

"की बात छैक? बहुत परेसान बुझा रहल छी?"

"बसक प्रतीक्षामे छी ।"

"केमहर जेबाक अछि?"

"हम ओकरा पता कहलिऐक । विजय हमर मुँह ताकए लगलाह । फेर कहैत छथि-

"अहूँ पहुँचल फकीर लगैत छी ।"

"की किछु गलती भए गेल की?"

"ई पता अहाँकेँ कोना भेटल?"

"किएक?"

" ई तँ हमर हाकिमक पता छनि ।"

हम ओकरा बेसी बात कहब उचित नहि बुझलिऐक । चुप्पे रहि गेलहुँ । मुदा ओहो तँ पुलिसक आदमी छल। तरह-तरहसँ हमरा गोलिआबए लागल । फेर कहलक-" हम अहाँकेँ ओहिठाम धरि छोड़ि देब । जीपपर आबि जाउ ।"

हम ओकर बात मानि जीपपर बैसि गेलहुँ । कनीके कालमे हम ओतए पहुँचि गेलहुँ । लता घरक गेटपर ठाढ़ि हमर प्रतीक्षा कए रहल छलीह । विजय जीप रोकि हमरा बाहरे उतारि

देलथि। विजयक तँ चकरी गुम रहैक। जाइत-जाइत कहैत गेलाह–

" घुरतीमे भेंट करैत जाएब ।” हम किछु उत्तर नहि देलिऐक ।”

हमरा देखितहि लता घरक गेटसँ बाहर आबि गेलीह । हुनक प्रसन्नता देखैत बनैत छल। ओ हमरा दिस कहि नहि कतेक काल धरि तकैत रहि गेलीह । हमरे लाज होबए लागल, जे कहीं केओ देखि ने लिअए। मुदा लताकेँ कनीको कोनो चिंता नहि बुझाएल।

ओ जोरसँ चिचिआएलि-"आउ,आउ हम तँ बड़ीकालसँ अहाँक बाट ताकि रहल छी ।"

हम संकोचपूर्वक आगू बढ़लहुँ । बाहरेसँ कोनो पैघ आदमीक घर लागि रहल छल । घरक चारूकात फूल लागल छल। हरिअर-हरिअर घाससँ सौंसे वातावारण मनमोहक लगैत छल । घर दिस आगू बढ़लहुँ । ताबे नीरज सेहो बाहर आबि गेल छलाह । हुनका देखितहि लता बाजलि-" इएह छथि गोविंद,जिनका बारेमे काल्हि हम कहने रही ।"

"ओ! बैसू "-नीरज बजलाह ।

हम हुनका प्रणाम केलिअनि आ अपन परिचय दैत कहलिअनि -" हम कैक सालसँ दिल्लीमे किछु-किछु करैत रहलहुँ ,मुदा कोनो निजगुत काज नहि भेटल। किछुदिन पहिने हमर माएकेँ एतहि देहांत भए गेलनि । तेँ गाम जाए पड़ल । जेहो कनीमनी काज करैत रही से छुटि गेल।"

"कोनो बात नहि । अहाँ काल्हि हमरासँ कार्यालयमे भेंट करू"-एतेक कहि ओ ओहिठामसँ चलि गेलाह। हमहुँ वापस

जेबाक हेतु उद्यत भेलहुँ कि लता रोकि लेलथि । कहए लगलीह- "चाह तँ पीबि लिअ" । ओ अंदर गेलीह । हम बैसले-बैसले सोचैत रही-

" केहन-केहन चमत्कार होइत छैक, नहि तँ एतेक पैघलोकसँ हमरा कोना संपर्क होइत?"

लता तुरंते चाह लेने आबि गेलीह । हमसभ चाह पीबैत किछु-किछु गप्प-सप्प करैत रहलहुँ । चाहो समाप्त भए गेलैक । मुदा लता ओतहि बैसलि रहि गेलि । बैसले नहि रहि गेलि,बहुतरास प्रश्नसभ पुछैत रहलि । हमरा किछु फुरेबे नहि करए। एहि तरहें बहुत समय निकलि गेल । अंतमे हमही उठि गेलहुँ । हमरा उठैत देखि कए लता सेहो उठलि आ जोरसँ हमर हाथ पकड़ि लेलथि । की कहू ,केहन अनुभूति भेल? हमरा जीवनमे एहि प्रकारक ई प्रथम अनुभव छल । बहुत संकोचपूर्वक हम ओतएसँ हटि आगू बढ़ि गेलहुँ । ओ हमरा दिस तकैत रहि गेलि आ हम आगू बढ़ैत रहि गेलहुँ। जाइत-जाइत कहए लागलि- " फेर आएब। कोनो बातक संकोच नहि करब। किछु दिक्कति होअए तँ फोन कए देब ।"

"ठीक छै ।"-से कहि हम बिदा भए गेलहुँ । ओहिठामसँ बहराइत हमरा गजब आनंदक अनुभूति भेल। ओ कहि नहि करवन एकटा लिफाफा हमरा जेबीमे राखि देलथि । हमरा तँ ओहिपर ध्यानो नहि गेल । ओहिठामसँ निकलि बसमे चढ़बाक हेतु टाका निकालए लगलहुँ तँ ओ लिफाफा अभरल । ओकरा खोलैत छी । ओहिमे एकटा मोबाइल फोन आ किछु टाका राखल छल । संगहि एकटा छोटसन डायरी सेहो छल जाहि मे लताक घरक पता आ ओकर मोबाइल नंबर लिखल छल । हम

ओकरासभकेँ सम्हारि कए रखलहुँ । बसक टिकट लेलहुँ आ सोझे अपन डेरा दिस बिदा भेलहुँ ।

-11-

डेरा पहुँचतहि फेर माएक ध्यान आबए लागल । राति भरि टकटकी लागल रहैत छल । की कएल जाए? काज भेटि जाइत तँ डेरा बदलि लितहुँ । एहि डेरामे जाबे रहब अहिना होइत रहत । मोनमे से बात राति भरि घुमैत रहल । दू बजे रातिक बाद आँखि लागल तँ लागल जेना लता लगीचेमे कतहु अछि आ कतहु चलबाक हेतु कहि रहल अछि । हम ओकरासँ गप्प करए लगलहुँ ।

" अहाँ बड़का लोक छी । अहाँ संगे हमर दोस्ती कोना भए सकैत अछि? "

"की बात करैत छी? हमरा अहाँ नीक लगलहुँ,एहिमे अहाँक कोन दोख । हमरा कोनो बातक परबाह नहि अछि । ने हमरा ककरो डर अछि । हम जीब अहीँ लग,मरब अहीँ लग ।"

" बाह रे अहाँ! जीवन कोनो तमासा नहि छैक जे जएह मोन हो सएह कए लिअ । डेग-डेगपर टाका चाही, तागति चाही। हमरा लगमे की अछि?"

" हमरा ऊपर विश्वास करू । हम जे रस्ता तय केलहुँ अछि, निश्चय ओ कष्टकारी भए सकैत अछि, मुदा तकर माने की?"

"अहाँ एतेक सुंदरि छी, पढ़ल-लिखल छी, नीक घरक छी, अहाँक पिता जेहन घर-बर चाहताह आनि लेताह । हम की छी? किछु नहि,मामूली आदमी जकरा ने घर अछि ने कोनो ठेकान अछि?"

" प्रेम आन्हर होइत छैक । ई पुरान कहबी छैक । अहूँ सुनने हेबैक । हम आब पाछू नहि जा सकैत छी ।"

अड़-बड़ सपना सीनेमाक रील जकाँ चलि रहल छल कि बाहर हल्ला भेलैक । सड़क ओहिपार ऊपरका कोठरीमे गैसक सिलंडर फाटि गेल रहैक । चारूकात अव्यवस्था पसरि गेल छल। सभ जहाँ-तहाँ भागि रहल छल । हमहु बाहर भगलहुँ । सड़कपर बहुत लोक जमा भए गेल छल । अग्निशमन यंत्रसँ पानिक बरखा कएल जा रहल छल । सभ एक-दोसरकेँ दिस देखि रहल छल। एही माहौलमे किसुन देखाएल । हम जोरसँ आबाज देलिऐक-" किसुन! किसुन! मुदा ततेक हल्ला भए रहल छल जे ओ किछु सुनि नहि सकल । आखिर हमही जेना-तेना ओकरा लग पहुँचलहुँ ।

हमरा देखितहि किसुन चिचिआ उठल-" एतेक दिन कतए छलह?"

"गाम चलि गेल रही । माए मरि गेल । ओकर काज गामेमे करबाक विचार भेलैक । से सभसँ निवृत भए आब दिल्लीमे छी।"

" ओ! हमरा तँ ई सभ बुझले नहि छल । "

"एहिठाम कतए आएल छलह?" -हम पुछलिऐक ।

"हमर मामा एतए सपरिवार रहैत छथि । संयोग छैक जे ओ सभ गाम गेल छथि । घरमे गैसक सिलिंडर राखल छलैक से एकाएक फाटि गेल । सभ समान जहाँ-तहाँ छिड़िआ गेल । चार फाटि कए उड़िआ गेल । गामसँ मामा फोन केलाह जे एना-एना बात । सएह सुनि कए भागल-भागल अएलहुँ अछि । "

“एहि तरहैं सड़कपर कतेक काल ठाढ़ रहबह । हमर डेरा लगीचेमे अछि । ओतहि चलह। चैनसँ गप्पो करब आ चाहो पीब।"

लाख प्रयासक बाबजूद घरक किछु समान नहि बचलैक। देखिते-देखिते सभकिछु स्वाहा भए गेलैक। आस-पासक कैकटा कोठरीसभ सेहो क्षतिग्रस्त भए गेल छल ,मुदा ककरो जान नहि गेलैक,सएह बड़का बात ।

फरीछ भए गेल रहैक । दूधबला दूध लए कए आबि गेल छल । अखबारबला अखबार फेकि गेल । बच्चासभ अपन-अपन इसकूल जा रहल छल । सड़कपर क्रमशः आवागमन सामान्य भए गेल छल । तथापि, किछु पुलिस अखनो ओतहि ठाढ़ डंटा घुमा रहल छल । दमकलसँ आगि तँ मिझा देल गेलैक ,मुदा लोकक समान सभ यत्र-तत्र ओहिना छतराएल छलैक । किसुनक मामाक कोठरीक तँ किछु नहि बाँचल छलैक। तखन ओ ओहिठाम ठाढ़ रहिए कए की कए लैत? लोकसभ अपन -अपन कोठरीमे वापस चलि गेल छल । किसुन हमरा संगे हमर डेरापर आबि गेल ।

हम अपन स्टोप पजारलहुँ । दू कप चाह बनओलहुँ । चाहक घोंट अंदर होइते जानमे-जान आएल ।

“आओर कोना की भए रहल छैक? -हम कहलिऐक ।

“हम अस्तालसँ घुरि अएलहुँ । टांग तखनो झखाइत छल। कतए जाउ? किछु फुराइए नहि रहल छल। हारि कए पुरना मंदिरे पर पहुँचलहुँ । मंदिरमे दोसर पुजारी काज कए रहल छल। हम ओकरा सभटा बात कहलिऐक । ओकरा बहुत दुख भेलैक जे हम एहन हालमे पहुँचि गेल छी ,मुदा ई साहस नहि भेलैक जे अपना संगे हमरा राखि लिअए "- किसुन बाजल ।

"तखन?"

"तखन की? ओहिठामसँ बिदा भए गेलहुँ । झलफल भए रहल छल । चौकपर चाहक दोकानबला भेटल । ओकरा बहुत किछु बूझल रहैक । हमरा देखितहि किछु-किछु कहए लागल। कहलिऐक जे पहिने चाह पिआबह । फेर गप्प करैत छी। ओ धराक दए चाह बनओलक। चाह पीलहुँ । बिस्कुट खेलहुँ तँ जा कए जान मे जान आएल । ओकरेसँ एकटा दोसर मंदिरक पता लागल । चोट्टे ओतए पहुँचलहुँ । संयोग नीक छल । मंदिरेपर ओकर मालिकसभ भेटि गेलाह । ओहोसभ पुजारी ताकिए रहल छलाह । हमर ओहिठाम तत्काल सभटा ओरिआन भए गेल । ओहिठाम रहबाक बढ़िआँ व्यवस्था छैक । कैकटा कोठरी छैक । जतए रहू ।"

"संगे के सभ रहैत छथि?"

"केओ नहि । "

"मालतीक की समाचार छैक?"

"की समाचार रहतैक? ओ विजय संगे रहैत छथि।"

"तूँ किछु केलहक नहि?"

"की करितिऐक? किएक करितिऐक? जे हमर अछिए नहि तकर पाछू-पाछू कतेक दिन घुमैत रहितहुँ आ किएक ।"

"आ बच्चा?"

"छोड़ह ई गप्प-सप्प । आब एहिमे की राखल छैक?" एहिसभसँ कष्टे भए जाइत अछि।"

बुझाएल जेना ओकर मोन एकदम तीत भए गेलैक ।

कनी काल चुप रहि कए ओ बाजल-" जखन लोक बाघक मुँहमे हाथ देत तँ जे हेबाक से हेतैक । चारूकात समाजमे विकराल

परिस्थिति पसरल अछि । कहए लेल ई महानगरी अछि ,मुदा सामर्थ्यवानेक चलैत अछि। सभठाम टाका चाही । कतए जाएब,ककरा कहबैक,के अहाँसंग ठाढ़ होएत? रक्षको यत्र भक्षकः बला गप्प भए गेल अछि । विजय मालतीकेँ तरह-तरहसँ पछोड़ करैत रहल । हम ई बात जाबे बुझलिऐक ताबे बहुत देरी भए गेल छल आ जँ पहिनहु बुझि जइतहुँ तँ की कए लितहुँ? पुलिस लग जइतहुँ,मुदा एहि मामिलामे पुलिसेक लोक लागल छल। कोटमे केस करए हेतु टाका चाही,कतए सँ अबैत? फेर मालतीक नेत सेहो साफ नहि छल ।"

आगू गप्प करैत ओ बाजल-"हम कैकबेर विजयक जीप मंदिरमे लागल देखिऐक । सोची जे भगवानक दर्शन करए आएल होएत । हम तँ पूजा-पाठमे लागल रही आ ओ अपन काज सुतारए मे व्यस्त रहैत छल । आखिर मालती ओकरा संगे घंटो गप्प किएक करैत रहैत छल? बादमे जखन हमरा कनीमनी कान ठाढ़ भेल ताबे बहुत देरी भए गेल छल ।"

एकदिन हम मालतीकेँ टोकबो केलिऐक ।

"की बात छैक जे विजय एतेक-एतेक काल धरि एहिठाम मड़राइत रहैत अछि?

"अहाँकेँ हमर ककरोसँ गप्पो करब नहि सोहाइत अछि । एहन हालतिमे हम कोना जीवि सकैत छी? हमहु मनुक्ख छी ।"

" आ हम की जानबर छी?"

" जे छी ,मुदा हम अहाँकेँ लेल जपाल छी तँ स्पष्ट किएक नहि बजैत छी?"

एहिना उल्टा-पुल्टा ओ बाजए लागलि । विजयकेँ मौका भेटि गेलैक । ओ अपना संगे हमरा लेने गेल आ झूठमूठकेँ घरेलू

हिंसा कानूनमे अंदर कए देलक ।" हम कैक दिन बिना कोनो गलतीकेँ थानाक हाजतिमे बंद रहलहुँ । ओमहर विजय मंदिरक बहाना बना कए मालती लग अबैत -जाइत रहल । एहन लफड़ा कए बेर होइत रहल । हमरा होअए जे ई पुलिसक आदमी छैक,हमरा संगे बेजाए नहि करत । फेर छलहो अपनेठामक।"

"ओएह तँ गड़बड़ भए गेल । केओ आन रहैत ने तँ एहन लीला नहि होइत । कहबी छैक जे डाइनो पाँचघर बारि कए चलैत अछि, मुदा एहिठाम तँ अजगूते भए रहल अछि। परदेशमे लोक जाएत तँ ककरा लग?"

"आखिर हमहु तंग भए गेलहुँ, तंगोसँ बेसी उदास भए गेलहुँ । हमरा आ मालतीमे मतभेद बढ़िते गेल। ओ सदरिकाल अपने बात पर अड़ल रहैत छलि। अहीं कहू, एनामे कहीं गृहस्थी चललैक अछि? गाममे छलि तँ माए संगे उठापटक होइत रहल । गामसँ अबैतकाल की-की लफड़ा भेल से बूझले अछि । आ जखन संगे रहए लागलि तैओ शांत रहैत सेहो नहि । हम कइए की सकैत छलहुँ? कोनो राजा-महराजा तँ छी नहि? कमाएब नहि तँ खाएब की? ई से बात नहि बुझि दिन-राति दोसरे फसादसभ करैत रहलि परिणाम भेल जे मंदिरबला काज छुटि गेल , डेरा छुटि गेल आ आब तँ बात हदसँ ऊपर भए गेल ।"

" की भेल, किएक भेल ,मुदा भेल बहुत दुखकर । अहाँक तँ घरे उजरि गेल ।"- हम कहलिऐक।

“भावी प्रवल । कहबी छैक जे हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ ।"

से कहि किसुनक आँखि नोरसँ भरि गेलैक । हम अपना भरि ओकरा बहुत बुझेबाक प्रयास केलिऐक । " जीवन करवनो

ठाढ़ नहि भए जाइत छैक । जे गेल से गेल आगूक विचार करू । कोनो-ने-कोनो रस्ता निकलबे करतैक । भगवानक घरमे देर छैक अन्हेर नहि छैक ।"

" से तँ बात सत्ते । मुदा गूंड़क मारि धोकरे जनैत छैक । हम नहि सोचि सकलहुँ जे अपने लोकसँ एहन धोखा होएत ।"

किसुनकेँ परेसान देखि हम बात बदलैत कहलिऐक -" अहाँक मामा कहिआ धरि अओताह ? "

" ट्रेनमे बैसि गेल छथि । भए सकैत अछि जे साँझ धरि आबि जाथि ।"

"आबथि तँ हमरो भेंट कराएब ।"

"अवश्य ।"-से कहि किसुन उठि गेलाह । हम हुनका अरिआति कए अपन डेरामे वापस आएले छलहुँ की लताक फोन आबि गेल ।

-12-

लता पुछलक -"अखबारमे अहाँ घरक आस-पास अगिलग्गीक समाचार छपल अछि । तैं चिंता भेल जे बात की छैक ?"

"सही बात छैक । राति भरि जागले छी । सामनेमे एकटा घरमे गैसक सीलींडर फाटि गेलैक ।"

"ओ! ई तँ बहुत गड़बड़ भेलैक ।"

“अहाँ ठीक छी ने?

" राति भरि जगले छी, तैं कनी सुस्त छी ।"

"हम तँ अहाँक बाट तकैत रही, संगे सरोजिनीनगर बाजार जेबाक सोचैत रही ।"

"करवन?"

"हम तँ तैयोर छी ।"

"कोनो बात नहि । हम सोझे ओतहि पहुँचि रहल छी ।"- से सुनि लता प्रसन्न भए गेलि । हम जल्दीसँ तैयार भेलहुँ आ सरोजिनीनगरक बसमे बैसि गेलहुँ । कनीकालक बाद हम सरोजिनीनगर बसस्टापपर उतरिते रही कि ओतहि लता भेटि गेलि। ओकरा देखितहि करेंट जकाँ लागल ।"

सरोजिनीनगर बसस्टापपर लता अपन कारकेँ ठाढ़ कए हमर प्रतीक्षा कए रहल छलि । हमरा बससँ उतरैत देखितहि ओ हमरा कारमे बैसबाक हेतु इसारा केलथि । हम ओकर कारमे बैसि गेलहुँ। लता अपने कार चला रहल छलि । कार बजार दिस जेबाक बजाए नेहरूपार्क दिस बढ़ि गेल ।

हमसभ नेहरुपार्क दिस बढ़ि रहल छलहुँ कि सामनेसँ विजयक जीप आएल । ओहिमे मालती बैसल छलीह । मालती हमरा देखलक कि नहि ,मुदा हम तँ ओकरा नीकसँ देखलिऐक आ चिन्हबो केलिऐक । विजय लताकेँ देखि कए परेसान जकाँ छल। हमहु ओकरे कातमे बैसल रही । हमरो ओ देखिनहि होएत । मुदा केओ किछु नहि बाजि सकल आ हमसभ आगू बढ़ि गेलहुँ।

विजयक असली रूप कमे लोक जनैत छल । कहि नहि मालती कोना ओकरा संगे फँसि गेलि ,मुदा आब तँ ओ पूर्णतः ओकर चांगुरमे छलि । उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू । हमरो ओकरा बारेमे बेसी नहि बूझल छल। मुदा ओकर असली खीस्सा तँ लता कहलक । नेहरूपार्कमे ओहिदिन हमसभ बैसल रही । तरह-तरहक गप्प-सप्प होइत छल। गामसँ दिल्ली आएल रही आ आब घुरि जेबाक सभटा रस्ता

बंद भए गेल छल आ एहिठाम तरह-तरहक लीलासभ भए रहल छल । से सभ हम देखि रहल छलहुँ । किछु इच्छासँ, किछु नियतिवश ।

लता माता-पिताक एसगरि संतान छलि । मैथिलीमे खुब नीक गप्प कए लैत छलि । ओकरासँ गप्प कए केओ नहि कहि सकैत छलि जे ओ बाइस सालसँ लगातार दिल्लीमे रहि रहल अछि। ऐहीठाम जन्मल.बढ़ल,आ संपूर्ण शिक्षा प्राप्त केलक आ कइए रहल छलि । फिलहाल ओ एमएमे पढ़ि रहल छलि । कहि नहि ओकरा हमरामे की देखेलैक जे एतेक नीक लागि गेलिऐक । नीक ओ हमरो लागि रहल अछि ,मुदा ताहिसँ की ? हमरा अपन औकात पता अछि,हम ई बात ओकरा कए बेर बुझेबाक प्रयासो करैत छी ,मुदा ओ जोरसँ हँसि कए टाड़ि दए दैत अछि । संभवतः ओकरा इसकूल-कालेजसँ बाहरक दुनिआक जानकारी नहि भेलैक अछि। ओकर पिता दिल्लीसन महानगरमे प्रतिष्ठित अधिकारी छथि । घरोक सुखी,संपन्न अछि । तकरा आगू हमर की गणना अछि? हम इएस सभ सोचि-सोचि कैकबेर परेसान भए जाइत छी ।

" अहाँ सदरिकाल की सोचैत रहैत छी?"

हमरा जेना भक टुटि गेल। हम कहलिऐक- "किछु नहि?"

" हमरा ठकबाक प्रयास कए रहल छी?"

"सही बात कहिओ कए की होएत?"

"मुदा गुमसुम रहलोसँ तँ किछु फएदा नहि छैक । अहाँ सदरिकाल परेसान रहैत छी । गप्प-सप्पमे मोन नहि लगैत अछि। एनामे तँ अहाँ दुखित पड़ि जाएब ।"

" हम जँ दुखितो पड़िए जाएब तँ ककर की बिगड़तैक? माए सोचि सकैत छलि, सेहो गुजरि गेल। "

"एना केओ बाजए । समय सभदिन एकहि नहि रहैत छैक । अहाँमे बहुतरास गुण अछि। एतए केओ अपन प्रतिभाक अनुसार अपन स्थान बना सकैत अछि।"

" सएह सोचि कए तँ एहिठाम अएलहुँ, मुदा ढ़ाकक तीन पात । जएह काज शुरु करैत छी, ओहीमे अठबज्जर लागि जाइत अछि । बिना काज-धंधाकेँ एहि महानगरमे केओ कतेकदिन टिकत?"

" से बात सही छैक । हम अहाँक चिंताक समाधान कए देने छी ।"

"की केने छी?"

"काल्हिसँ अहाँ हमर कंपनीमे मैनेजरक काज करब। हमरेसभक घरक बामाकातमे जे खाली कोठरी अछि से अहाँक रहत । "

"हमरा विश्वास नहि भए रहल अछि । कहीं अहाँक पिता ई सभ सुनि लेताह तँ पता नहि की सँ की होएत? "

"हम सभटा गप्प हुनकासँ पहिनहि कए लेने छी । सएह कहए लेल हम आइ बजओने रही,मुदा अहाँ झंझटिमे रही तेँ हमही आबि गेलहुँ "

"यदि ई सही अछि तँ हम काल्हिसँ अवश्य काज करब।"

लताक मुँहे ई सभ सुनि विश्वासे नहि होइत छल । लगैत छल जेना दिनेमे सपना देखि रहल छी । रहि-रहि कए मोनमे चिंता होइत छल । मुदा ई संसार चमत्कारसँ भरल अछि । की पता हमर भाग्यमे किछु नीके हेबाक होइ ।

“अखनो अहाँके प्रसन्न नहि देखि रहल छी?"- लता बजलीह ।

"नहि, नहि से बात नहि छैक?"

"तखन की बात छैक?"

हम किछु नहि बाजि सकलहुँ । कहबे की करितिऐक? मोनमे किसुनक गप्पसभ घुमि रहल छल । झलफल भए रहल छल ।

"आब चलक चाही।-ओ बाजलि । हम दुनूगोटे उठि बैसलहुँ । पीठमे सौंसे घास-फूस लागि गेल छल। से सभ झाड़ि कए बिदा भेलहुँ । लता हमरा घर धरि कारसँ छोड़ए चाहैत रहथि ,मुदा हमही मना कए देलिऐक । जाइत-जाइत लता हमरा दिस तेना तकैत रहथि जे हम किछुकाल अस्थिपिंजर भए गेलहुँ । बहुत मोसकिलसँ आगू बढ़ि सकलहुँ । सामने बसस्टैंड छल । तुरंते बस आएल । कहुना कए धक्कमधुक्का करैत बसमे चढ़लहुँ । जाबे बस आगू नहि बढ़ि गेल, लता हमरा दिस तकैत रहलि।

-13-

प्रातभेने हम भोरे तैयार भए लताक ओहिठाम बिदा भेलहुँ। ताबे लताक तीनटा एसएमएस आबि गेल छल । भोरक समयमे दिल्लीक बसक भीड़ जगजाहिर अछि । टिकट लेबाक हेतु पाछूसँ चढ़नाइ जरूरी अछि। जँ अहाँ आगूबाटे चढ़लहुँ आ टिकट चेकींग भए गेल तँ गेलहुँ । जुर्माना दिअ आ फज्जतिओ सुनू । ई बात हम बुझि रहल छलहुँ ,मुदा पछिलका गेटपर ततेक लदमलद छल जे हमरा आगूबाटे बसमे घुसिआए पड़ल । जाबे ककरो टिकट हेतु हाक दितिऐक ताबतेमे टिकट चेकींग भए

गेलैक। हमरा लाख कहबाक कोनो असर नहि भेलैक । दू-तीनटा मुस्टंड मिलि कए हमरा बससँ उतारि देलक आ लेने-लेने कातमे लए गेल । एक आदमी कानमे कहैत अछि-“एकसए टाका दए दएह,छुटि जेबह नहि तँ जहलो भए सकैत अछि ।" हम जेबीमे हाथ देलहुँ । कुल एकानबेटा टाका छल । ओकरा निकालि कए देखए देलिऐक आ आग्रह केलिऐक जे कमसँ कम दसटाका छोड़ि दिअए ,मुदा कथी लेल किछु सुनत । ओ चट्ट दए सभटा टाका अपन जेबीमे धए लेलक आ दसटाका आओर देबाक जोर देबए लागल । हमरा नहि रहि भेल । ठोह पाड़ि कए कानए लगलहुँ । एकटा बूढ़बा टिकटचेकर कहलकैक् –

“छोड़ि दही।”

से सुनि कए जानमे जान आएल । जेबीमे एकहुटा पैसा नहि रहए। तैओ मोन हल्लुक लागल । कैकटा यात्रीसभ तँ ओतहि रोकि लेल गेल । कैकटाकेँ टिकटचेकरसभ गरदनिआ दए बससँ उतारि देलक। बस आगू बढ़ल । कहुना कए लताक घर लगक बसस्टापपर उतरलहुँ । बसस्टापसँ सटले ओकर घर छलैक । हम आगू बढ़ैत छी। लता घरक गेटेपर भेटि गेलि । गेटसँ अंदर होइते लताक पिताजी, नीरज भेटि गेलाह । हम हुनका प्रणाम केलहुँ । कहए लगलाह-"हम अहींक बाट ताकि रहल छी।" जाढ़क समय छल । रौदेमे दनानपर हम सभ बैसलहुँ ।

"लता अहाँक बहुत प्रशंसा करैत रहैत अछि ।"

"हम हिनका सभटा बात बुझा देने छिअनि । ताही हिसाबे ई आएल छथि ।"-लता बाजलि।

" ओ तहन तँ हिनका सभटा बात बूझले छनि । काररवानापर दुनूगोटे संगे चलि जाह । हम मौका पबितहि आबि

जाएब । आइएसँ काज शुरु कए देथि । हिनकर रहबाक ओरिआन सेहो कए देलिअनि अछि ।" -से कहि नीरज ओहीठाम बामा कातक कोठरीक कुंजी हमरा थम्हा देलाह । लताक घरमे मात्र ओ आ ओकर पिता नीरज रहैत छलाह। घरक सभटा काज नौकर-चाकर करैत छलैक। हमसभ चाह-पान केलहुँ आ लताक संगे कारखाना बिदा भए गेलहुँ ।

नोएडामे कारखानामे हमर सभक कार जहिना पैसल कि गार्डसभ धराधर लताकेँ सलामी देबए लगलैक । हमसभ उतरि कए सोझे मालिकक कक्षमे गेलहुँ । ओहिठाम पहिनेसँ दरबानसभ मुस्तैद छल । चाह-जलखै सभ किछुक ओरिआन छल । हमसभ चैनसँ चाह-पान करैत गप्प-सप्प करैत रहलहुँ । चाह पीबि बैसले छलहुँ की नीरजक फोन आबि गेल जे ओ किछु झंझटिमे फँसि गेलाह आ अखन कारखाना नहि आबि सकताह । हमसभ कारखानाक चारूकात घुमलहुँ ,कर्मचारीसभक संगे गप्प-सप्प केलहुँ । आ भोजनक समय फेर ओहीठाम आबि गेलहुँ।

"हमरा तँ एहि तरहक काजक कोनो अनुभव नहि अछि ।"

"काज तँ स्टाफसभ करैत छैक । अहाँकेँ तँ बस देखरेख करबाक अछि । फेर हमहुसभ रहबे करब ।"

हमसभ दिन भरि ओहीठाम रही । कखनो किछु,कखनो किछु होइते रहलैक । साँझ भए रहल छल । हम आ लता कारसँ वापस ओकर घर बिदा भेलहुँ । ई तय भेल जे दू-तीन दिनमे हम समान सहित नवका डेरामे चलि आएब । लता हमरा बसस्टाप धरि छोड़ि आएलि । हम रस्ता भरि आजुक घटनाक्रमपर सोचैत रहि गेलहुँ । विश्वासे नहि होइत छल जे एहनो भए सकैत छैक ।

लताक संगे भरिदिन रहलाक बाद डेरापर मोन कोना लागैत । स्वभाविक छलैक जे दिन भरि घटित बातसभ मोनमे घुरिआइत ,से सएह होइत रहल । कतेक काल धरि एहिसभ बातपर सोचैत रहलहुँ कि विजयक फोन आएल ।
" केना छी ?"
"ठीके छी, अपन हालचाल कहू ।"
"ओहि दिन जीपसँ जाइत काल अहाँकेँ लता संगे देखने रही ।”
“हमरो अहाँ एकझक देखेलहुँ ।"
“बँचि कए रहब । ओकरसभक चांगुरमे नहि फँसब ।"
"की बात?"
" से कहिओ एमहर आएब तँ गप्प करब । फोनपर बेसी बाजब ठीक नहि, मुदा अहाँ अपना-आपकेँ बचा कए राखब । "
" हमरा तँ किछु नहि बूझल अछि ।”
“बुझेबो नहि करत । जाबे बुझबै ताबे आँखि बंद डिब्बा गाएब रहत ।”
से कहि ओ फोन राखि देलक । हम माथ पकड़ि कए बैसि गेलहुँ। ओ तँ जासूसी सीनेमा जकाँ रहस्यात्मक ढ़ंगसँ अपन बात कहि देलक ,मुदा हम तँ बहुत परेसान भए गेलहुँ । कहीं किछु बलंडर तँ नहि भए रहल अछि?"-मोने-मोन सोचाइत छल । थाकल रहबे करी, ऊपरसँ विजयक फोनसँ ततेक तनाव बढ़ल जे सुता गेल। एकहि निन्ने परात भए गेल । सामनेक सड़कपर लोकक आबाजाही शुरु भए गेल छल । चौकपर चाहक दोकानपर लोकसभक गप्प-सप्प चलि रहल छल । हमहु उठि कए हाथ-पैर

धो कए अखबार पढ़नाइ शुरु केने रही की केओ केबार ढ़कढ़केलक । केबार खोलैत छी । किसुनकेँ एकटा अधबएसू लोकक संगे ठाढ़ देखैत छी।

"आउ, आउ ।"

ओ दुनूगोटे हमर कोठरीमे राखल खाटपर हमरे संगे बैसि गेलाह ।

" ई हमर मामा दामोदर छथि ।"

हम हुनका गोर लगलहुँ । फेर पुछलिअनि-

"कखन अएलहुँ?"

"अजुके रातिमे अएलहुँ ।"

"अहाँक तँ बहुत क्षति भए गेल । मुदा एना भेलैक किएक?"।

"की कहू? हमरा तँ एहिमे कोनो षड़यंत्र बुझाइत अछि । सिलींडरमे तँ कनीको गैस नहि रहैक तखन ओ फटितै कोना ? खामखा सिलींडर फटबाक खिस्सा गढ़ि कए असली अपराधीकेँ बचाओल जा रहल अछि।"

" ई तँ बड़ आश्चर्यक गप्प भेल ।"

" हम तँ बरबाद भए गेलहुँ । एतेक मोसकिलसँ घरक समानसभक जोगार भेल छल । देखिते-देखिते सभ स्वाहा भए गेल ।

“मुदा एहन काज केलक के आ किएक?”

"इएह तँ नहि बुझा रहल अछि?"

"पुलिसबलासभ की कहि रहल अछि?"

"ऐखन तँ अएबे केलहुँ अछि । अबिते थाना गेल रही । मुदा ओ सभ हमरेसँ सएटा प्रश्न करए लागल ।"

"विजय तँ अपने ओहिठामक अछि ।"

"मुदा हमरा तँ ओएह गड़बड़ बुझा रहल अछि ।"

" से कोना?"

" की -की कहू? बात बहुत गंभीर बुझाइत छैक ।"
“से की?"

ओ गुम पड़ि गेलाह । ताबे हमर चाह बनि गेल छल । दुनगोटेकेँ चाह देलिअनि । हमहु फेरसँ चाह लेलहुँ । किसुनक मामा दामोदर देखबामे भुट्ट ,मुदा कठमस्त छलाह । करगर मोछ आ कारी-कारी घनगर माथक केस । ओतेक भारी दुर्घटनाक बादो ओ शांत लगैत छलाह आ नीक-बेजाएक विचार करैत छलाह । रेलवेमे चपरासीक काज करैत छलाह आ अंशकालिक किछु-किछु आओर धंधासभ करथि जाहिसँ दिल्लीसन महानगरमे नीकसँ गुजर भए जाइत छलनि । हुनकर अंशकालिक काजक सही जानकारी ककरो नहि रहैक, ओकर घरोक लोककेँ नहि । घरमे ओ एतबे कहैक जे काजसँ बाहर जा रहल छी । कार्यालयमे कहिओ छुट्टी लैक,कहिओ अहिना जोगार कए लेथि। क्रमशः थोड़बे जमीन कीनि कए ऊपर-नीचाँ घर बना लेने रहथि। भाड़ा देबासँ बचत भए जाइत छलनि आ अपन घरमे रहबाक स्वादो भेटैत छलनि । मुदा ई दुर्घटनासँ बहुत क्षति भए गेलनि । घरक चारे उड़ि गेलैक । घरक समानसभ जरि कए खाक भए गेल। बहुत रास कागज-पत्रसभ सेहो जरि गेलनि । किछु नगद टाका राखल रहनि ,सेहो निपत्ता छल । एहि तरहेँ ओ एकटा जबरदस्त संकटमे पड़ि गेल रहथि।

सभसँ आश्चर्यक बात ई भेल जे एतेक भेलाक बाबजूद ओ पुलिस मे रपट नहि देलथि । केओ कहनि तँ कहथि –

“एहिसभ सँ की होएत, जे जेबाक छल से गेल । पुलिस की करत? उल्टे किछु झिटबाक व्योंतमे पड़ि जाएत ।”

मुदा पुलिसकेँ कान ठाढ़ भए गेलैक । जाँच-पड़ताल होबए लागल । दिनमे कैकबेर पुलिस अबैत-जाइत रहल । पुलिसकेँ ई पता लागि गेलैक जे ई कांड गैसक सिलिंडर फटलासँ नहि भेल। किछु आओर कारण की छल से पता नहि चलि रहल छल । ओहि दिन हमसभ चाह पीबैत रही कि दामोदरक मोबाइलपर पुलिसथानासँ फोन आएल-"अहाँकेँ विजय बजा रहल छथि ।"

"ठीक छैक"-दामोदर बजलाह ।

फोन अबिते किसुन अपन मामाक संगे हमरा ओहिठामसँ अपन डेरा हेतु बिदा भए गेलाह। स्नान- ध्यानक बाद दुनूगोटे थाना बिदा भेलाह ।

-15-

किसुन आ ओकर मामाक गेलाक बाद फोन देखलहुँ । लताक पाँचटा मिसकाल छल। कैकटा एसएमएस आबि गेल छल। सभ किछु बिसरि हम पहिने ओकर फोन उठओलहुँ । घंटी बाजैत रहल ,मुदा ओ फोन नहि उठओलथि । आब की होएत? लता बिगड़ि गेल की ? तरह-तरहक अंदेशा मोन मे होबए लागल। जखन फोन नहि उठा रहल छलि तँ एकहिटा रस्ता छल जे अपने ओतए चलि जाइ , देरी तँ भइए गेल रहैक । असलमे किसुन आ ओकर मामाक संगे बहुत समय निकलि गेल । करबो की करितहुँ? उपरसँ विजय से दुविधा कए देने रहए ।

हम फटाफट तैयार भेलहुँ । झोरा उठओलहुँ आ बिदा भेलहुँ । बसस्टापपर पहुँचले छलहुँ कि लताक फोन आएल ।

" हम अहाँक बाट तकैत-तकैत कारखानापर आबि गेल छी। अहाँ सोझे ओतहि आबि जाउ।"

"ठीक छैक ।"-हम किछु आओर कहए चाहलिऐक, मुदा ताबे ओकर फोन कटि गेल ।

लता कारखानाक गेटेपर भेटि गेली ।

"एतेक देरी किएक भए गेल? हम तँ सोचैत रही जे अहाँ समानक संग अबैत होएब।"

"भोरे- भोर किसुन अपन मामाक संगे आबि गेल । "

"की भेलैक।"

"अखबारमे पढ़नहि हेबैक । किछुदिन पूर्व ओकर घरमे विस्फोट भए गेलैक । सभटा समान जरि गेलैक। घरक चारो उड़ि गेलैक ।"

" समाचार तँ पढ़ने रहिऐक ।"

"ओ सभ बहुत परेसान अछि । विजय बजओने छैक । देखा चाही की होइत छैक?"

"ओ सभ किछु नहि करतैक ।"

"से तँ हमरो बुझाइत अछि । ई विजय नीक लोक नहि बुझाइत अछि ।"

" अहाँक अनुमान सही अछि। हमरा तँ ओकरे पर सक होइत अछि ।"

"से कोना?"

" ओ तरह-तरहक धंधासभमे लागल रहैत अछि ।"

" हमरा तँ ओएह अहूँ बारेमे किछु-किछु कहलक । सत बात की छैक से नहि कहि, मुदा हमरा दुविधामे दए देलक ।"

"हम नहि बुझलिऐक । फरिछा कए कहू ।"

"ओ कहलक जे अहाँसभ सँ बचिएक रही ।"

सएह कहू ,केहन नेतघट्ट अछि । हमरे बाबू ओकरा काज धरओने रहथि आ हमरेसभकेँ जड़ि काटएपर लागल अछि ।"

"की कहि सकैत छी? ककरा मोनमे की छैक से बुझब बहुत मोसकिल काज अछि । लोक अपन मोन तँ थाहिए नहि पबैत अछि,अनकर कोन कथा? हम एहि महानगरक प्रपंच नहि बुझैत छिऐक । हमसभ गामक सोझ लोक छी ,मुदा एहिठाम तँ डेग-डेगपर छल-प्रपंच भरल छैक । ककर बात मानू ,ककर नहि। हम तँ सोचने रही जे अपन काज करब आ चैन सँ जीब ,मुदा सएह नहि भए पबैत अछि । कोनो निजगुत काज नहि भेटैत अछि,जे भेटैत अछि ओहिमे किछु-ने-किछु हेराफेरी शुरु भए जाइत छैक।”

गप्प-सप्पक क्रममे हम ओकरा साफे कहलिऐक जे अखन किछुदिन हम अपन पुरने डेरामे रहब । लता चुप रहि गेलीह। हम इहो कहलिऐक "-हम ई नहि बुझि पाबि रहल छी जे एतेकभारी राज-काज हम कोना चला सकब । हमरा कोनो तेहन शिक्षो नहि अछि ?"

"कोनो बात नहि । नीकसँ बिचारि लिअ । जे ठीक बुझाए सएह करू । हमरासभकेँ कोन पूर्वाग्रह वा दुराग्रह नहि अछि । हमसभ तँ अहींक हित सोचैत रही । जे हेतैक, नीके हेतैक ।"

"अहाँ तँ तमसा गेलहुँ ।"

"नहि, नहि, तमसएबाक कोनो बाते नहि छैक।"

लता अपन कारमे बैसलि आ चलि गेलीह । हमरा पुछबो नहि केलीह । हम पैरे-पैरे बससटैंड पहुँचलहुँ आ ओतएसँ बस पकड़ि अपन डेरा वापस चलि अएलहुँ ।

लतासँ भेंटक बाद हम डेरा पहुँचलहुँ । असगरमे तरह-तरहक बातसभ मोनमे अबैत रहल। लताक बारेमे ,ओकर पिताक बारेमे आ ओकरसभक हमराप्रति सहानुभूतिक बारेमे सोचैत रहि गेलहुँ । हमरा लताक ओहिठाम रहब आ ओकर काज करब ठीक नहि बुझाएल। भेल जे बादमे कोनो लफड़ा ने भए जाइक । फेर ओतेकटा कारबार हमरा वशक लगितो नहि छल । हम अपन निर्णय लताकेँ बता देबाक हेतु फोन केलहुँ । मुदा ओ फोन नहि उठओलक । प्रायः ओ तमसा गेलि । जे भेल,से भेल ,मुदा हम ओहि घनचक्करमे नहि पड़बाक पक्का निर्णय कए लेने रही । राति बेसी भए गेल रहैक । बहुत थाकि गेल रही । मुदा भोजनक जोगार तँ करबेक छल। अपनेसँ किछु-किछु बनओलहुँ । भोजन कए सुति रहलहुँ ।

भोरे उठि नहा सोना कए बिदा भेलहुँ । हम सोचि लेने रही जे आइ कोनो-ने-कोनो काज पकड़ि कए रहब आ एहि बातक प्रयास करब जे ककरो आश्रित नहि रही । एतेक पैघ महानगरमे जतए केओ ककरो नहि अछि ,हमरा कोना काज भेटत ई समस्यासँ मोन आतुर छल ,मुदा कहबी छैक जे अन्हेर गायक राम रखवार। अहिना चलिते-चलिते एकठाम लोकसभक भीड़ देखलिऐक । विश्वकर्मापूजाक बाद प्रसाद वितरण भए रहल छल। कार मरम्मतक कारबार ओतए होइत छल । हमहु प्रसाद लेलहुँ । थाकि गेल रही । ओतहि बेंचपर बैसि गेलहुँ । क्रमशः लोकसभ

चलि गेल । ओकर मालिक आ दू-तीनटा कर्मचारी रहि गेल रहए। ओकर मालिक बेस रमनगर लोक बुझेलाह ।

सर्ट-पैंट पहिरने,मोछ-केस रंगने हुनकर बएस चालीस - पैंतालिससँ बेसी नहि बुझाइनि। हम हुनका प्रणाम केलिअनि । हम किछु पुछितिअनि ताहिसँ पहिने ओएह कहए लगलाह- "केमहर घुमि रहल छी ?"

"काज ताकि रहल छी ।"

"केहन काज?"

"जएह भेटि जाए?"

"कतेक पढ़ल छी "

"ओना तँ हम मैट्रिक पास छी, मुदा आब तँ पास केला बहुत दिन भए गेल । सभ बिसरि गेलिऐक ।"

"ई तँ बहुत नीक भेल कारण लोककेँ अबैत रहैत छैक किछु नहि आ दाबी रहैत छैक बहुत। तेहन लोककेँ काज भेटबामे बहुत परेसानी छैक ।"

"हम कोनो काज करए लेल तैयार छी?"

"ठीक छैक, अहाँ काल्हिसँ एतए आउ, देखैत छी, अहाँ की कए सकैत छी ।

प्रात भेने हम मिथिला आटो सेंटर पहुँचलहुँ । ई एकटा सुखद आश्चर्य छल जे दिल्लीमे रहितहुँ ओकर मालिक मदनबाबू झुरजार मैथिलीमे बजैत छलाह । ततबे नहि हुनका मैथिलीक पोथीसभ आल्मीरामे धेने सेहो देखलिअनि। हमरा आएल देखि कए ओ बहुत खुस भेलाह ।

" हम अहाँक बाटे ताकि रहल छलहुँ ।"-ओ बजलाह ।

"रस्तामे बस खराब भए गेलैक नहि तँ पहिने आएल रहितहुँ ।"

"कोनो बात नहि । अहाँ ई फार्म भरि लिअ। एकटा फोटो अनने छी कि नहि?"

"फोटो तँ नहि अछि?"

"आओर कोनो पहिचान पत्र अछि तँ ओकर एकटा फोटोकाँपी दए देबैक ।"

"हमरा लगमे तँ किछु नहि अछि।"-से कहैत हम किछु परेसान भए गेल रही ।

"कोनो बात नहि । अहाँ काज शुरु करू, फेर देखल जेतैक। " -से कहि ओ हमरा ओहिठाम काज करैत एकटा कर्मचारीक संग कए देलथि। भुट्ट, चाकर भरिगर देह होइतहुँ ओ बेस फुर्तिगर लोक बुझाएल ।

" हिनका अपना संगे राखह आ काजसभ सीखा दहुन । ई एतहि काज करताह।"

"ठीक छैक"- से कहि ओ हमरा दिस ताकए लागल । फेर हमरा कहलक-"की नाम भेल?

"गोविंद"

"आ रहैत कतए छी?"

"लक्ष्मीनगरमे डेरा लेने छी।"

" ओ तँ एहिठामसँ बहुत दूर अछि ।"

"बदलि लेबै । कोनो आस-पास डेरा होइक तँ कहब ।"

"ठीक छैक।"

अहाँक की नाम भेल ?"

"बटुक ।"

बटुक हमरा ओतए काज केनिहार नेपाली कर्मचारी बहादुरसँ भेंट करओलक ।

" ई ऐहिठाम आइसँ काज पकड़लथि अछि । मदन मालिक हिनका काज सिखाबक हेतु कहलखिन अछि ।"

" ई काज सिखएमे की राखल छैक? चक्कामे हवा भरि दिऔ,पेंचर साटि दिऔ ,कोनो पेंच ढ़ील होइ तँ कसि दिऔक,भए गेल दसटाका ।"-से कहि बहादुर भभा कए हँसि पड़ल ।

दिन भरि हमसभ गप्प-सप्प करैत रहलहुँ । कैकबेर चाह-पान भेलैक । बटुककेँ पान खेबाक आदति रहैक । बहादुर चीलम पीबैत छल । मालिककेँ एहिसभसँ कोनो मतलब नहि,काज हेबाक चाही । दिन भरि हँसी-ठठ्ठा होइत रहल । साँझ भए गेल। बहादुर आ बटुक एकहिठाम रहैत छल । दुनूगोटे एक -एकटा कोठरी लेने छल । दुनूक परिवार संगे रहैत छल। जाइत-जाइत बटुक कहलक -"अहूँ हमरेसभक संगे डेरा लए लिअ । एकठाम रहब तँ मोनो लागत आ सुविधो रहत ।"

' से तँ ठीके कहैत छी। कोनो कोठरी खाली छैक की?"

"हमरासभक बगलेमे एकटा कोठरी खाली भेलैक अछि। कही तँ मकान मालिकसँ गप्प करी।"

"अवश्य गप्प करब । एकहिठाम डेरा भए जाएत तँ संगे आएब-जाएब । गप्प-सप्प करैत सभगोटे संगे अपन-अपन डेरा दिस बिदा भेल ।

एहि तरहेँ हमरा फेर एकटा काज भेटि गेल । दरमाहा की भेटत,काज की करए पड़त,किछु तय नहि छल। हमरा किछु पुछबाक साहस नहि भेल ने ओ अपना मोने किछु कहलथि । काज भेटि गेल सएह कोन कम? महानगरमे ककरा के पुछैत

छैक,ताहिठाम बिना कोनो पूर्वपरिचयकेँ ओ हमरा अपना ओहिठाम काज देलाह ई कहाँक थोड़ छल ? बड़का बात छल। तहन तँ मनुक्खक स्वभाव छैक जे ओ नव-नव समस्या ठाढ़ कए लैत अछि । मुदा हम एहि हालतिमे नहि रही जे किछु मोलइ करी। जे भेटि गेल सएह बहुत ।

डेरा पहुँचलहुँ तँ मोन हल्लुक लागए । मकान मालिककेँ कहि देलिऐक जे हमरा काज भेटि गेल आ ओ एहिठामसँ बहुत दूर अछि तेँ हमरा डेरा बदलए पड़त ।

"आ बाँकी भाड़ाक की हेतैक?"-मकान मालिक बाजल।

" हमरा लगमे अखन पाइ नहि अछि । एकमासक दरमाहा भेटत तँ सभ सँ पहिने अहींकेँ हिसाब चुकता करब ।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि? गेलाक बाद के- ककरा तकैत रहत? हिसाब कइए कए एहिठामसँ गेनाइ ठीक होएत। -मकान मालिक बजलाह । मकान मालिक होमिओपैथीक डाक्टर छलाह। पहाड़क रहएबला छलाह । जे किछु कमाथि से पिनाइएमे चलि जानि । तेँ दिन-राति घरबालीसँ खटपट होइत रहनि । प्रेम विवाह केने रहथि । घरबाली सेहो किछु काज करैक,की करैक से हमरा नहि बूझल रहए । ने ओसभ से कहिओ कहलक,ने हम कहिओ पुछलिऐक । मकान मालिक अपन परिवारक संग भूतलपर बनल फ्लैटमे रहैत छल । ऊपरका फ्लैटमे हम आ हमरा सन-सन कैकगोटे रहैत छलहुँ ।

हम मकान मालिककेँ बिना किछु उत्तर देनहि ओहिठामसँ उठि कए अपन कोठरीमे आबि गेलहुँ । हम ओहिठाम पहुँचले छलहुँ कि मकान मालिकक घरसँ जोर-जोरसँ हल्ला होइत सुनाएल । दुनूगोटे आपसेमे लड़ैत छल । बुझि नहि सकलिऐक

जे कथी लेल झंझटि भए रहल छैक । ओकरा सभकेँ आपसी गप्पमे हमर नाम लैत सुनि आश्चर्यो भेल । फेर की भेलैक जे ओ सभ एकदम गुम्म भए गेल । हम थाकल रहबे करी पता नहि,करवन निन्न पड़ि गेल ।

-17-

प्रात भेने मकान मालिक बजओलक । ओकर घरबाली सेहो ओतहि रहैक। हम चकुआएल ओतए पहुँचलहुँ । केओ किछु कहैत ताहिसँ पहिने मकान मालिकक घरनी बाजलि-" अहाँकेँ जखन जोगार होएत बाँकी भाड़ा देब । ओहि लेल अपन काज हरमाद नहि करब। ओना अहाँ चाही तँ एतहि रही,हमरा दिस सँ कोनो हरजा नहि ।"

" हमरो कोनो हरजा नहि होइत ,मुदा हमरा नव काज एहिठामसँ बहुत दूर छैक । कोनो सोझ बस नहि छैक । कैकटा बस बदलि कए हम ओतए जाएब-आएब तँ बहुत परेसानी होएत आ खर्चा तँ हेबे करत ।"

"बात तँ ठीके कहैत छथि "-मकान मालिक बाजल ।

"हम आइ काजपर जाइत छी, देखैत छी जे नव डेरा भेटैत अछि कि नहि, तकरबादे कोनो बात । ताबे तँ छीहे ।"

से सभ गप्प भेलाक बाद हमर मोन आश्वस्त भेल । ओहिठामसँ काजपर जाइत रही तँ देखलहुँ जे मकान मालिकक घरनी कोनटा लागल ठाढ़ि छथि। देखबा-सुनबामे पवित्र रहथि। हम बाहर जाइत रही आओर ओ एकटक हमरा घुरैत रहलीह। हम ई बात साइत बुझबो नहि करितिऐक ,मुदा ताबते हुनका बड़ी

जोरसँ छिक्का भेलनि आ अकस्मात हमर ध्यान ओमहर चलि गेल। विलंब भए रहल छल ,तेँ हम झटकि कए आगू बढ़ि गेलहुँ ।

बससँ उतरि ठामहि मिथिला आटो सेंटर छैक । हम ओतए पहिलदिन काज करए पहुँचल रही । बटुक आ बहादुर पहिनेसँ ओतए हाजिर छल । मदनबाबू किछु काज करैत ओतए अओताह से फोन आबि गेल रहैक । हमरा जान-मे-जान आएल जे पहिले दिन विलंबसँ पहुँचबाक अयशसँ बँचि गेलहुँ ।

"की भाइ, की हाल?"-बटुक बाजल । बहादुर सेहो ओतहि रहैक ।

"पहिने चाह, तखन काज"-बहादुर कहलकैक ।

"हम तँ मकान मालिकसँ मकान खाली करक हेतु कहि देलिऐक । ओकरा दिससँ हरजा नहि अछि । बाँकी किरया बादमे दए देबैक सेहो ओ मानि गेल अछि ।"

"तखन देरी कथिक छैक? हमरा बगलबला कोठरी खालीए छैक । ओतहि आबि जाउ।"

"भाड़ा कतेक की हेतैक?"

"हम मकान मालिकसँ गप्प केने रहिऐक । जतेक हमसभ दैत छिऐक ततबे अहूँ दए देबैक ।"

"कतेक दैत छिऐक से तँ बुझिऐक?"

"सातसए महिना, बिजली, पानिक पचास टाका फराकसँ।"

"कोनो हरजा नहि, एहिसँ बेसीए भाड़ा अखन दए रहल छिऐक ।"

"साँझमे पहिने जा कए मकान मालिकसँ भेंट कए ली आ काल्हि डेरा बदलि लेब ।"

"हम सभ टा गप्प कए लेने छी । अहाँ समानसँ लए कए सोझे चल अबैत रहू ।"

"ठीक छैक।"

साँझमे समानसभ लए कए जेबाक हेतु तैयार भेलहुँ । मकान मालिकक घरनी आगू आबि कए ठाढ़ि भए गेलि ।

"अबैत- जाइत रहब ।"

" एकबेर तँ भाड़ाक बकिऔता चुकाबक हेतु आबैक अछि ।"

" ई कोनो बात भेलैक? भाड़ा कतहु भागल जाइत छैक जे अहाँ एतेक चिंतित छी "-से कहि ओ हँसि देलथि। हम हुनका दिस तकिते रहि गेलहुँ । कतेको दिन जखन हम भानस नहि करी तँ ओ अपने बिना किछु कहने हमर भोजनक ओरिआन करैत छलीह,जखन हम कखनहुँ परेसान होइ तँ ओ हमरा मदति हेतु आगू आबि जाइत छलीह ,मुदा ततबे । हम ओहिसँ बेसी किछु बुझबाक स्थितिओमे नहि रही आ ने ओ कहिओ किछु स्पष्ट कहलथि । हमरा इएह होइत छल जे हुनका हमर हालपर दया आबि जाइत हेतनि । जाबे हमर माए ओतए छलि,दिन भरि हिनके संगे गप्प-सप्प कए समय बिताबैत छलि । तैओ ओकरा मोन नहि लगलैक आ एहि दुनिआसँ चलि गेलि । संभवतः ओ एकतरफा सभकिछु करैत रहलीह । हाल ई अछि जे अखन धरि ने हमरा हुनकर नाम बूझल अछि आ ने हुनकर फोन नंबर अछि । आब जाइए रहल छी । आगू संपर्क कोना रहत? सेहो चिंता ओएह केलीह आ अपनेसँ अपन मोबाइल नंबर लिखा देलीह । आ बजलीह-" हमर नाम कुसुम अछि ।”

"ओ! केहन सुंदर नाम अछि ।" हमरा बजा गेल ।

हम समान सभ मुड़ीपर धेने बिदा भए गेलहुँ। आब जखन हम ओहिठामसँ जा रहल छलहुँ तँ तरह-तरहक बातसभ मोन पड़ि रहल छल । कैकटा बितलबातसभक किछु-किछु अर्थ लागि रहल छल । भने हम नहि बुझलहुँ ,नहि तँ अनर्थ भए सकैत छल। एक राति हम पड़ल छलहुँ ,मुदा रही जगले । अचानक हुनका देखलिअनि । हम आओर घत काढ़ि लेलहुँ जेना कतेक निन्नमे होइ। ओ कैकबेर हमर खाटक लगीच धरि अएलीह । एमहर-ओमहर तकैत रहलीह । मुदा हम सभ किछु देखितहुँ निःशब्द रहि गेलहुँ । ताबतेमे नीचाँक घर दिस इजोत बड़लैक आओर ओ दबले पैरे घसकि गेल रहथि। हम तैओ एना सन रहि गेल रही जेना किछु भेले नहि रहैक । भोरे दुनू बेकतीमे झगड़ा होइत सुनने रहिऐक। मुदा किछु बुझि नहि सकलिऐक,जे एना किएक भए रहल छलैक। ओ अपने ओहिठामक रहथि ,मुदा पालन-पोषण हुनकर बंगालमे भेल रहनि । ओहिठाम हुनकर पिता नौकरी करैत छलाह। गाम आबाजाही कमे होनि । मुदा घरमे अपने भाषामे गप्प करथि । तेँ कुसुमकेँ मैथिली नीकसँ बुझा जाइक । लटपटा कए बाजिओ लेथि ।

दिल्लीमे पढ़ाइ करैत काल दुनूगोटेमे प्रेम भए गेल रहैक। परिवारक लोक एकर सभहक बिआहक हेतु तैयार नहि भेलैक । मुदा ई दुनू आड़ि गेल । आर्यसमाज मंदिरमे जा कए बिआह कए लेलक । ई बात अपने कुसुम हमर माएकेँ कहने रहैक।

एकदिन दूपहरिआमे हम अपन कोठरी असगरे रही तँ कोनो बहाना बना कए ओ हमरा बजओलथि । बाहर मुसराधार

बरखा होइत रहए । सड़कपर कतहु केओ नहि । ताबतेमे केओ बाहरसँ खट-खट केलकै । हम मोसकिलमे पड़ि गेल रही ।

एकबेर कुसुम हमरा नोत देने रहथि । किछु रहल हेतैक। हम साँझमे समयसँ पहिने डेरा लौटि आबि गेल रही । नीचाँसँ ओ आबाज देलीह-

“बिझो भए गेल, आबि जाउ" ।

हम नीचाँ उतरलहुँ ।

“असगरे हमहीटा?” -मोनमे ई प्रश्न उठल । भेल जे हेतैक कोनो बात । हमरा परेसान देखि ओ कहैत छथि-"बैसू ने ।” हम बैसि गेलहुँ । आओर की कहू, की-की भेल? । ओ कतेक प्रसन्न छलीह । मुदा हम अपसिआँत भए गेल रही । जेना चारूकात सभ हमरे देखि रहल हो । हमर मनोदशा देखि कुसुमके नहि रहल गेलनि । बाजि उठलीह-

" एना परेसान नहि होउ ।"

हम मुड़ी गाड़ने ऊपर चलि अएलहुँ । की खेलहुँ,नहि खेलहुँ किछु ध्यान नहि रहल । कतेक तरहक बात सभ होइत रहल।

ई यात्रा जेना एकटा बीतल बातसभ कैं ओदारि कए राखि देलक । जकरे देखू सएह कहि रहल अछि-“ ई महानगर छैक ।” तकर माने की? एहिठामक मनुक्खक कोनो चारिटा टांग होइत छैक की?मोने-मोन सोचाइत रहल । बसमे बैसल इएहसभ सोचैत- सोचैत हमर बसस्टाप आबि गेल। बस चालक चिकरल - मुनिरका,मुनिरका । हम साकंछ भेलहुँ । कहुना कए समानसभ उतारि अपनो बाहर भेलहुँ ।

समानसभक संगे जखन हम ओतए पहुँचलहुँ तँ बटुक आ बहादुर बाहरे भेटि गेल । ओ सभ घरक समानसभ कीनने जा रहल छल । हमरा देखितहि बाजल-

"एतबे समान?"-

"ओहो तँ आब भेल अछि ।"

"कोनो बात नहि । हमसभ छी ने, जे किछु काज होइक से निःसंकोच कहब ।"

" अहाँ सभकेँ नहि कहब तँ कहबै ककरा?"

हमसभ ऊपर अबैत छी । बटुक हमरा कोठरीक कुंजी दैत अछि । हम समानसभ रखैत छी । खाट टुटि गेल रहए,तेँ ओकरा ओतहि छोड़ि देने रहिऐक । ताबे पटिआ ओछा देलिऐक । बटुक,बहादुर आ ओकरसभक घरबाली बड़ीकाल धरि बैसल रहल । गप्प-सप्पमे बहुत समय निकलि गेलैक । बटुक बाजल -

" भाइ! अहाँक भोजन हमरे ओतए हेतैक ।"

" ठीक छैक ।"-हमरा बहुत उसास लागल ।

हम सोचने रही जे मकान मालिकसँ भेंट होएत । पुछबो केलिऐक -"मकान मालिक कतए छथि?"

" ओ तँ बड़का आदमी छथि । हुनका समय नहि रहैत छनि । हमहीसभ जा कए भाड़ा पहुँचा दैत छिअनि । कोनो बात भेल तँ मोबाइलपर गप्प कए लेलहुँ ।"

ताबतेमे बटुक फोन लगा देलक । ओमहरसँ कोनो परिचित महिलाक स्वर बुझाएल ।

" हम छी गोविंद ।"

"ओ! अहाँ एतए कोना आबि गेलहुँ?"

"लता छी की?"

"सएह कहू अहाँ हमरा चिन्हिओ नहि रहल छी?"

"चिन्हि रहल छी तेँ ने । हम अहिठाम काज धेलहुँ अछि। हमर संगीसभ एतहि रहैत छथि आ ई डेरा बहुत लगीचमे अछि, तेँ एतहि आबि गेलहुँ ।"

"बहुत नीक बात । कोनो दिक्कति होइक तँ निःसंकोच कहब ।"

से कहि ओ फोन राखि देलथि । हम बहुत असमंजसमे पड़ि गेलहुँ । पता नहि लता की सोचतीह? हुनका ओहिठाम एतेक सुविधा भेटि रहल छल से सभ छोड़ि कए हम एतए आबि गेल छी । मुदा ओ ताहि तरहक किछु आभास नहि होबए देलीह।

फोन रखितहि बटुक आ बहादुर हमरा दिस छगुन्तासँ देखि रहल छलाह ।

" अहाँ हिनका पहिनहिसँ चिन्हैत छिअनि की?"-बटुक बजलाह ।

"चिन्हैत नहि छथिन तँ एतेक गप्प ओहिना केलथि। आब अपनोसभकेँ फएदे रहत।"-से कहि बहादुर कनखी मारलक आ अपन कोठरीमे चलि गेल । बटुक ओतहि बैसि गेलाह ।

" ओ सभ बड़का आदमी छैक । बँचि कए रहब । एहन ने होअए जे हमरोसभक डेरा चलि जाइत रहए ।"

" की बात करैत छी?"

" वाजिब बात कहि रहल छी । पहिने एहन भए चुकल अछि ।"

“से की?"

“अखन सुस्ता लिअ । चैनसँ कहब ।”

से कहि बटुक सेहो अपन कोठरीमे चलि गेलाह । हम एसगर गुनधुनमे पड़ि गेलहुँ । एहि तरहें लतासँ गप्प कए हमरो कोनो प्रसन्नता नहि भेल । कारण हम जाहि स्वतंत्रताक अपेक्षा करैत छलहुँ से वाधित हेबाक संभावना तँ बनिए रहल छल । तथापि तत्काल किछु नहि कएल जा सकैत छल आ ने तकर प्रयोजने छल । मात्र आशंकासँ भविष्यक निर्णय नहि लेल जा सकैत छल,नहि लेबाक चाहैक छल से बात मोनमे अबैत छल। भेल जे जखन आबिए गेल छी तँ किछु दिन रहिए कए देखि ली,नहि तँ दुनिआ बड़ीटा छैक ।

छगुन्ता एहि बात सँ सेहो लगैत छल जे जकरे देखू सएह बुझबए लागत जे ई महानगर छैक । जेना कोनो भूत होइक महानगर । एतबा तँ बुझाइत छल जे एतए सभ स्वार्थी अछि । जेना सभ कथुक पाछू तीव्र गतिसँ भागि रहल अछि , जेना मनुक्ख एकटा यंत्र होअए । मुदा तकर की कएल जा सकैत अछि? तुलसीबाबा ठीके कहने छथिन -" जहहिं बसहु तहि सुंदर देसू ।" गाममे जखन गुजर नहि भेल तखने दिल्ली अएलहुँ । एतए कोहुना-ने-कहुना पेट तँ भरि जाइत अछि । रहल नीक बेजाए, से कतए नहि छैक? जे जेहन रहैत अछि तेहने ओकरा सभ लागए लगैत अछि । इएह सभ सोचैत- सोचैत अखरे पटिआपर निन्न पड़ि गेल । हमरा फोंफ कटैत देखि बटुक कैकबेर घुरि गेलाह। भोजन बनि कए सेरा रहल छल । अंततोगत्वा, कोठरीक जिज्जिर खटखटओलथि । हम अकचका कए उठि बैसलहुँ ।

"भोजन सेरा रहल अछि ।"

"ओ! हमरा तँ सुता गेल ।"

"कोनो बात नहि । थाकल छी । भोजन कए चैनसँ सुति रहब ।”

हम ,बटुक आ बहादुर संगे बैसि जाइत छी । बहादुरक घरबाली भोजन परसैत अछि आ बटुकक घरबाली चुल्हापर गरम-गरम सोहारी बना रहल अछि । एहन समन्वय तँ मोसकिलसँ देखल जाइत अछि । भोजनक स्वादक की कहू? एक युगक बाद एहन स्वादिष्ट भोजन पाबि रहल छलहुँ ।

" की भाइ! खाए जोकर अछि कि नहि ?"- बटुक बजलाह।

" अतिस्वादिष्ट । एहन भोजन तँ कतेकोदिनक बाद कए रहल छी ।"

"आब रोज एहने भोजन हेतैक ।"

हम छगुन्तासँ बकर-बकर तकैत रहि जाइत छी । हमरा ओना तकैत देखि बहादुरक घरबाली हँसि दैत अछि । ओकर हँसीक माधुर्य देखैत बनैत छल । गोरनार,भुट्ट ,मुदा कसगर देह बहुत आकर्षक लगैत छलैक ।

"अहाँक घर कतए भेल?।

"जनकपुर।"

"ओ तखन तँ हमरासभक लगीचे अछि ।"

गप्प-सप्पमे भोजनक समय आनन्दसँ बीति गेल । सभगोटे अपन-अपन कोठरीमे वापस अएलहुँ । भोजन कए जे सुतलहुँ से एकहि निन्ने भोर भए गेल । बटुक आ बहादुर काजपर जेबाक हेतु तैयार भए गेल छलाह । हमरा आगू चाह रखैत कहलथि -

" जेबाक समय भए रहल अछि । तैयार भए जाउ तँ संगे निकलि जाएब ।

"ठीक छैक ।"

-19-

एहि तरहेँ हमर काज चलए लागल । हमरा आटो,कार ठीक करबाक कोनो लूरि नहि छल । तँ शुरुमे हल्लुके काज सभ करी । बहादुर आ बटुक अपन-अपन काजमे माहिर छल । बहादुर टेम्पु आ बटुक कार मरम्मतिक काज करैत छल । हम छोट-मोट काज जेना पेंचर साटब,चक्कामे हवा भरब करए लगलहुँ । संगहि नव-नव काज सभ सिखबाक प्रयास करए लगलहुँ । बटुककेँ बेसी ज्ञान रहैक ,मुदा ओकरा समये नहि रहैक । भोर सँ साँझ धरि भूत जकाँ खटैत रहैत छल । बहादुर ओतेक लुरिगर नहि छल । ओकरा लग काजो कम रहैत छलैक । खाली समयमे ओ यथासाध्य हमरा अपन काजसभ सिखबैत रहैत छल । कखनो काल बटुको किछु-किछु मदति कए दैत छल । हमहु दिन-राति एक केने रही । जतेक संभव रहैक,काज करी । एहिबातसँ मालिक बहुत खुस रहथि । एकदिन असगरमे बजा कए कहैत छथि -

" हमरा लगैत अछि अहाँ सभकेँ पछाड़ि देबैक ।"

" से की?"

"अहाँक हाथ बहुत माजल अछि ।"

मालिक द्वारा एहि तरहेँ उत्साहित केलासँ हम आओर जोर-सोरसँ काज करए लगलहुँ । मास दिनक भीतरे हमर जनसँ मिस्त्रीक काज करए लगलहुँ आ दरमाहा ,सुनबै तँ गुम्म पड़ि

जाएब । पहिलुका महिनामे चारि हजार दरमाहा भेटल छल । एकहि मासक बाद जखन लिफाफा खोललहुँ तँ ओहिमे सँ निकलैत अछि कतेक? अनुमान करू? चलू हमही कहि दैत छी- "सोझे बीस हजार" । नोट गनैत-गनैत पसीना आबि रहल छल । लिफाफा देबए काल मदनबाबू बजा कए कानमे कहने रहथि-" ककरो कहबै नहि । अहाँक दरमाहा अहींकें बूझल हेबाक चाही ।"

"ठीक छैक । हम प्रसन्नतासँ मदनबाबूकें गोर लगलहुँ आ डेरा बिदा भए गेलहुँ । संयोगसँ ओहिदिन हम असगरे रही । बटुक आ बहादुर दारू कीनबाक हेतु पहिने निकलि गेल रहए ।

सभ सँ पहिने हम पुरना मकान मालिकक ओहिठाम गेलहुँ । ओतए कुसुम गेटेपर ठाढ़ि भेटि गेलीह । हुनकर बाँकी भाड़ा चुकता करबाक हेतु लिफाफा हाथमे देलिअनि ।

" ई की अछि?"

"अहाँक बकिऔता भाड़ा ।"

"हद भए गेल । एकर अखन कोन जल्दी छैक? बादमे देखल जेतैक । अहाँ पहिने अपन व्यवस्था तँ ठीक कए लिअ ।"

कतबो कहलिऐक ओ लिफाफा नहि लेलथि । हमरा घिचने अपन कोठरीमे लेने गेलीह। देखिते-देखिते ओ हमरा भरिपाँज गछारि लेलथि । डरसँ हमर छाती धर-धर कए रहल छल। होअए कहीं डाक्टर ने आबि जाथि । अनेरेकें हंगामा भए जाएत । हमर चिंताकें पढ़ैत ओ कहलीह –“ओ बाहर गेल छथि । काल्हि साँझ धरि वापस अएताह ।”

कुसुम कोनो हालतिमे हमरा जाए नहि देथि आ हम कोनो हालतिमे ओतए रहए नहि चाही।

"यदि डाक्टर आबि गेलाह तखन की होएत? "-एही चिंतामे हमर ओ समय कटि रहल छल । ओमहर बटुक आओर बहादुर भरिपेट दारू पीबि डेरामे हंगामा केने छल । बहादुरक घरबाली तँ अभ्यस्त छलैक ,मुदा बटुकक घरनी कैं ई एकदम बरदास्त नहि रहैक । ओ हमरा फोन करैत छथि –

" कतए रहि गेलिऐक? ई सभ तँ हंगामा कए देने अछि ? जल्दी आउ ।"

फोनक स्पीकर आन रहैक । कुसुम पुछैत छथि-"की भेलैक?"

हमर नवका पड़ोसीसभ पीबि कए हंगामा केने छैक ।"

"तखन तँ अहाँ नहिए जाउ।"

हमरा हँसी लागि गेल ।

कुसुमक बिआहक कैक साल भए गेल रहैक ,मुदा धीआ-पूता नहि रहैक । डाक्टरकैं पीबासँ फुरसतिए नहि रहैक जे घर दिस सोचैत । मुदा सक्की छलैक एक नंबरक । केओ जँ कुसुमसँ गप्प करैत देखा जइतैक तँ आफत कए दैत छल । तकरबाद दुनूगोटेमे झंझटि शुरु होइत । कुसुमकैं कैकबेर दूपहर रातिमे कनैत सुनिऐक । पीबि कए कैकबेर ओ हाथो उठा दैत छलैक । मुदा असली बात की रहैक से के आ किएक पुछितैक ? कहाँदनि डाक्टरेमे गड़बड़ी छलैक । कैकबेर जाँच-पड़ताल भेलैक । मुदा ढ़ाकक तीन पात । आइ जखन कुसुम हमरा साफे कहि देलथि तँ हमरा नहि रहल गेल ।

"तँ एकरा छोड़ि किएक नहि दैत छी?"

"एतेक आसान छैक । एखन अहाँकैं बहुत किछु बुझबाक अछि । "

"लएह इहो सएह कहि रहल छथि । आब तँ मोन होबए लागल जे एहि महानगरी नामक बिमारीकेँ ठीके कए दी । मुदा कथी-कथी आ ककर-ककरा ठीक करैत फिरब।

ओहिठामसँ निकलैत -निकलैत बहुत राति भए गेल । सड़कपर कुकुरसभ भुकि रहल छल । कतहु केओ नहि देखा रहल छल । आब तँ बड़ी चिंतामे पड़ि गेलहुँ । ताबते एकटा एकदम खाली बस आएल । हाथ देखेलिऐक तँ ठाढ़ कए देलकैक । बसमे चढ़ि कए जान-मे-जान आएल ।

बस संचालक पीने बुत छल । कहिऐ आम बुझैक इमली। आब की होएत? जेबीमे टाका रहए । डर होबए लागल जे कहीं किछु भए ने जाए । मोने-मोन हनुमान चलीसा पढ़ए लगलहुँ। संयोग नीक रहल जे अपन बस स्टाप आबि गेल । बससँ उतरि कए लागल जेना फेरसँ जीबि गेलहुँ ।

डेरा पहुँचलहुँ तँ देखैत छी जे ओकर गेट बाहरेसँ बंद अछि । आब तँ बेस मोसकिलमे पड़लहुँ । एतेक रातिमे कतए जइतहुँ । कतहु केओ नहि देखाइत छल । ओकरासभकेँ बूझल रहैक जे हम बाहर गेल छी तथापि ताला बंद कए ई सभ कतए चल गेल? ताबते मे चौकीदार सीटी मारैत आएल ।

" बटुक आ बहादुर केँ देखलहक अछि की?"

"ओ सभ तँ कनिके काल पहिने अस्पताल गेलाह अछि ।"

"ककरा की भेलैक?"

"बहादुर आ बटुकमे कोनो बात लए कए झंझटि भए गेलैक । बहादुरक घरबाली थोर-थाम्ह लगबए गेलैक कि ओकर पैर पिछड़ि गेलैक । ओकरा पाछु बहादुर सेहो खसल। दुनूगोटेक

टांग टुटि गेलैक अछि । बटुक ओकरासभकेँ लए कए अस्पताल गेल अछि ।"

"बटुकक घरबाली सेहो गेलैक अछि कि घरे मे छैक?"

"से नहि कहि सकैत छी । मुदा ताला तँ बाहरसँ बंद अछि ।"

कहुना कए चौकीदारकेँ मनेलहुँ आ ओकरे संगे साइकलसँ अस्पताल पहुँचलहुँ । ओहि समय रातुक एक बाजि रहल छल । अस्पतालक गेटेपर बटुक भेटल । ओकर मुँहसँ दुर्गंध आबि रहल छल । बात लटपटाइत छल । कहि नहि एहन हालति मे एहिठाम धरि कोन आबि सकल?

हमरा देखिते कहए लागल-"हमर किछु दोख नहि । बहादुरेसभटा गड़बड़ केलक अछि। हमरा ओकरा आगूमे ठाढ़ होएब मोसकिल लागि रहल छल । कहुना कए आगू बढ़लहुँ ,मुदा ओ पछोड़ धेने रहल । ताबे पुलिस आबि गेल छल । डाक्टरसभ मामिला पुलिसकेँ सूचित कए देने रहैक । पुलिस ओकरा पकड़ि लेलक आ थाना लेने चलि गेल । अस्पतालमे बहादुर आ ओकर घरबाली भर्ती छल ,मुदा ओकरसभक हालतिक सही जानकारी नहि भेटि रहल छल । अस्पतालक स्वागत कक्षमे गेलापर पता लागल जे एकटा नेपाली महिलाक किछुए कालपूर्व मृत्यु भए गेलैक अछि। ओकर घरबलाक नाम बहादुर छैक आ ओकरो हालति बहुत खराब छैक । हमरा तँ जेना लकबा मारि देलक । मोने-मोन सोचलहुँ जे हमर भागे खराब अछि । जतहि जाइत छी ओतहि किछु-ने-किछु उकबा उठि जाइत अछि ।

ओतेक रातिमे जेबे कतए करितहुँ। फेर जखन अस्पताल आएल रही तँ बिना भेंट केने वापस चलि जाइ सेहो उचित नहि

बुझाएल,ओहो जखन कि ओकरा संगे केओ नहि रहैक। आपत्तिकालीन वार्डमे आगू बढ़लहुँ तँ देखैत छी जे बहादुरकेँ आक्सीजन लागल अछि । डाक्टरसँ हालचाल पुछलिऐक तँ कहलक-"अजुका राति जँ खेपि गेलाह तँ बुझु बचि गेलाह। अखन किछु नहि कहल जा सकैत अछि ।"

राति भरि जगले रहि गेलहुँ । बहादुरक हालति बेहतर रहैक। मुदा ओकरा अखन अस्पतालमे किछु दिन आओर रहए पड़ि सकैत अछि । डाक्टरसभक अनुसार ओकर जांघक हड्डी टुटि गेल अछि । तकर शल्य चिकित्सा करबाक हेतैक । ओकरा ठीक होबएमे मासोदिन लागि सकैत अछि । आब समस्या छल जे ओकर घरनीक लहास के लए जाएत ? ओकर अंतिम संस्कार केना होएत ? अखन धरि बहादुरकेँ ई बात नहि बताओल गेल रहैक । जखन ओकरासे पता लगतैक तँ ओकर की हाल रहत? ई सभ बहुत रास समस्या छल।

बटुक आ बहादुरमे जबरदस्त तालमेल छलैक, घरोमे आ बाहरो । तइओ एना किएक भेलैक? असलमे ओकर सभक कोठरी नामेक लेल फराक छल। ओहिठाम आठ-दसटा कोठरी सभ एक-दोसरसँ सटल छल । सभमे तरह-तरहक किराएदारसँ भरल छल । एकहिटा शौचालय,एकहिटा स्नानगृह । कोनो निजताक गुंजाइस नहि छलैक । पेट भरबाक जोगारमे अस्तव्यस्त लोकसभ आओर किछु देखबाक-सुनबाक स्थितिमे नहि छल । असलमे बटुककेँ नजरि बहादुरक घरबाली पर रहैत छलैक जाहि कारणसँ ओ बहुत बातसभपर कान पथने रहैत छल । बहादुर ई बात बुझैक । बटुक सेहो पाछू नहि छल । बहादुरक घरबालीसँ ओकरा बेस जमैत

छलैक । मुदा ओहिदिन पीबि कए ओकर मोनक कुंठा जाग्रत भए गेल रहैक ।

हम अस्पतालक हातामे इएहसभ सोचैत घुमैत रही कि विजय देखेलेथि। ओ एही मामिलाक तहकीकात करए आएल रहथि ।

"की औ! एतेक रातिमे एतए कोना छी? सभ किछु ठीक अछि ने ?"

"ठीक की रहत?"

"की भेल?"

ओकरा कहनाइ शुरुए केने रही कि बहादुरक नाम अबिते ओएह बात लोकि लेलथि।

"अहाँ एहि चक्करमे कोना पड़ि गेलहुँ ।"

"हमर पड़ोसीसभ छथि। आइ-काल्हि हम ओतहि रहैत छी ।"

"चुपचाप खसकि जाउ, नहि तँ थाना-पुलिस करैत-करैत एँड़ी खिआ जाएत । अपन काजसँ मतलब राखू ।"

फेर ओएह बात । महानगरी छैक तकर माने की? की एतए मनुक्ख नहि ,दानव रहैत अछि? ई एहिठामक समाज एतेक विचारहीन होइत अछि जे खसल व्यक्तिकेँ मरैत छोड़ि आगू बढ़ि जाइछ।"

"एहिना कबाइत पढ़ैत रहि जाएब । अहाँ नहि सुधरब । जानी अहाँ आ अहाँक काज। हम तँ कहबे ने करब । अहाँक भाग्य तँ नहि बदलि देब ।"- विजय बाजल ।

" हमरा किछु नहि बुझा रहल अछि ।"

"जखन अपन माथा नहि काज करए तँ कम सँ कम दोसरोक सुनल करी ।"

" की करू से अहीं कहू । "

विजय इसारा केलक जे हम ओकर जीपक पछिलका सीटपर बैसि जाइ । हम सएह करैत छी । विजय रस्ते-रस्ते कहैत गेल-" मुफ्तमे हत्याक केसमे फँसा देल जाएब । जिनगी भरि काहि कटैत रहि जाएब । अपन लोक छी तेँ कहि रहल छी,नहि तँ हमरा की ? आगू अहाँक मरजी ।"

कनी कालमे जीप विजयक आङनमे ठाढ़ छल । जीप देखितहि किसुन आ मालती संगे विजयक घरसँ बाहर भेल । ओकरासभकेँ संगे देखि हम छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ । विजय ई बात तारि गेल ।

" किसुन आ हमर सासुर एकहि गाममे अछि । ताहि हिसाबे ओ हमर साढ़ूए छथि ।"

"सएह कहू ,ई बात हमरा पहिने किएक नहि कहलहुँ?"

“बुझिए कए की करितहुँ? ई महानगर छैक । एहिठाम बहुत किछु सोचि कए चलए पड़ैत छैक । अहाँकेँ हमर बात कठाइन लगैत होएत ,मुदा समय अएलापर अपने सभबात बुझा जाएत । कतेक मोसकिलसँ सीआइडीक खातासँ अहाँक नाम हटओने रही । आब फेर यदि फसलहुँ तँ के बचाओत?"- विजय बाजल ।

महानगर नहि भए गेल ,एकटा तमासा भए गेल । जकरे देखु सएह पाकल पड़ोर बनल घुमि रहल अछि। विजयक बात सुनि हम तुरंते झोड़ा उठा बिदा भए गेलहुँ । विजय,मालती आओर किसुनक बीचमे बेस तालमेल बुझाएल । कहि नहि से कोना

भेलैक? टाकामे बहुत ताकति होइत अछि । संभवतः एहिसभक रहस्य ओएह छल ।

-20-

बहादुरकेँ अस्पताल आ बटुककेँ पुलिस हाजतिमे बंद रहबाक कारण हम असगरे दोकानक सभटा काज करए लगलहुँ। कोनो उपायो नहि रहैक । एतेक जल्दी जानकार मिस्त्री भेटब संभव नहि रहैक । हम दिन-राति एक कए काज करए लगलहुँ । तकर फएदा भेल जे हमरा काजक बहुत नीक जानकारी भए गेल। हम एहि हालतिमे भए गेल रही जे जँ ई काज छुटिओ जाएत तँ अपनो काज ठाढ़ कए सकैत छलहुँ । ओना काज छुटितए किएक? मदान बाबू हमर ततेक प्रशंसा करथि जकर अंत नहि । ततबे नहि,एहि मासक दरमाहा जखन भेटलैक तँ लिफाफा खोलि कए आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ । जहिना हम मेहनति केने रही तहिना हमरा इनामो भेटल । हम तँ सपनोमे नहि सोचने रही जे हमर दरमाहा एतेक भए जाएत । एतेक टाकाकेँ खर्च कोना करब? की सभ कीनब ,ककरा-ककरा देबैक सएह सभ सोचैत -सोचैत कहि नहि करवन सुता गेल ।

भोरे जखन काजपर पहुँचलहुँ तँ मदनबाबू हमरा पुछैत छथि-" प्रसन्न छी ने?"

"सभ अहाँक आशीर्वाद छैक ।"

"आइ भए सकैत अछि जे बटुक सेहो आबि जाए । ओकरा जमानति भए गेलैक अछि। अहाँक भार कम भए जाएत।"

हमरा चिंता होबए लागल जे बटुककेँ आबि गेलाक बाद कहीं हमर दरमाहा ने कम भए जाए । से बात ओ बुझलाह । अपने कहैत छथि-

" अहाँ चिंतित बुझाइत छी । अहाँक काज ततेक नीक होइत अछि जे दरमाहा बढ़बे करत, घटक तँ सबाले नहि अछि ।"

एहिबातसँ हम आश्वस्त भए जोर-सोरसँ काजमे लागि गेलहुँ ।

दूपहर बाद बटुक आएल । ताबे मदनबाबू कतहु चलि गेल रहथि । ओ हमरा देखितहि कानए लागल ।

"किएक परेसान छी । जीवनमे उठापटक होइत रहैत छैक । जे भेलैक, से भेलैक । बिसरि जाउ ।"

" भाइ! एतेक आसान नहि छैक सभ किछु बिसरि जाएब। बहादुर हमर सभ किछु चौपट कए देलक । अपने तँ नष्ट भेबे कएल हमरो बरबाद कए देलक ।"

"आब तँ सभ किछु सलटि गेल ने?"

"की सलटत कपार । जे किछु पाइ छल सभ लुटा गेल । ऊपरसँ कर्जो भए गेल । तखन तँ जमानति भेल अछि । केस चलिए रहल अछि । घरबाली से गाम चलि गेलि। अएबाक नामे नहि लए रहल छथि ।"

"अहाँ एहि चक्करमे कोना पड़ि गेलहुँ?"

"की कहू? ई बहादुर जे ने करए । एकरा ओहिदिन केओ नहि भेटलैक तँ हमरा फुसला लेलक। हमरा एहिसभक कोनो अनुभव नहि रहए । पीबए लगलिऐक तँ बेसी पिआ गेल । तकरबाद तँ की भेलैक,की नहि अपनो मोन नहि अछि । मास दिनसँ जहलमे सड़ि रहल छलहुँ। कहुना कए आइ बहार भेलहुँ ।

ओहो धन कही मदनबाबूकेँ जे मदति लेल ठाढ़ भेलाह । नहि तँ पता नहि कतेक दिन आओर जहलमे सड़ैत रहितहुँ ।"

"दुखक बात तँ भैए गेलैक । मुदा आब ओकरा धेने बैसल तँ नहि रहल जा सकैत अछि ।"

" से तँ सत्ते । मुदा करिऔ की? घरबाली बात नहि बुझलक । कैकबेर फोन केलिऐक जे ई तमसेबाक उचित समय नहि अछि ,मुदा ओकरापर कोनो प्रभाव नहि भए रहल अछि । लगैत अछि जे गाम जाए पड़त ।"

" बेसी चिंता नहि करू । समयसँ सभ अपने ठीक भए जेतैक। भगवानपर विश्वास बनओने रहू ।"

"बात तँ ठीके कहि रहल छी। ओएह पार लगओताह ।" एतेक बजैत-बजैत ओकर आँखि नोरसँ डबडबा गेलैक । ओ ठाढ़ नहि रहि सकल । ठामहि सामने राखल बेंचपर बैसि गेल ।

कहि नहि कखन मदनबाबू आबि गेल रहथि ,मुदा बटुकक संगे गप्पमे लागल रहि गेल रही । हुनका नहि देखि सकलिअनि। ओ कार्यालयमे कागज-पत्तर सभ देखि रहल छलाह । बटुककेँ कनैत देखि बाहर भेलाह।

" तूँ एतेक परेसान नहि रहह । सभसँ पहिने गाम जाह । घरबालीकेँ लए आनह । एहिठामक झंझटि सलटएमे किछु समय तँ लगबे करतैक । बहादुर अस्पतालसँ छुटएबला अछि। हम ओकरा बुझेबाक प्रयास करब।"

"बात बहादुरे धरि रहितैक तखन ने । पुलिस केस भए गेल छैक आ सेहो हत्याक दफा ३०२ लागल छैक।"

"खाली चिंता केलासँ की हेतह? परिस्थितिसँ सामंजस्य करह । सभ ठीक भए जेतैक।"

मदनबाबूकेँ बूझल रहनि जे बटुक नीक लोक अछि । संयोगवश फसादमे पड़ि गेल । आब जखन बात बढ़ि गेल अछि तँ ओकरा सलटएमे समय तँ लगबे करत ।

मदनबाबू जेबीसँ किछु टाका निकालि बटुककेँ देलखिन, टिकटक जोगार सेहो कए देने रहथिन । कहलखिन -

" गामसँ घुरि-फिरि आबह । "

"ठीक छैक "- से कहि बटुक सोझे टीसन बिदा भए गेल।

कहल नहि जा सकैत अछि जे दिल्लीसँ मधुबनी धरिक यात्रा ओहो स्लीपर किलासमे ओ कोना केलक? दोसरदिन साँझमे जखन गाम पहुँचल तँ गौँवासभ ओकरा चिन्हि नहि सकलैक । गामक रस्ता जेना बिसरा गेलैक । बससँ उतरि कनीकाल ठामहि ठाढ़ रहल । ताबे बच्चाक संगी गोलू भेटि गेलैक । ओ धर दए चिन्हि गेलेक ।

"बटुक भाइ! बहुत दिनपर मोन पड़ल। नीके छी ने?"

" की नीक रहब । बड़का फसादमे पड़ि गेल छी ।"

"की बात?"

"चैनसँ कहबह । हमर घरनीक समाचार कहह? ।

से सुनितहि ओ मुँह टेढ़ कए लेलक आ बाजल-"की कहू?"।

"की बात छैक से साफ -साफ किएक नहि कहैत छह?"

" ओ तँ माधव संगे कतहु चलि गेलि । "

ई बात सुनितहि बटुकक माथपर जेना बज्र खसलैक । ओ चोट्टे घुमल । गोलू कतबो कहलकैक जे थाकल छह , सुस्ता लएह, मुदा ओ नहि रुकल । गामसँ कनीके हटि कए धार रहैक । भादवक महिना छलैक। धारमे पानि उमड़ि रहल छलैक । साँझक

समय छलैक । कतहु केओ नहि रहैक । बटुक आँखि मुनलक आ कूदि गेल । गोलू ओकरा पाछू-पाछू भागल छल । "रुकि जाउ,रुकि जाउ"- आबाज लगबैत रहल । जाबे ओ धार लग पहुँचल बटुक डुबि चुकल छल । पानिक प्रवाह ततेक तेज छलैक जे किछुए कालमे बटुक निपत्ता भए गेल ।

-21-

किछु दिनमे बहादुर अस्पतालसँ घुरि आएल । कतबो इलाज भेलैक ,मुदा ओकरा टांग सोझ नहि भेलैक। ओ नाङर भए गेल । लाठी पकड़ि कए कहुना कए ठाढ़ होइत छल । डाक्टरक कहब रहैक जे क्रमशः ठीक हेबाक चाही ,मुदा कोनो गारंटी नहि जे फेर ओहिना भए जेताह । एकटा मामुली घटना केहन भयावह भए गेल । ई सभ दारूक चलते भेल । तैं निसाँकैं एतेक खराब बूझल जाइत अछि । मुदा बहादुर कोनो पहिलबेर पीने रहए से बात नहि रहैक। ओहिदिन बटुक सेहो पहिलबेर ओकरा संग देलकैक । ताहि उत्साहमे बेसी चढ़ा देने रहैक। तकरबाद तँ जे भेलैक से बुझले अछि । जे भेलैक ,से भेलैक । मुदा ई नहि बुझएमे आएल जे बटुकक घरबाली एना किएक केलक? बादमे पता लागल जे बटुकक ध्यान रचना छोड़ि कए एमहर-ओमहर रहैत छलैक । एहिबातसभ रचना बहुत परेसान रहैत छलीह । अपना भरि ओकरा बुझेबाक बहुत प्रयास केलथि ,मुदा ओ किछु नहि सुनैक,उल्टे तरह-तरहक समस्या ठाढ़ कए दैक। रचना एहि मकड़जालसँ निकलबाक हेतु इएह मौका देखलनि । एक राति जखन हम घोर निन्नमे रही तँ बुझाएल जेना केओ केबारपर धक्का मारि रहल अछि।

हमरा डर भेल। केबार नहि खोलिऐक । केबारमे बनल फाटसँ देखलहुँ । बटुकक घरबाली सजल-धजल ठाढ़ि छलि। हम अंठा देलिऐक । विजयक बात मोन पड़ल । ई महानगर छैक, बँचि कए रहू । भोरे उठलहुँ तँ बटुकक घरमे ताला ठोकल रहैक।

पत्नीक असामयिक मृत्यु आ अस्पतालक प्रवाससँ बहादुर भीतरसँ टुटि गेल छल । ओकरा आब दिल्ली जेना काटि रहल छल । ओ तुरंत अपन देश वापस जाए चाहैत छल ,मुदा पुलिस ओझरओने रहैक । थाना / कचहरीक चक्कर लगाएब ओकरा वशमे नहि रहैक । फेर ककरा खिलाफ?ओ ई बात नीकसँ जनैत छल जे बटुक निर्दोष अछि । पुलिस अनेरे ओकरा पाछू पड़ल रहैक । ओ कोटमे साफे कहि देलकैक –“एहि मामिलामे बटुकक किछु दोख नहि छैक । हमही ओकरा दारु पिआ देने रहिऐक । हमर घरनीक मृत्यु मात्र एकटा दुर्घटना छल आ हमर निवेदन अछि जे एहि मामिलाकेँ बंद कएल जाए । एहिमे कोनो जान नहि अछि।” ओकर बात सुनि जज बहुत खुस भेल। तुरंत केसकेँ बंद कए देलक आ ओकर प्रशंसो केलक । बहादुर न्यायलयसँ घुरि आएल । मदनबाबू सेहो संगे छलाह। मदनबाबू ई समाचार बटुककेँ देबए हेतु ओकरा फोन केलाह ,मुदा फोन नहि लागल । फोनसँ लगातार स्वीच आफ,स्वीच आफक आबाज अबैत रहल। मदनबाबूक कान ठाढ़ भेलनि। जरूर किछु गड़बड़ अछि। ओकरा लगमे गोलूक मोबाइल नंबर रहैक । संयोगसँ एकहिबेरमे गोलूक फोन लागि गेल।

“हम छी मदन ।"

"गोर लगैत छी काका ।"

" नीके रहह । बटुकक की हाल छैक? कैकबेर फोन लगाबक कोशिश केलिऐक ,मुदा नहि लागि रहल छैक ।"

बटुकक नाम लितहि ओ कानए लागल ।

"की भेलैक?

"ओ तँ धारमे डुबि कए मरि गेल ।"

मदनबाबू समाचार सुनि गुम्म पड़ि गेलाह । बटुक मदनबाबूक गौंवा छल । गाम गेल रहए तँ बटुकक पिता बहुत आग्रह केने रहथिन । घरक हालति बहुत गड़बड़ा गेल रहनि । तकर आइ कतेको साल भए गेल । बटुकक जिनगी नीकसँ कटि रहल छलैक। मुदा घटनाक्रम एहन घुमत से के जानैत छल? सभ इएह कहैक जे ओकर पत्नीकेँ एना नहि करक चाही । ओकरे चलते बटुक प्राण दए देलक । बटुकोकेँ एना नहि करक चाही । गाममे बूढ़ माए-बापकेँ आब के देखत ? मुदा जे हेबाक से भए चुकल छल । गाममे बटुकक माए-बाप कनैत-कनैत बेहाल छलाह ।

बहादुर अपन देश वापस जाएत । आब एतए काज नहि करत । मदनबाबू ओकरा रोकबो नहि केलथि । ओकर आंतरिक दुखक समाधान आब हुनका लगमे नहि छलनि । जाइत काल ओ बहादुरकेँ एकटा लिफाफा देलखिन आ कहलखिन जे एकरा जनकपुर पहुँचलाक बादे खोलिअह । दिल्लीसँ जनकपुर धरिक भाड़ा,कपड़ा-लत्ता फराकसँ देबे केलखिन । बहादुर जेबा काल कानए लागल । मदनबाबूकेँ सेहो नहि रहल गेलनि। “एहन सोझ, परिश्रमी आ इमान्दार लोक एहि महानगरमे कतए पाबी ?”- मदनबाबू बजलाह । ओ मदनबाबूकेँ प्रणाम केलक। ओहिमाटिकेँ दंडवत भए प्रणाम केलक जतए ओकर सालो जीविका चललैक आ जोरसँ चिकरल- "सीता महरानीक जय।" एहि भावुक क्षणमे

हमरो नहि रहि भेल। आँखि नोरसँ भरि गेल । बहुत काल धरि हम ओकरे दिस तकैत रहि गेलहुँ । दुनू हाथमे झोरा लदने बहादुर चलि गेल।

-22-

मिथिला आटो सेंटरक हम क्रमश: सर्वे-सर्वा भए गेल रही। मदनबाबूकेँ दिल्लीमे बहुत तरहक कारबार रहनि। सामाजिक क्षेत्रमे सेहो ओ सक्रिय छलाह । सभसँ बड़का बात रहैक जे ओ अपना लोककेँ आगू करबामे बहुत रुचि रखैत छलाह। क्रमश: हुनका हमरा ऊपर विश्वास बढ़ैत गेलनि । एकदिन एहिना काजपर आएले रही कि कहए लगलाह-"गोविंद! आइसँ अहाँ एहि कारबारक मालिक भेलहुँ ।”

"हम अहाँक दोकान कोना लए लेब । ई तँ वाजिब नहि बुझाइत अछि ।"

“जे वाजिब बुझाए आ जखन सुविधा होअए अहाँ हमरा दए देब ।"

“हमर हालति तँ अहाँकेँ बुझले अछि। हम एतेक टाका कहाँसँ देब? "

" कोनो जल्दी नहि छैक, जेना-जेना सुविधा होएत किस्त-किस्त एकर भुगतान कए देब।"

हम गुम्म पड़ि गेलहुँ । हम हुनकर एहि उदारतासँ आश्चर्यचकित रही । आखिर ओहो तँ एही महानगरमे रहैत छथि। मुदा एतेक नीक छथि । हम गरीब बेसक रही ,मुदा ककरो चीजक कोनो लालच नहि रहए । फेर मदनबाबू तँ हमरा बहुत मदति केने

रहथि । ओ सोचि कए आएल रहथि आ अपन बातपर अड़ि गेलाह। हम हुनकर बात मानबाक हेतु विवश भए गेलहुँ ।

ओहिदिनक बाद मदनबाबू ओतए घुरि कए नहि अएलाह। कहिओ काल फोनेपर हालचाल लए लेथि। कहिओ कोनो तकादा नहि केलाह । जहिआ जखन जतबा भेल हुनका टाका दैत छलिअनि । ओ तँ ताहू लेल मना करैत रहैत छलाह । कालन्तरमे हुनकर सभटा हिसाब साफ भए गेल । मिथिला आटो सेंटरक हम मालिक भए गेलहुँ । हमरा अंदरमे दसटा मिस्त्री काज करैत छल। सभ अपनेठामक छल । कारबार नित्य बढ़िते जा रहल छल । सौंसे दिल्लीमे काजक गुणवत्ताक हेतु हमर दोकान प्रसिद्ध भए गेल। हमर दोकानक प्रसिद्धि तँ तेहन बढ़ल जे जकर कार कतहु ठीक नहि होइत ओहो हमरा ओहिठाम संतुष्ट भए जाइत छल । ई कोनो चमत्कार नहि छल । कठोर परिश्रम आ आनुशासनक परिणाम छल जे ई दोकान एतेक आगू बढ़ि गेल ।

एकदिन एहिना दोकानपर बैसल चाह पीबैत रही कि कारसँ लता आ ओकर पिता नीरज उतरलाह।

" एकरे कहैत छैक चमत्कार । देखिते, देखिते अहाँ कमाल कए दलिऐक ।"-नीरज बजलाह ।

"सभ अहाँसभक आशीर्वादक फल छैक । हम तँ सपनोमे नहि सोचने रहिऐक जे एहनो भए सकैत छैक ।"

"मुदा हमरा लगैत छल जे अहाँ किछु करब ।"

अपन पिताक मुँहे हमर प्रशंसा सुनि लताकेँ बहुत नीक लगलनि । नीरज बात बढ़बैत कहलाह-"हम नौकरीसँ इस्तिफा दए देलहुँ ।”

“से किएक?"

“नौकरी बहुत केलहुँ। आब सोचलहुं जे आगूक जीवन लोककल्याणक काजमे बिताबी।"

" बहुत नीक बिचार अछि ।"

“डेरा कतए रखने छी?"- नीरज पुछलाह ।

हम किछु कहितहुँ ताहिसँ पहिने लता बातकेँ लोकि लेलथि ।

"कहिओ समय निकालि कए हमरा ओहिठाम आउ तँ चैनसँ गप्प करब । "

प्रायः हुनका ई नहि बूझल रहनि जे हम हुनके मकानमे किरायेदार छी । ई बात लता अपने धरि रखने रहि गेलीह ।

किसुन आ हुनक मामा दामोदर सेहो नीरजक संगे कारेमे बैसल रहथि। एतेक समयबाद हुनकासभकेँ देखलहुँ । हमरा देखितहि किसुन कारसँ उतरि गेल ।

"भाइ की हालचाल?"

"ठीके अछि । अपन कहू । बहुत दिनपर भेंटलहुँ ।"

"ठीके । आइ-काल्हि की भए रहल छै?"

“आइ-काल्हि नीरजजीक संगे जनकल्याणमे लागल छी।”

" ओ कतए भेटि गेलाह?"

"दुनिआ गोल छैक ने । करवनो चैनसँ बतिआएब ।"

किसुन अपन नवका मोबाइल फोनसँ हमरा फोनपर घंटी बजा देलक आ कहलक -"ई हमर नवका नंबर अछि ।”

आओर किछु गप्प होइत ताहिसँ पहिने कार खुजि गेल ।

नीरज दिल्लीमे उच्च अधिकारी छथि । शुरुएसँ दिल्लीमे रहलाह । एहीठाम पढ़ाइ-लिखाइ सेहो भेलनि । प्रतियोगिता परीक्षा पास कए एतहि नौकरी सेहो भए गेलनि । कालेजक समयसँ एकटा सहपाठीक संगे दोस्ती छलनि । ओ ओतहि डाक्टरी करैत छलीह । दुनूगोटे आपसी सहमतिसँ बिआह करए चाहलथि। प्रस्ताव पिता लग गेलनि । ओ एहि प्रस्तावसँ सहमत नहि रहथि । अपना भरि बहुत बुझेबाक प्रयास केलथि ,मुदा नीरज अड़ल रहथि । नीरज असगरे छलाह । दोसर भाए-वहिन केओ नहि । पिता बहुत आश लगा कए खेत बेचि-बेचि पढ़ओने रहथिन। सोचने रहथि नीक कुल-शील देखि कए बउआक बिआह करब । मुदा भेल उल्टे । बरदास्त नहि कए सकलाह । एहि दुखसँ बृंदावन चलि गेलाह । किछुए दिनक बाद हृदयाघातसँ हुनकर देहावसान भए गेलनि । पिताक आकस्मिक निधनसँ नीरजकेँ बहुत कष्ट भेलनि ।

दुनू व्यक्तिमे रहि-रहि कए एहि बात लए विवाद भए जानि।

"तोरे चलते हमर पिताक देहान्त भए गेल "-नीरज बेर-बेर बाजथि ।

आपसी कलह बढ़िते गेल । एही बीचमे हुनकासभकेँ एकटा कन्या भेलनि-लता । किछुदिन तँ ओ सभ लताक पालन-पोषण करैत रहलाह ,मुदा आंतरिक मतभेद रहि-रहि कए जोर मारैत रहल । अंततोगत्वा, ओ सभ आपसी सहमतिसँ फराक भए गेलाह । लता पिता संगे रहि गेलीह आ हुनकर पत्नी विदेश चलि

गेलीह । ककरा संगे गेलीह ,कतए गेलीह तकरा बारेमे केओ किछु,केओ किछु अनुमान लगबैत रहल । क्रमशः लोकसभ एहिबातकेँ बिसरि गेल । मुदा लता अपन माए बिना सदरिकाल व्याकुल रहैत छलीह । नीरज बहुत प्रयास करथि जे ओकरा कोनो कष्ट नहि होइक ,मुदा से कोना संभव छल? माएक स्थान केओ कोना लए सकैत छल?अस्तु,लता सदिखन अपनामे एकटा अभावक अनुभव करैत छलीह । हमरा ई गप्प-सप्प बहुत बादमे बुझाएल जखन कि लता हमरा डेरापर असगर पाबि कए बेर आबि जाइत छलीह ।

"अहाँ एना असगर आबि जाइत छी । केओ किछु कहैत नहि अछि की?"

" हमरा के अछि जे किछु कहत?"

" से किएक?"

"माए हमरासभकेँ छोड़ि कतहुँ विदेश चलि गेलीह । पिताजीकेँ अपनेसँ फुरसति नहि छनि । इसकूल-कालेजमे नाम लिखा देब आ खूब कए जेबीमे पाइ भरि देब कोनो समाधान नहि छैक । बच्चाकेँ तँ माए-बापक सामिप्य चाही, ओकर संस्कार चाही । से बात बुझनाहरि हमर माए नहि भेलीह । हुनको किछु मजबूरी रहल हेतनि ।"

से सभ कहैत -कहैत लताक आँखि नोरसँ भरि गेलनि । हमरा अपसोच होबए लागल जे बेकारे ई गप्प-सप्पकेँ सह देलहुँ।

ओहि राति कतबो बुझाबक प्रयास केलहुँ ओ अपन घर वापस नहि गेलीह । हम बहुत परेसान भए गेल रही । लताक पिताकेँ पता लगतनि तँ ओ की सोचताह? कहीं हमरेपर ने बिगड़ि जाथि? ई बात हम लताकेँ कहबो केलिअनि ।

"अहाँ बेकारे परेसान छी । हुनका होश छनि जे किछु कहताह । आइ कैक दिनसँ कोनो अता-पता नहि अछि । एतेकटा घरमे असगर रहैत-रहैत मोन उबि गेल तँ एतए आबि गेलहुँ ।"

आब की बजितहुँ?गुम्म पड़ि गेलहुँ ।

लताक मनोदशा देखि हम चिंतामे पड़ि गेलहुँ । गाम-घरमे गरीबी जरूर छैक ,मुदा नेनासभ एना अनाथ भेल नहि रहैत अछि। अछैते माए-बापकेँ ई सभ केहन सुन्न जिनगी जीबाक हेतु विवश अछि । गाममे हमसभ केना कबड्डी खेलाइ,गेनखेली करी,जितिआ पाबनिमे भोरहरबामे चुरा-दही खा कए भोरे धिआपूतासभकेँ संगोर कए खेलधूप करी,दसमीक शुरु होइते केना घरे-घर ढ़ोलिआ हकार दैत छल । समय केना बीतए पता नहि चलैत छल । मुदा ई महानगर थिक । ऐहिठाम ऊपर किछु,भीतर किछु । जँ सतर्क नहि छी तँ के कतए धक्का दए आगू बढ़ि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । जकर देह भरल छैक तकर मोनमे भम्म पड़ैत छैक । केओ सोचिओ सकैत छल जे नीरज सन संभ्रान्त व्यक्तिक घरक ई हालति छैक? जे ओकर एक मात्र संतान सिनेह बिना विक्षिप्त भेल बौआ रहल छैक?आओर ओ अपने तँ कहि नहि कोन हालमे अछि?

तकरबाद हम लताकेँ किछु नहि सकलिऐक । एकहि खाटपर चुक्कीमाली बैसल हमसभ भोर कए देने रही । भोर होइतहि लता अपन घर दिस चलि गेली आओर हम अपन काजपर।

-24-

सभक जिनगीमे किछु-ने-किछु परिवर्तन होइत रहैत छैक। नीरजोक जिनगिमे से होइत रहलैक । नित्यप्रतिक काजसँ ओ उबि गेलाह । मोन होबए लगलनि जे समाजक हेतु किछु करी। ओना मोनमे ई बात बहुत दिनसँ घुमड़ि रहल छलनि। मुदा सभ किछुक हेतु एकटा समय होइत छैक जखन किछु एहन घटित भए जाइत छैक जे मनुक्खक जीवनक दिशा अप्रत्यासित दिसा धए लैत अछि । ओकरा लोक कहैत अछि संयोग। एहने घटना भगवान बुद्धक जिनगीमे घटलनि जे ओ राजपाट छोड़ि सन्यासी भए गेलाह । लोक तँ नित्य ककरो दुखित देखैत अछि, मृत्यु कोनो नव घठना नहि छैक,होइते रहैत छैक ,बहुत लोकक ओमहर ध्यानो नहि जाइत छैक ,मुदा भगवान बुद्ध इएह सभ देखलथि आ हुनकर जीवनमे क्रान्ति आबि गेल । एहिना नीरजोकेँ कहि नहि की भेलनि,की देखलथि,की सोचलथि जे ओहिदिन कार्यालय जाइते इस्तिफा दए देलाह ।

"बहुत भए गेल ।"-ओ बजलाह । लोकसभ अपना तरहेँ बहुत बुझाबक प्रयास केलकनि, मुदा ओ अड़ि गेलाह आ अड़ले रहि गेलाह । अन्ततोगत्वा हुनकर इस्तिफा मंजूर भए गेल । लताकेँ तँ तखन पता लगलैक जखन सरकारी आवाससँ अपन मकानमे समानसभ पठेबाक हेतु ट्रक लागि गेल ।

"ई की भेलैक? -लता अपन पितासँ पुछलक ।

हमसभ आब अपन घरमे रहब ।"

लता आओर किछु नहि पुछलकैक । नीरज नौकरी छोड़ि देलाह से तँ बादमे अपन घर गेलाक बाद ओकरा पता चललैक,ओहो आनेसँ ।

नौकरी छोड़ि तँ देलाह ,मुदा आब की? घरमे बैसल मोन छटपट करैत रहैत छलनि । सामनेमे लता कतहु चलि जानि आ ओ तकैत रहैत छलाह । ई कोनो आइए नहि शुरु भेल रहैक,सालोसँ होइते रहैत छलैक ,मुदा हुनका ई बात आब अखरि रहल छलनि । मुदा आब ओ कोनो दुधपीबा नेना नहि छलि । टोकारा देबाक समय गुजरि गेल । कार्यालयसँ घर आ घरसँ कार्यालयक बीचमे जँ कतहु ओ जाइत छलाह तँ ओ छल हुनका लोकनिक दिल्लीक प्रतिष्ठित डिगनिटी क्लब जतए ओ अपन दैहिक आवश्यकतासभक पूर्तिक कृत्रिम जोगाड़ केने छलाह। जाहिठाम झाँपल-तोपल ओ सभ किछु कए लैत छलाह जे केलापर एकटा सामान्य आदमी अपराधीक श्रेणीमे चलि जाइत अछि आ तकर बादो ओ श्रीमान बनल घुमैत रहैत छलाह । ई कम आश्चर्यक गप्प नहि जे एतेक बएस बीत गेलाक बाद हुनकर भक्क टुटल आओर ओ प्रायश्चितस्वरुप नौकरी छोड़ि देलाह। कहि नहि की-की भेल? मुदा एतबा सुनबामे आएल जे ओही कल्बमे एकराति लता पीबि कए ककरोसंग नृत्य करैत हिनका देखा गेलनि। ओएह भए गेल चरमविंदु। इश्वरक इच्छा सएह रहल हेतनि जे ओ एहि दृश्यके स्वयं देखथि आ जीविते मृत हेबाक अनुभव करथि । लता एहनठाम कोनो पहिलबेर गेल छलि से बात नहि । ओकरा देखनाहर के छल जे तकर हिसाब करैत । नीरजक घमंडी आ स्वच्छाचारी स्वभावक आगूसभ बेकार छल।

आब चललाह समाज सेवा करए । ओहो ककरासभक संगे?

प्रात भेने जखन लता भेंट भेलनि तँ ओ की कहलकनि? सुनि सकैत छी तँ हुनके शब्दमे सुनि लिअए-

"तोरा एना कल्वमे जेबाक चाही?"

"हम कोनो आइ पहिल बेर ओतए गेल छलहुँ जे अहाँक माथामे तनाव भए रहल अछि”

“अहाँ होशमे छी की?"

“अहाँ कैं कहिओ होश रहल जे हमर बेटी कोना अछि, ओकर समय कोना बितैत छैक? मात्र टाका दए देलासँ अभिभावक काज पूर्ण भए जाइछ की?"

नीरज अबाक रहि गेलाह । तकरबादे सुनलिऐक जे ओ नौकरीसँ इस्तिफा दए देलथि।

नीरज पैघ अधिकारी छलाह । दिल्लीक समाजमे धाख छलनि । बहुतरास लोकसभ अबैत-जाइत रहैत छलनि । ओहीक्रममे प्रवासीसभक संपर्कमे छलाह । मुदा ई अंदाज नहि रहनि जे ईसभ हुनका नहि हुनकर कुर्सीसँ जुड़ल छलाह । आब जखन कुर्सी चलि गेलनि ,किछु करबाक व्योंत ताकि रहल छलाह तँ जकरे फोन करथि सएह किछु भगल कए लेथि । धन कही विजयकैं जकरा आँखिमे पानि रहैक । अखनो नीकसँ गप्प करनि। कखनो काल हालो-चाल पुछनि ।

दल्लीक कनस्टीच्युसन कल्बमे बैसार हेबाक रहैक । प्रवासीसभक भविष्य चमकेबाक हेतु आपसी संगठन करबाक चेष्टा। ओहिदिन कारसँ नीरज,किसुन, हुनकर मामा दामोदर ओतहि जा रहल छलाह । संयोगसँ हुनकर कारमे किछु खराबी

आबि गेलनि जे हमर दोकानपर रुकलथि आ हमरा हुनकासभसँ भेट भेल। हमरा ओहिठामसँ आगू बढ़लापर लता आ नीरजमे विवाद होबए लागल । बात ततेक बढ़ि गेल जे लता ठामहि उतरि गेलि । लताकेँ ओतहि छोड़ि नीरज कनस्टीच्युसन कल्बमे बैसार हेतु पहुँचलाह ।

विजय अपन जीपमे लोकसभकेँ भरि कए अनने छल । ओहिमे तँ किछु नैमित्तिक मजदूर छलाह जिनका टाकाक लालचमे आनल गेल रहए । किछु अपराधीसभ सेहो ओहि भीड़मे घुसिआ गेल छल । किछुगोटे उत्सुकतासँ सेहो आएल रहथि-" देखा चाही नीरज की चाहैत छथि ?"

विजयकक जीप हवा भरबाक हेतु हमर दोकान लग रुकल । हमरा हुनकासँ एहिठाम पहिनो भेंटघाँट होइत रहैत छल। हवा भरैत-भरैत संयोगवश ओकर चक्का भयानक आबाजक संगे फाटि गेलैक । आब की हएत ? बैसारक समय लगीच चल । हुनकर जीपक मरम्मतिमे समय लगैत । विजयक परेसानी देखि हम अपन कारसँ हुनका सभकेँ लए गेलहुँ । ओहिठाम पहुँचलाक बाद विजय कहए लगलाह -"जखन आबिए गेल छी तँ किछुकाल रहि जाउ ।"

हम हुनकर बात मानि कातमे बैसि गेलहुँ जाहिसँ जखन चाही घसकि जाएब । ओतए कैकटा पुरान परिचितसभ देखेलाह। हमर सीटक बामाकात बैसल महिलाकेँ बेर-बेर अपना दिस उचकैत देखि हमरो ध्यान ओमहर गेल । बेस बनल-ठनल ,गोर-नार आ रमनगर मुँह-कान छलनि । मोनमे होअए जे हिनका कतहुँ देखने छी । हम अखिआसितहि रही की ओएह उठि कए हमरे लग बैसि गेलीह । हुनका संगे एकटा बेस नमगर लोक छलाह ।

"हमरा चिन्हलहुँ?"

" नहि?"

"हम छी रचना । बटुकक संगे अहाँक पड़ोसी छलहुँ ।"

हम गुम्म पड़ि गेलहुँ । ओ एना भेटि जेतीह से हम नहि सोचि सकैत छलहुँ । हमर मोबाइल नम्बर पुछलथि । हम अपन कार्ड देलिअनि । ताबे बैसार शुरु भए गेल रहैक । बेसी गप्प-सप्प नहि भए सकल । नहि बुझि सकलिऐक जे हिनकर संगे ओ के छलाह ?

-25-

ओहिदिनका बैसारमे क्रमशः बहुतरास लोक आबि गेल। मंचपर नीरजक अतिरिक्त चारिगोटे आओर बैसल छलाह । सभ पाग पहिरने छलाह । दिल्लीमे प्रवासी लोकनिमे आपसी मेलजोलक अभाव आ तकर समाधान चर्चाक मूल विषय छल । गप्प-सप्प भइए रहल छल कि कोनपरसँ केओ हल्ला केलक ।

" मंचपर विराजमानलोकसभ एकहि जातिविशेषक किएक छथि? की आन जातिमे पढ़ल-लिखल लोक नहि छैक ?"

"बेसी कबिलपनी नहि करह । ई तोहर गाम नहि छह जे -जे चाहबह सएह हेतैक ।-दोसरदिससँ केओ बाजल ।

"लफंगासभकेँ पैसा दए कए भीड़ कए लेलहुं अछि आ मोन तर-ऊपर भेल अछि ।"-तेसर आदमी बाजल । बात बढ़िते गेल । लोक जातिक हिसाबे गोलबंद भए गेल । केओ किछु, केओ किछु बाजए लागल। बात बढ़िते गेल । के ककरा सम्हारैत? हालति काबूसँ बाहर भेल जा रहल छल । औ बाबू ! देखिते-देखिते ओ परिसर कुरुक्षेत्रमे बदलि गेल । मारि-पीट शुरु भए

गेल। कैकगोटेक कुरता फाटल। कैकगोटेक हाथ टुटि गेल । केओ लथपथ भेल भूलंठित छलाह। बात बढ़ैत देखि पुलिस ओहि परिसरकेँ घेरि लेलक । किछुगोटेकेँ थुड़बो केलक। बाहर मे यत्र-तत्र लोकसभक चप्पल -जूता ,चीज-वस्तु पसरल छल। आयोजकसभ इएह-ले ओएह-ले कहुना कए जान बचा कए घसकलाह । देखिते-देखिते हौलमे भम्म पड़ि रहल छल । रचनाकेँ ओहि आदमी संगे गेटपर ठाढ़ देखलिऐक । ओकरासभकेँ अपसिआँत देखि हम अपने कारमे बैसा कए ओतएसँ घसकलहुँ।

बैसारमे लफड़ा बढ़ैत देखि नीरज मंचसँ उतरि लोकसभकेँ बुझाबक प्रयास करए लगलाह। मुदा भेल उल्टे। हौलमे भगदर भए गेलाक बाद जकरा जेम्हरे रस्ता भेटलैक भागल। कैकगोटा हिनका ऊपर चढ़ैत आगू बढ़ैत गेल । धन कही विजयकेँ जे हिनकर जान बँचि गेलनि । ओ जानपर खेलि गेल। कहुना कए लगपासक लोककेँ धकिआ कए हुनका घिचलक । ताबेतँ नीरज लस्त पड़ि गेल छलाह । यदि कनीक काल एहिना पड़ल रहितथि तँ गेल घर छलाह । मुदा हाथक हड्डी तँ टुटिए गेलनि। पुलिस घायल व्यक्तिसभकेँ इलाज हेतु सरकारी अस्पतालमे लए गेल ।

विजय अपना भरि बचाबक प्रयास केलक । मुदा के ककरा सुनैत ? किछुगोटे विजयकेँ घेरि कए अंट-बंट कहए लागल। कोनो कुन्नह रहल हेतैक। किछु कहासुनी भेल । ओहो किछु बजलाह कि दे- दनादन दे -दनादन तत मारि मारलकनि जे ओ ओहीठाम पड़ि गेलाह । चोट भितरिआ छल । बाहर नहि बुझाइक ,मुदा हुनकर हालति गड़बड़ाइते गेलनि । अस्पतालेमे हुनका छातीमे बड़ी जोरसँ दर्द उठल। जाबे केओ किछु

बुझैत,किछु करैत ताबे ओ धराम दए खसलाह आ ठामहि रहि गेलाह । लोकसभ ओहिठामसँ उठापुठा कए हुनका आपत्तिकालीन विभागमे लए गेल । डाक्टर नारी देखितहि कहि देलाह-" ई तँ आब नहि छथि"।

लोकसभ आश्चर्यचकित छल जे आखिर एना भेलैक किएक? । पुलिसकेँ सक रहैक जे किछु षड़यंत्र कएल गेल अछि। यदि से सही अछि तँ तकर सूत्रधार के छथि? एहि प्रश्नक उत्तर नहि भेटि रहल छल ।

ओहि बैसारसँ बाँचि कए निकलि गेलहुँ सएह बहुत । बहुत थाकि गेल रही, किछु आओर करबाक स्थितिमे नहि रही। रचनाकेँ ओहि आदमी संगे लगीचक बसस्टापपर छोड़ि हम ठोकले अपन डेरा आबि गेलहुँ । लगैत चल जेना ठाढ़े खसि पड़ब । खाटपर पड़ि गेलहुँ । करवन सुतलहुँ किछु नहि बुझलिऐक । भोरे सुतले रही कि फोनक घंटी बाजल । लताक फोन छल । ओकरा ई सभ किछु नहि बूझल रहैक । ओ तँ भोर भेने अखबारमे अपन पिताक हाथमे पलास्टर लागल फोटो देखलक । समाचार पत्रसँ ओकरा जानकारी भेलैक जे ओकर पिता सेहो अस्पतालेमे छथि । हुनकर हाथक हड्डी टुटि गेल छनि ।

“समाचार पत्र तँ पढ़नहि होएब ।"

"हम तँ ओतहि रही ।"

"ओ! कोना की भेलैक?"

"की कहू? हम तँ स्वयं आश्चर्यचकित रहि गेलहुँ । लफड़ा बढैत देखि हम तँ शुरुएमे चलि अएलहुँ । बादमे पता लागल जे झंझटि बहुत बढ़ि गेल । पुलिस वलप्रयोग सेहो केलक ,मुदा बात बढ़िते गेल । विजयक हृदयाघातसँ मृत्यु भए गेलैक । कैकगोटे

अखनहुँ अस्पतालेमे छथि। अहाँक पिता के सेहो चोट लागि गेलनि से नहि बूझल छल । "

" हम आबि रहल छी । अहाँ तैयार रहब । संगे अस्पताल चलब । "

" ठीक छैक, आउ ।"

हम चाह पीलहुं । स्नान करिते रही कि घंटी बाजल । बाहर निकलि कए देखैत छी तँ लता ठाढ़ि छलीह।

"आउ, आउ ।"

हम स्नान कए भीजले बाहर निकलि गेल रही से देखि ओ हँसए लगली। इसारासँ हुनका बैसए कहि हम स्नानगृहमे वापस गेलहुं । धरफरीमे स्नानगृहक फटक खुजले रहि गेल । हम स्नान करैत रही आ लता फटकक फाटसँ सटल हुलकैत रहथि । हमरा एकर अनुमान जाबे भेल ताबे तँ ओ अंदर रहथि । हम बाहर निकलए लगलहुं कि ओ हमर गट्टा जोरसँ पकड़ि लेलथि ।

हमरा तँ बकोर लागि गेल ।

किछुकालक बाद दुनू गोटे संगे अस्पताल पहुँचलहुं । हम लताक संगे आगू बढ़ैत छी तँ स्वागत कक्षमे नीरज भेटि गेलाह।

"हम तँ आबिए रहल छलहुँ । दहिना हाथमे प्लास्टर रहनि। पैरमे कच्चा पट्टी बान्हल छल । कहए लगलाह-" बँचि गेलहुँ । औ बाबू! एहन आफद होएत से नहि सोचि सकलहुं ।"

“विजयक की हाल छनि?"-नीरज पुछलाह ।

"ओ नहि रहलाह "-हम कहलिअनि । ई सुनितहि नीरज माथ पकड़ि लेलनि। हमसभ कनीकाल ठामहि रहि गेलहुँ । फेर सभ गोटे आगू बढलहुं। ओतए किसुन आ हुनक पत्नी मालती भेटि गेलीह । ओ सभ विजयक आकस्मिक निधनसँ बहुत आहत

छलाह । अस्पतालसँ लहास लए जेबाक हेतु परिवारक किछु आओर गोटेक अएबाक प्रतीक्षा कए रहल छलाह ।

नीरज बहुत काल धरि ठाढ़ रहबाक स्थितिमे नहि छलाह। तेँ हमसभ ओहिठामसँ बिदा भए गेलहुँ । एहि घटनाक मासदिन भए गेल । नीरज घरसँ बाहर नहि भेलाह । एकदिन निकलबो केलाह तँ बस अस्पताल धरि । प्लास्टर कटि गेलनि । तकरबाद मासदिन आओर लागत तखने हुनकर हाथ काजक होएत । एतेकटा घरमे बैसल-बैसल ओ कैकबेर बहुत दुखी भए जाथि । मुदा कोनो समाधान नहि बुझानि । लताकेँ बुझेबाक प्रयास करथि तँ उल्टे ओएह बुझबए लागनि ।

एकदिन लताकेँ प्रसन्न मुद्रामे देखि नीरज कहलखिन -"आगूक की कार्यक्रम अछि?"

"अहाँकेँ ताहिसँ की मतलब?"

एहन उत्तरक आशा हुनका नहि रहनि। तथापि ओ गप्प आगू बढ़बैत बजलाह-"बच्चाक हित-अहितक चिंता तँ होइते छैक?"

"मुदा अहाँकेँ ई सभ एतेक दिनक बाद किएक सोचा रहल अछि?"

"अहाँ एना किएक बजैत छी?"

"सही बात कहि रहल छी तँ खराब लागि रहल अछि ।"

"हम कोन परिस्थितिसँ गुजरलहुँ से अहाँ की जाने गेलिऐक?"

"इएह बात हमहु अहाँसँ कहए चाहैत छी ।" दुनूगोटेमे विवाद बढ़िते गेल ।

नीरज लताकेँ शांत करबाक प्रयास करैत बजलाह -" समय-साल ठीक नहि छैक.." ओ एतबे बाजल छलाह की लता लपकि लेलक- "पापा अहाँ एतेक चिंता जँ पहिने केने रहितहुँ तँ साइत किछु फएदा हेबो करैत । आब ई टंटमंट कए की होएत? अहूँ परेसान

होएब आ हम तँ होइते छी। का वर्षा जब कृषि सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने।”

नीरज लताक मुँह तकैत रहि जाइत छथि। मोने-मोने सोचथि-

“लता आब कोनो बच्चा नहि छथि । व्यर्थक विवादक परिणाम कहीं आओर खरापे नहि भए जाए?”

-26-

विजयक मृत्यक दोसरे दिन किसुन अपन पत्नीक संगे औने-पौने दाममे ओहिठामक चीज-वस्तुकेँ बेचि देलनि । घरमे ताला मारि कुंजी संगे लेने चलि गेलाह । लोकसभकेँ कहलखिन जे ओसभ श्राद्ध करए विजयक गाम जा रहल छथि । असलमे ओ सभ कतहुँ नहि गेलाह । मौकापाबि विजयक घरोकेँ बेचि देलथि। कहाँदनि ओहिघरक कागज मालती लगमे छलैक । आश्चर्यक बात ई जे विजयक केओ परिजन गामसँ नहि आएल । कहि नहि,हुनका लोकनिकेँ खबरिओ भेलनि कि नहि? दिल्लीक बात छलैक। लोक बेसी मतलब नहि रखैत अछि । बात अएल गेल भए गेल । एवम् प्रकारेण विजयक सभटा संपत्तिकेँ हथिआ कए किसुन निश्चिन्त भए गेलाह ।

एहिमे किसुनक मामा दामोदरक सेहो बेस योगदान छल। असलमे ओ डकैती करैत पकड़ल गेल छल । मामिला बहुत दिन चलैत रहल । कार्यालयक उपस्थिति बहीमे ओकर नाम ओहिदिन नहि छल । एहि आधारपर ओकरा न्यायलयमे अपराध सिद्ध भए

गेल । ओकरा तीनसालक जहल काटए पड़ल आ नौकरीसँ बर्खास्त कए देल ।

नौकरी छुटि जेबाक ओकरा मोनमे बहुत कष्ट रहैक । डकैती करब तँ ओकर अंशकालिक काज रहैक आ से ओ कोनो आइसँ कए रहल छल से बात नहि । ई एकटा संयोग रहैक जे एकबेर पकड़ा गेल । जखन पकड़ाइए गेल तँ मोकदमा तँ चलबेक रहैक,से चललैक ,मुदा गड़बड़ी तँ ओकरे कार्यालयक बाबू केलकैक जे न्यायलयमे सभ कागज पत्तर देखा ई साबित करबा देलक जे दामोदर ओहिदिन के कहए तीनदिनसँ कार्यालयसँ बिना अनुमतिकेँ अनुपस्थित छल । ओना ई तँ ओकर पुरान धंधा रहैक । बाबूसभकेँ खुआ-पिआ कए बादमे हाजिरी बना लैत छल । एहिबेर से सुतार नहि लगलैक आओर बातसभटा उल्टे होइत गेल । तेँ दामोदरकेँ कार्यालयक बाबूपर बहुत तामस रहैक । मौका पबितहि शुरु भए जाइत । ओकर इच्छा रहैक जे नौकरी गेल तँ गेल कम सँ कम पेनसन भेंटि जाए । तकर बिना आर्थिक कष्ट तँ होइते छलैक संगहि समाजमे अप्रतिष्ठा सेहो होइत छलैक । पेनसन बहालीक हेतु ओ कोनो कसरि नहि छोड़लक । कार्यालयबलासभ ओकर दर्खास्तक उत्तर दैत-दैत थाकि गेल । सभमे एकहि बात रहैत छलैक । एके रंग प्रश्न आ एके रंग उत्तर ।

नीरज ओहि कार्यालयक उच्च अधिकारी छलाह । हुनको एहि मामिलामे ओ भेंट कए मदति मंगने रहए । मुदा ओ एहन काजे नहि रहैक जाहिमे केओ किछु कइओ सकैत । से बात दामोदर ने बुझए चाहए ने बुझलक । मुदा नीरजसँ ओकरा मोनमे खुन्नस सभ दिनक हेतु रहि गेलैक । ओहिदिन बैसारमे जे हंगामा भेल ताहि मे दामोदर अगुआ छल । ई बात सीआइडीक रेपोर्टमे

सेहो आएल । मुदा केओ ध्यान नहि देलक । बातकेँ झाँपतोप कए देल गेल । सभक ध्यान विजयक मृत्युपर केन्द्रित भए गेल । स्वयं दामोदर अपन भागिन संगे विजयक संपत्ति हथिआबएमे लागि गेल । किछु हद धरि ताहिमे सफलो भेल । मुदा लूटपाटसँ संतोख होइतैक आ ताहिसँ धनिक हेबाक होइतैक तँ दामोदर कहिआ ने धन्नासेठ भए गेल रहितथि । जे धन जहिना अबैत अछि से तहिना चलो जाइत अछि । दामोदरक संपत्ति झूठमूठके देखाबामे,कुव्यसनमे चलि जाइत छलैक। परिणाम भेल जे आब ने ओकरा नौकरी छलैक आ ने संपत्ति । ऐहन हालतिमे विजयक संपत्ति हथिआ कए दुनू मामा-भगिना प्रसन्न रहए ।

कहबी छैक जे लालच सँ लालच बढ़ैत छैक । सएह दामोदर आ किसुनक संगे भेलैक। विजयक चीजवस्तु लेलाक बाद ओकर ध्यान नीरजपर गेलैक ।

नौकरीसँ इस्तिफा देलाक बाद नीरज “अपन समाज संस्था”क स्थापना केलाह । एकर उद्येश्य दिल्लीमे रहि रहल समस्त प्रवासी लोकनिक सुख-सुविधाक ध्यान राखब छल । आपसमे मेलजोल बढ़ाएब छल । अपन संस्कृतिकेँ समृद्ध करब छल । ताहीक्रममे ओहिदिन बैसार भेल छल ,मुदा ओ तँ से रूप धेलक जे तकरबाद किछु करबाक साहस नीरजमे नहि रहि गेलनि। विजयक मृत्युक संगे-संग कतेको निर्दोषलोकसभ आहत भेल। एहन समाजकेँ के जोड़त जे जाति,भाषा धर्म लए कए पहिनहिसँ खंड-खंड अछि । गाम-घरसँ एतेक फराक रहितहुँ एतए लोकसभ जातिक आधारपर गोलैसी करैत छथि । आपसमे अपन भाषा छोड़ि कए काहे-कुहे बजैत छथि जाहिसँ केओ ई नहि बुझए जे ओ असलमे कतएसँ आएल छथि । अपन पहिचान मिटाबक

हेतु कृतसंकल्प एहन विभ्रमित लोकक की कएल जा सकैत अछि? से बात नीरजकेँ कैकगोटे पहिनहि चेतओने रहनि ,मुदा ओ हुनकर बातसभपर ध्यान नहि देलाह । परिणाम सामने छल ।

नीरजक मनोदशाक फएदा उठबैत दामोदर आ ओकर भागिन किसुन हुनकासँ हेमछेम बढबए लगलाह । नीरजोकेँ नीक लागनि जे केओ तँ पुछि रहल अछि । एसगर घरमे पड़ल-पड़ल नीरज कैकबेर उबि कए अपनो हुनकासभकेँ गप्प-सप्प हेतु बजा लैत छलाह । संगे मालती सेहो आबि जाइत छलीह ।

" अपन समाज संस्थाक काजकेँ आगू बढ़ैबाक हेतु हमसभ कृतसंकल्प छी ।"-दामोदर बजलाह । किसुन सेहो समर्थन करैत बजलाह-"जखन नीरज बाबू सन लोक एहिमे पड़ल छथि तँ सफलता भेटबे करत ।"

"सत्ते कहलह । मुदा काज आगू कोना बढ़ाओल जाए?"-दामोदर बजलाह ।

"पहिने हिनका ठीक भए जाए दिऔन । तकरबाद हमसभ जान लगा देबैक ।"-किसुन बजलाह । ई सभ गप्प-सप्प भइए रहल छल कि नौकर-चाकरकेँ कात कए मालती अपने भनसा घरमे पैसि गेलीह । कनीके कालमे ओ भफाइत चाह लए अनलीह ।

"बैसू, बैसू । की लाजबाब चाह बनओलहुँ । कैक युगक बाद एहन चाह पीबि रहल छी ।" -नीरज बजलाह ।

नीरजकेँ मालतीक उपस्थितिएसँ जेना निसाँ लागि गेलनि। दामोदर पाकल आदमी छलाह। ओ अपन दबाइकेँ असरदार होइत देखि प्रसन्न छलाह ।

"एतेकटा घरमे अपने असगर कोना रहैत छी? "-दामोदर बजलाह।

"असगर तँ नहि छी, मुदा भए गेल छी ।"

"से की?"

नीरज किछु नहि बजलाह । साँझ भए रहल छलैक । दामोदार आब वापस जाए चाहैत छलाह।

“आब जेबाक आज्ञा देल जाए ।"-दामोदर बजलाह ।

"अहाँसभ अएलहुँ तँ मोन लागि गेल । अबैत-जाइत रहब। "-नीरज बजलाह ।

“अवश्य आएब"-से कहि दामोदर, किसुन ओ मालतीक संग ओहिठामसँ बिदा भेलाह।

-27-

नीरजक घरक कोना-कोना मालती देखि आएल रहथि । कतए कोन वस्तु राखल अछि तकर सटीक सूचना ओ दामोदर आ किसुनकेँ देलथि । दामोदर मोंछपर ताव दैत बजलाह-" भागिन,आब हमरासभकेँ विलंब नहि करक चाही ।"

"शुभस्य शिघ्रम्"-किसुन बजलाह । फेर दुनू मामा-भागिन किछु-किछु कनफुसकी केलथि । ओही राति नीरजक घरमे डाका पड़ल। नीरजक हाथ तँ टुटले रहैक । हालेमे प्लास्टर खुजल छैक। हाथ नीकसँ सोझो नहि होइक । ओही हाथमे फेर चोट पड़लैक । डकैतसभ सोझे ओकर शयनकक्षमे पैसल । ओकरा सुतलसँ उठओलक । नीरज औंघाएल छलाह। उठबामे किछु विलंब

भेलनि । डकैतबा तेहन कए हाथ मरोड़लक जे बाप! बाप! चिचिआ उठलाह । दोसर डकैत पेस्तौल तानि देलक ।

“हे भगवान! "- नीरजक मुँहसँ निकलि गेल ।

“खबरदार! जँ किछु बजबह तँ सोझे ऊपर जेबह । कुंजी निकालह"-दोसर डकैत बाजल ।

नीरज बाकस दिस इसारा केलथि । एकटा डकैत ओहिमे सँ कुंजीक झाबा निकाललक आ दोसर हुनका मुँहमे लत्ता ठुसि टेप साटि देलक । हाथ-पैर बान्हि कए ऊपरसँ सीरक राखि देलक। हल्ला-गुल्ला सुनि कए लताक निन्न टुटि गेलैक । ओ बाहर आबए चाहलीह। डकैतसभ हुनको ओएह हाल केलक । केबारक कुंडी बाहरसँ बंद कए देलक । ओ छटपटा कए रहि गेलीह । डकैतसभ गोट-गोट कए समानसभ ट्रकपर लादलक आ चंपत भए गेल । जाइत-जाइत नीरजकेँ नीकसँ पिटाइ कए देलक ।

भोर भेने काजबालीसभ घरक हालति देखि हल्ला केलक। बहुत रास लोक जमा भए गेल । ओहीमेसँ केओ पुलिसकेँ फोन कए देलक । लगीचेमे पुलिस चौकी छल । आश्चर्यक बात जे ओकरासभकेँ किछु पता नहि चललैक आ ट्रकपर लादि-लादि सभटा समान डकैत बिना कोनो रोकटोककेँ चल गेल। पुलिस घरमे पैसितहि गुम्म पड़ि गेल । सौंसे घर तहस-नहस भेल छल। लताक कोठरीक कुंडि खोललक तँ देखैत अछि जे ओकर हाथ-पैर बान्हल अछि,मुँहपर टेप साटल अछि । पुलिस ओकर हाथ-पैर खोललक। मुँहपरसँ टेप हटेलक । गिलासमे पानि देलकैक । लता ततेक हतप्रभ छलि जे हुनका किछु बजले नहि होनि।

पुलिस नीरज दिस बढ़ल । ओ बेसुध छलाह । मुँहपरसँ पट्टी खोललक । हाथ-पैर खोललक । देह हिलओलक तँ सौंसे

देह हीलि गेल । नीरजक सौंसे देह अकड़ि गेल छल । नीरजक प्राणान्त भए गेल छलनि। अपन पिताक हालति देखि लता भोखासी पाड़ि कए कानए लगलीह । संयोग छल जे घरक सीसीटीभी काज कए रहल छल । पुलिस फुटेजक छानबीन केलक। डकैतसभ नकाब पहिरने छल तैं चिन्हबामे दिक्कति भए रहल छलैक । मुदा एतबा पता लागि रहल छलैक जे ओ सभ तीनगोटे छल जाहिमे एकटा महिला सेहो छलि । सभसँ आश्चर्यक बात छल जे ओ सभ लताकेँ किछु बिगाड़ नहि केलक । ओकरा सभकेँ नीरजसँ कोनोबातक कुन्नह छलैक सेहो बुझा रहल छल । मुदा ओ सभ छल के?

कहबी छैक जे कतबो बुधिआरी करू ,किछु-ने-किछु गड़बड़ी भइए जाइत छैक । हरबरीमे एकटा डकैतक मोबाइल फोन ओतहि छुटि गेलैक। पुलिसकेँ ओहि मोबाइल आ सीसीटीभीसँ बहुत किछु जानकारी भेटलैक । जाँच-पड़तालसँ पता लागि गेल जे ओ फोन दामोदरक छल आ ओ एखन ट्रेनमे चढ़बाक फिराक मे अछि । पुलिस तुरंत ओकरा टीसनेपर घेरि लेलक । किसुन सेहो पकड़ल गेल । बहुतरास कीमती समानसभ सेहो ओकरासभसँ भेटल ।

एतेक जल्दी बदमाससभ पकड़मे आबि जाएत से साइत पुलिसो नहि सोचने छल । असलमे विजय दामोदरक मददतिगार रहैत छलैक जाहिसँ ओकरा पुलिस किछु कए नहि पबैक। आब तँ ओहो नहि अछि । पापक घैल करवनो-ने-करवनो भरबाक छलैक से भरि गेलैक। दामोदरक असली रूप प्रकट भए गेल ।

पिताक आकस्मिक निधनसँ लता निठ्ठाहे असगर भए गेलि । एतेक रास संपत्तिक हिसाब-किताब राखब आ तकर रक्षा करब ओकरा अबूह लगैत छलैक । समय-साल केहन अछि से देखिए रहल छी । पिताक देहाबसानक कैक दिनक बाद तँ ओ मतिसुन्न जकाँ एमहर-ओमहर बौआइत रहलि। कैकबेर हमरो ओहिठाम आएलि । मुदा हमहु किछु आश्वासन नहि दए सकलिऐक । हमरो तँ काज बढ़ि गेल छल । कालक्रमे हम अपन कारखाना स्थापित कए लेने रही जतए कारक छोट-मोट पार्टसभ बनैत छल । मरम्मतिक काज तँ चलिए रहल छल । गाम-घरसँ कैक गोटाक रोजगार हमरे ओहिठामसँ चलैत छलैक । गामघरक लोककेँ काजमे लगेबाक खिलाफ कैकगोटे कहलथि ,मुदा हमर मोन नहि मानलक । केओ कतहु खराब भए गेल तकर माने सभ खरापे भए जाएत से तँ ठीक बात नहि भेल । फेर हमरा अपन संघर्ष बिसराएल नहि छल । हम आँखि मुनि कए जतेक लोककेँ पार लागल काजपर राखि लेलिऐक । आगू भगवान मालिक ।

एमहर लताक हालति देखि कए कैकबेर चिंता होइत छल,डरो होइत छल । आखिर एतेकटा संपत्तिक ओ मालिक अछि । ई महानगर थिक । धनेक कारण ओकर पिताक अपने लोक हत्याक कारण बनि गेल । देखभालक अभाव आ लगातार होइत घाटाक कारण लताक कारखाना बंद भए गेल । मजदूरसभ कतेकोबेर हड़ताल केलक । सभक किछु-ने-किछु उचित/ अनुचित मांग रहैत छलैक । स्पष्ट बात तँ ई छल जे एतेल लफड़ा सम्हारब लताक बसक बाते नहि छल । कालेजसँ निकलल सभ

दिन स्वतंत्र जीवन जीबाक आभ्यस्त लताक हेतु ई एकटा विकट समस्या भए गेल छल । अस्तु,ओ कारखाना तँ बंद भेनहि छलैक,से भए गेलैक ।

करवनो-करवनो हम सोचिएक जे लता हमर के अछि,ओकर बात लए हम किएक परेसान रहैत छी? ई महानगरी छैक । ऐहिठाम सए तरहक लफड़ा होइते रहैत छैक । मोसकिलसँ तँ हम एहि महानगरमे ठाढ़ भेलहुँ अछि । आँखि-कान बंद कए अपन काजमे लागल रही । फेर दोसरे क्षण होइत जे हमसभ मनुक्ख छी,पाइ कमेबाक मसीन नहि छी जे सभ किछु बिसरि ओहीमे लागल रही । एहि अंतरद्वंदक प्रभाव हमर काजो पर पड़ि रहल छल । स्वास्थ्य सेहो गड़बड़ा रहल छल ,मुदा किछु समाधानो नहि फुरा रहल छल । हमरा कैकबेर होबए लागए जे एहिसभक हेतु हम स्वयं दोषी छी । आओर लोकसभ एहि सहरमे रहैत अछि। कहाँ केओ अनकर समस्याकेँ अपन माथपर लए घुमैत रहैत अछि ।

-29-

दुर्गापूजाक समय छल । चारूकात लोक पूजा-पाठमे लागल छल । दिल्लीओमे ठाम-ठाम अपन समाजक लोकसभ भगवतीक दसोदिन आराधना करैत छथि । नाच-गान एवम् अन्य प्रकारक सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत रहैत अछि । अष्टमीक साँझमे अपन कर्मचारीसभक संगे जनकपुरीमे भगवतीक दर्शन हेतु गेल रही । ओहिठाम कुसुम भेटि गेलीह । बहुत दिनपर हुनकासँ भेंट भेल । ताबे बहुत किछु भए गेल छल । अपन हाल-चाल कहए लगलीह ।

"डाक्टर साहेब नहि रहलाह ।"

ओ ई बात ततेक सहजतासँ बजलीह जे हम छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ ।

"की भेलनि?"

" की होइतनि । ओ तँ एकटा पैर सदिखन मृत्युदिस रखने रहैत छलाह । दिन-राति,जतए-ततए पीबएमे डुबल रहैत छलाह। ने अपन होश,ने परिवारक । कतबो किछु कहिअनि कोनो असर नहि होइत चलनि । एकदिन एहिना एकटा पहाड़ीसंगीक संगे ओकरे ओहिठाम पीबैत-पीबैत पड़ि गेलाह । प्रात भेने हुनकर लहासे आएल ।"

"ई तँ बड़ अनर्थ भेल ।"

आब ओ नीकसँ एसगर भए गेल रहथि । कुसुम चुप रहि गेलीह । एहन उदास कहिओ नहि देखने नहि रही । जीवन एहन पहाड़ भए जाएत साइत ओ कहिओ नहि सोचने हेतीह । पढ़ल-लिखल व्यक्तिक संग रहितहुँ ओ सभदिन असहाय रहैत छलीह । डाक्टर साहेब घर जँ अबितो छलाह तँ मात्र विपत्तिक सहोदर बनि कए । तेँ एक हिसाबे आब कुसुमकेँ चैन लगैत छलनि । पहिनहु किछु-किछु काज करथि ,मुदा आब व्यस्तता संगहि आर्थिक आवश्यकताक पूर्ति हेतु काज चाही। से जोगार होइत देरी नहि लागल ।

लताकेँ एकटा केओ चाहैत छल जे ओकरा राज-काजमे मदति करैक । कोना-ने-कोना ओ कुसुमक संपर्कमे अएलीह । हुनका ओ पसिन्दो भेलखिन आ काज करब गछिओ लेलखिन। हमरा तँ ई बात ओहीदिन भेंट भेलाक बादे पता लागल।

"कुसुम कोना छी?"

"एकटा नया काज पकड़लहुँ अछि"

"कतए?"

"नीरजक ओहिठाम।"

""अहाँ कोना जनैत छिअनि?"

"छोड़ ई बात।"

कुसुमसँ गप्प-सप्प भइए रहल छल कि लता सेहो ओतहि आबि गेलीह ।

"हिनका कोना चिन्हैत छिअनि?"

-लता बजलीह ।

हम किछु कहितिऐक ताहिसँ पहिने कुसुम बाजि ऊठलीह-

"हमसभ एकहिठाम रहैत छलहुँ।"

लता हमर मुँह बकर-बकर देखैत रहि गेलीह ।

हमसभ तीनूगोटे संगहि भगवतीक दर्शन केलहुँ । प्रसाद लेलहुँ । लगीचेमे गरम-गरम जिलेबी बनि रहल छल । मखानक खीर सेहो छल । अपना ओहिठामक सभ चीज-वस्तु उपलव्ध छल । तीनूगोटे भरिपेट खेलहुँ । खाइत-खाइत हँसी ठठ्ठा सेहो होइत रहल । लगबे नहि करए जे केओ आन अछि ।

समय कोना बीति गेल से नहि कहि । राति भए गेल छल। हमसभ अपन-अपन घर दिस बिदा होबएसँ पूर्व किछु-किछु सनेस कीनलहुँ । मखान,मिहिका चूरा,कुम्हरौरी अपनो कीनलहुँ आ किछु हुनको सभकेँ देलिअनि । तिलकोरक पात,तीलक अँचार आ धात्रीक अँचार सेहो कीनलहुँ ।

" ई की छैक?"-कुम्हरौरी दिस इसारा करैत लता बजलीह।

"खेबै तँ मुँहसँ छुटत नहि ।"

"मुदा छैक की?"

"कुम्हरसँ बनाओल जाइत छैक ।"

तैओ नहि बुझलखिन कारण कुम्हर देखने होथि तखन ने? हमरा नहि रहल गेल । भभा कए हँसा गेल । सभगोटे आनन्दपूर्वक ऐहिठामसँ बिदा भए गेलहुँ ।

-30-

जहिन-जहिना हमर सामर्थ्य बढ़ैत गेल तहिना-तहिना हमरा ओहिठाम लोकक ढ़बाहि लागैत रहल । आखिर कतेक गोटेकेँ हम अपना ओहिठाम रखितिऐक? जकरा अपना ओहिठाम काज नहि भए सकै तकरो कतहु-ने-कतहि जोगार करेबाक प्रयास करी । जाबे ओकरा काज नहि भेटैक,दरमाहा नहि भेटि जाइक,ताबे हमरा ओहिठाम रहबाक ओरिआन रहिते छल । हम अपन मकानक एक तल ओहीसभ हेतु छोड़ि देने रही । हमरा ओतए जे सभ काज करैत छलाह ओहिमे प्रमुख छलाह शंकर । ओ सभक मेट छलाह । हमरा हुनका रहलासँ ई सुविधा छल जे ओ आओर कार्यकर्तासभकेँ नीकसँ व्यवस्था कए लैत छलाह । एक हिसाबे ओ मालिके जकाँ रहैत छलाह ।

मुदा एकदिन हुनका चलते बेस मोसकिलमे पड़ि गेलहुँ । पुलिस हुनका तकैत-तकैत हमरा लग आबि गेल । ओ कतहु नहि भेटथि । असलमे ओ एकटा पड़ोसक कन्याकेँ लए चंपत भए गेल रहथि । कतए गेलाह,कोनो पता नहि । हमरो कहिओ एहिबारेमे किछु नहि कहलाह। आब की होएत? सभठाम हमरे घरक पता

देने रहथि । पुलिस हमरा उठा कए थाना लए गेल । आब की करी? ककरा कहिऐक जे जान बाँचत? किछु नहि फुराए ।

एहि घटनासँ हमरा आँखि खुजि गेल । आब बुझाए जे किएक कैकगोटे एहिसभ सँ बँचि कए रहए कहैत छल । मुदा हम ओकरा सभकेँ बुरिबक बुझिऐक । अपन लोकक काज नहि अएलहुँ तँ जीबिए कए की करब " -से मोने-मोन सोची । मुदा आब शंकर तँ तेहन झटका देलाह जे हाथ-पैर सुन्न लागि रहल अछि ।

पुलिस लाख हाथ-पैर मारलक, ने ओहि कन्याक, ने शंकरक कोनो पता भेटलैक । हमरा उपर पुलिस दिन-राति दबाब बनओने रहैत छल । कतबो कहिऐक कोनो सुनबाइ नहि । पुलिस हमरा हाजतिमे बंद कए देलक । जमानतो नहि भेटल । असलमे केस बहुत जगजिआर भए गेल रहैक। अखबार,रेडिओ,टेलीवीजन दिन-राति घोल केने रहैत छलैक । मुदा जखन हमर जहल जेबाक समाचार छपल तँ हमर कतेको मित्र,शुभचिंतक परेसान भए गेलाह । हमर कर्मचारीसभ सेहो हल्ला केलक । तकर परिणाम उल्टे भेलैक । पुलिस लाठीसँ कर्मचारी सभकेँ ओध-बाध कए देलक । सभटा भेल ,मुदा शंकर पकड़ल नहि जा सकल ।

कन्या नवालिग छलि । केना-ने-केना ओकरा संपर्कमे अएलैक आ तकर शंकर अनुचित फएदा उठओलक । कनिको ई नहि सोचेलैक जे हमरो ऊपर किछु असर होएत । जखन दिल्ली आएल रहए तँ किछु नहि रहैक । आधार कार्ड बनेबाक हेतु हम ओकरा अपन घरक पता देलिऐक । अपना ओहिठाम काज धरा देलिऐक । काज नीक करैक । बात-व्यवहारो नीक रहैक । क्रमशः

ओकरापर विश्वास बढ़ैत गेल । कर्मचारीसभक देखरेखक भार ओकरे दए देलीऐक । सत बुझी तँ ओ मालिके जकाँ काज करए । ओ एहनो भए सकैत अछि से नहि सोचि सकलहुँ । तकरे फल भोगि रहल छी । जे भेल से भेल आब एहिसँ उबड़ब कोना?

हमरा जहलमे जेबाक समाचार सुनि एकदिन मदनबाबू भेंट करए अएलाह । ओ कारबारक क्रममे विदेश चल गेल रहथि । ओहिठामसँ अएलाह तँ हमरा बारेमे जानकारी भेटलनि । जहलमे भेंट करए अएलाह । हुनका देखितहि कनाए लागल । ओ हमरा लेल मनुक्खक देहमे भगवानोसँ बेसी रहलाह अछि । हमर हालति देखि हुनका नहि रहल गेलनि ।

"अहाँक ई हाल केना भेल?"

" हमर किछु गलती नहि अछि । मुदा पुलिसकेँ असली गुनहगार नहि भेटलैक तँ हमरे पकड़ि लेलक किएक तँ ओकर पता हमर घरेक छैक ।"

"एहनो कतहु भेलैक अछि ।"

ओ मोबाइल फोनसँ पता नहि ककरा-ककरासँ गप्प केलाह । औ बाबू! धराधर एकसँ -एक पुलिसक अधिकारी ओतए पहुँचए लागल । ओ सभ हुनकासँ घटी मानि रहल छल । मदनबाबू अड़ि गेलखिन -

"पहिने हिनका जहलसँ बाहर करू तखने हम किछु सुनब। "

पुलिससभ थरथर काँपि रहल छल । घंटा भरिक अंदरे हमर जमानतिक कागज बनि गेल। हम जहलसँ छुटि मदनबाबूक संगे हुनके ओहिठाम बिदा भेलहुँ । जाबत हम जहलसँ छुटलहुँ नहि ताबे ओ कतहु नहि गेलाह । हुनकर एहि महानताकेँ की

कहबै? एहि दुनिआमे अधलाह लोक अछि तँ भगवान नीको लोकक कमी नहि रखने छथि। तेँ ई संसार चलिओ रहल अछि ।

मदनबाबूक प्रयाससँ हमरा जमानतो भेल आ किछु दिनक बाद केससँ नामो हटि गेल। मुदा हम तबाह तँ भइए गेलहुँ। सभटा काज लटकि गेल । मासदिन काज बैसि गेलासँ कैकटा कार्यकर्ता एमहर-ओमहर भए गेल । फेरसँ सभकिछुकेँ पटरीपर आनबामे कतेको दिन लागि गेल ।

मदनबाबूकेँ फेर विदेश जेबाक रहनि । जाइतकाल हमरा बजा कए अपना भरि बहुत किछु जोगार कए गेलाह ।

हवाइ अड्डा धरि बहुत सिनेहक गप्प-सप्प करैत रहलाह। कहलाह-

" नीक काज करैत रहू । काँटेमे गुलाब फुलाइत छैक । मानलहुँ जे किछुगोटे धोखा दए देलक आ आगूए दए सकैत अछि,मुदा तकर चलते अहाँ अपन सही रस्ता किएक बदलि लेब? नीक -नीके होइत छैक । शक्ति इजोतमे होइत छैक,अन्हारमे नहि। दीप जराउ,अन्हारक पाछु नहि जाउ । ई छोट-मोट मामिलासभ अपने शांत भए जेतैक । "

हमरा गुम्म देखि कहैत छथि-

" आब अहाँ बिआह कए लिअ।"

हुनकर बात सुनि हम लाजसँ मुड़ी नीचाँ कए लेलहुँ । जहाजक उड़बाक समय लगीच छल । हुनका प्रणाम केलहुँ ।

“नीकसँ रहब । पता नहि आब कहिआ भेंट होएत?” से बजैत मदनबाबू अंदर चलि गेलाह । हम अपन घर वापस बिदा भेलहुँ। रस्तामे ओ रहि-रहि कए मोन पड़ैत रहलाह । थाकि से गेल

रही । झलफल भए गेल छल । हवाइअड्डासँ लौटि कए तुरंत सुति रहलहुँ।

-31-

आखिर शंकर पकड़ल गेल । कन्या नवालिग छलैक तेँ न्यायलयमे ओकर पिताक बातक महत्व बेसी भेलैक । शंकरकेँ सातसालक सजा भेल। कन्याकेँ पिता ओकर ककरोसँ बिआह करा देलकैक । क्रमशः सभकिछु शांत भेल ,मुदा एहि प्रकरणसँ हमर कारबारकेँ जबरदस्ता धक्का लागल । ओकरा फेरसँ पटरीपर आनएमे बहुत प्रयास करए पड़ल । बीचमे बहुत रास अपना दिसक कर्मचारीसभ काज छोटि़-छोड़ि चल गेल । आब तँ अपना दिसक लोकसँ डर होइत छल। तेँ सोचलहुँ जे किछु बहरिओ कर्मचारी आनल जाए । कुसुम प्लेसमेंट एजेंसी चलबैत छलीह से हमरा बूझल छल । हम हुनका फोन केलहुँ तँ ओ कहए लगलीह-

"आबिए किएक नहि जाइत छी? सामनेमे गप्प भए जाएत ।"

"से तँ ठीके । भेंटो भेला बहुत दिन भए गेल ।"

"ठीक छैक । आइ तँ हम कतहु जा रहल छी । काल्हि आएब । "

तकरबाद एकटा एसएमएस आएल जाहिमे हुनकर कार्यालयक पतामे लताक घरक पता लिखल छल । दोसर दिन चारि बजे साँझमे हम ओतए पहुँचलहुँ । लता पहिनहिसँ गेटेपर ठाढ़ि छलीह । हमरा देखितहि ओ बहुत प्रसन्न भेलीह । जोरसँ हमर हाथ पकड़ि कए घर दिस लेने गेलीह । हम दुनूगोटे अंदर

जाइत छी । ओ कहैत छथि जे कुसुम किछु जरुरी काजसँ गेलीह अछि आ जल्दीए आबि जेतीह ।

हमरा कुसुम केँ नहि रहब अखरि रहल छल । एना समय दए कए ओ किएक चलि गेलीह ? कही ई पूर्वनियोजित तँ नहि छल ? तरह-तरहक बातसभ मोनमे घुमि रहल छल । हमरा अस्तव्यस्त देखि लता पुछिए देलीह -

"एम्हरे आबि जाउ ने । असगर नीक नहि लगैत होएत ।" जाबे-जाबे हम किछु सोचितहुँ ओ स्वयं हमरा घिचने चलि गेलीह। आब की होएत? हमरा तँ ठकबिदरो लागि गेल ।

"अहाँ बड़ लजकोटर छी । एतेक दिनसँ दिल्लीमे रहितहुँ अहाँ किछु नहि सिखलहुँ।"-से कहि ओ भभा कए हँसि पड़लथि। हम सरिपहुँ लजा गेलहुँ ।

कनीके कालमे कुसुमक फोन आएल ।

" हम किछु जरुरी काजसँ अटकि गेल छी । जँ हमरा आबएमे देरी भए जाए तँ अहाँ सभबात लताकेँ कहि देबनि । आगू काल्हि गप्प कए लेब ।"

हम बुझि गेलिऐक जे ई सभ आपसमे किछु खेल कए रहल अछि ।

"की काज छल?"

" किछु नव-नव कार्यकर्ताक हेतु कुसुमकेँ कहने रहिऐक।"

"अहाँ ई सभ चक्कर छोड़ू ।"

"तखन की करू?"

"हमरा संगे आबि जाउ । ई सभ सम्हारु ।"

हम किछु नहि बाजि सकलहुँ ।

गप्पेक क्रममे लता कहलथि जे दामोदर जमानतिपर छुटि गेल । " आ किसुन?"

"ओहो ।"

" से केना भेलैक?"

" कुसुमसँ पुछबै। ओकरासभ बात पता छैक ।"

साँझ भए रहल छल । लोकसभ अपन अपन काज समाप्त कए घर वापस भए रहल छल । सड़कपर जाम से लागि गेल छल । हम कहलिऐक-

"तँ आब जेबाक आज्ञा दिअ ।"

"एना असगरे अहाँ कतेक दिन रहब?"

"समय अएलापर सभ अपनेभए जेतैक ।"

हमरा ओ गेट धरि आरिआति देलीह । सत पुछी तँ हमरो जेबाक मोन नहि होइत छल ।

-32-

बहुत प्रयासक बाद हमर काजसभ फेर सरिआ गेल छल। हम दिल्लीमे नीक जकाँ व्यवस्थित भए गेल रही । कहिओ काल मदनबाबूक ओहिठाम जा कए हुनकर घरक देखरेख करए पड़ैत छल । ततेकटा घर छलैक जे साफे करएमे सौंसे दिन लागि जाइ। ओहिदिन आओर किछु करब संभव नहि भए सकैत छल । कैकबेर मोनमे होअए जे यदि केओ विश्वस्त लोक भेटि जाइत तँ ओकरा ओहिठाम राखि दितिऐक । हमरो भार कमैत आ ओकरो किछु लाभ होइतैक । मदनबाबू कैकबेर फोनपर ई बात कहबो

करथि ,मुदा तेहन केओ भेटए तखन ने ? एहन ने होअए जे परेसानीमे पड़ि जाइ।

एकदिन एहिना अपन कार्यालयमे बैसल रही की रचनाकैं आबाज बुझाएल । ओ हमर कोठरीक बाहर ककरोसँ हमरे बारेमे पुछि रहल छलखिन । हम बाहर निकलैत छी । हुनका देखितहि जेना करेंट लागि गेल । एहन सुंदर लोककैं देखि कए केओ ठाढ़ भए जाएत । हम कोनो अपवाद नहि छलहुँ । लगपास देखलिऐक कैकगोटे किछु-किछु बतिआ रहल अछि । ओ सभ गाहे-बगाहे रचने दिस इसारा कए रहल छल ।

"आउ, आउ । अंदरे आबि जाउ ।"

ओ हमर कोठरीमे अबैत छथि । लगलैक जेना सौंसे कोठरीमे इजोत भए गेल हो ।

"कोना अएलहु?"

"किछु दिक्कतिमे पड़ि गेल छी ।"

"की बात?"

"कहबामे लाज होइत अछि, मुदा अहाँकैं नहि कहब तँ ककरा कहबै? परदेशमे के ककरा देखैत छैक? एहनमे अहाँ एतेक लोकक पालन कए रहल छी । असलमे बहुत दिनसँ मोन छ-पाँच कए रहल छल ,मुदा लाज होअए। परिस्थिति एहन भए गेल जे बिना अएने कोनो उपाय नहि रहल ।

" हम की कए सकैत छी?"

"हमरासभ कैं किछु काज धरा दिअ ।"

से कहि ओ बाहर ठाढ़ माधवकैं बजओलखिन । माधव अंदर अबैत छथि । माधव बटुकक पितिऔत छलाह । गामे मे कुस्ती खेलाथि । हार-पाँजर बेस मजगूत छलैक । तमाकुल खाइत

ओ हमर कोठरीमे अबितहि पहिल काज केलाह जे मुँहसँ तमाकुलकेँ थुकरलाह ।

"कतेक पढ़ल छी?" -हम पुछलिऐक ।

“मैट्रिक फेल छिऐ?

"ओ की काज कए सकैत छी?"

" जे काज भेटत से कए लेबैक ।" से बाजि ओ जोरसँ तमाकुल थुकरलाह ।

हम ओकरा मदनबाबूक ओहिठाम चौकीदारक काजमे राखि देलिऐक । ओतहि बाहरमे एकटा कोठरीमे रहबाक सेहो जोगार भए गेलैक । ओसभ बहुत खुस भेलाह । हमरो कनी चैन बुझाएल कारण बेर-बेर ओहि कोठीपर गेनाइ मोसकिल भए जाइत छल ।

मास-दूमास तँ ओसभ नित्य साँझमे फोन करितथि । तकरबाद फोन कहिओ-कहिओ आबए । हमरो एतेक फुरसति नहि रहए जे ओहीपर लागल रहितहुँ । मुदा जखन बहुत दिन धरि फोन नहि आएल तँ चिंता भेल जे एकबेर अपने जा कए देखी जे बात की छैक । कहीं ईहोसभ किछु खे ल तँ नहि शुरु केलक । रवि दिन छलैक । हमरा ओहिठाम छुट्टी रहैक । हम ओहिठाम पहुँचलहुँ । जानि कए ओकरासभकेँ फोन नहि केलिऐक ।

औ बाबू! ओतए पहुँचतहि हालति देखि गुम्म पड़ि गेलहुँ। सौंसे कोठीमे लोक गज-गज करैत छल । केओ परिचित लोक नहि बुझाएल । ताबे ओकरासभकेँ पता लागि गेलैक जे हम आएल छी । माधव तमाकुल चुनबैत आएल । गोर लागलक । रचना सेहो आबि गेलीह । दुनूगोटे नि:शब्द ठाढ़ छलाह।

"ई की देखि रहल छी?"

"एकहि सप्ताहमे चलि जाइ जेतैक । विद्यार्थीसभ छैक। सभ बहुत कष्टमे रहैक । परीक्षा देबए आएल छैक ।"

"मुदा अहाँकेँ ई अधिकार के देलक जे अनकर मकानकेँ बिना अनुमतिकेँ ई हाल कए दी?"

हमरा तमसाएल देखि रचना थोड़-थाम्ह लगेबाक प्रयास करए लगलीह ।

माधव कतहुँ सहटि गेलाह । रचना असगर देखि कनखी-मटकीपर उतड़ि गेलीह । एहिबातसँ हमरा आओर तामस चढ़ि गेल।

"माधव! माधव !"-हम जोर-जोरसँ चिकरलहुँ । ओ किन्नहुँ सामने नहि आएल । पता नहि कतए चलि गेल । आब की करी?रचनाकेँ बेसी किछु कहब नीक नहि लागए?तथापि समाधान तँ करक रहैक ।

"एकरासभकेँ दूघंटाक अंदर खाली कराउ नहि तँ हम पुलिसकेँ बजाएब।"

"जकरा बजाउ ,मुदा ई सभ एकसप्ताहसँ पहिने नहि जा सकत ।"

रचनाक ऐहन पकठोस बात सुनि ककरो खराब लगितैक। कहबी छैक जे एक तँ चोरी ताहिपरसँ सीनाजोरी । की दुनिआ छैक?एकरासभकेँ चौकीदारक काज धरा देलिऐक जे अपनो गुजर करत आ मकानोक देखभाल भए जाएत । मुदा ई सभ तँ बेस धोखेबाज निकलल ।

गलती हमरे छल जे एकरासभपर एतेक विश्वास केलहुँ । आब जखन फँसिए गेल रही तँ बुधिआरीसँ बिना बेसी फसाद केनहि निकलि जाइ सएह ठीक बुझाएल । हम ओहिदिन पुलिस

नहि बजओलहुँ । भेल जे बातकेँ बतंगर ने भए जाए । ओहिठामसँ वापस अबैत-अबैत रचनाकेँ बेर-बेर कहलिऐक जे जल्दीसँ जल्दी एकरासभकेँ हटाबए । हम फेर करवनो आबि सकैत छी ।

“अहाँ निश्चिन्त रहू।”-रचना बाजलि । हम ओहिठामसँ चलि तँ अएलहुँ, मुदा मोन ओम्हरे लटकल छल ।

मदनबाबू हमरा विश्वासपर कोठीक कुंजी दए गेल रहथि जे कहिओ काल सफाइ करा देल करबैक,देरव-रेरव कए देबैक । हम रचना आ माधवक हालति देखि ओकरा किछु फएदा करबाक हेतु ई व्यवस्था कए देने रहिऐक। तकर ओ सभ की हाल केलक ? एकरासभकेँ देखि कए बुझाएल जे एहि दुनिआमे केहन-केहन लोक होइत अछि । लोभ-लालचमे फँसि कए कोनो हद धरि जा सकैत छैक । चीज ककरो रहैक , मालिक केओ बनि गेल ।

राति भरि निन्न नहि भेल । भोरे मदनबाबूकेँ फोन कए सभबात कहलिअनि । मुदा ओ कनिको चिंतित नहि भेलाह । कहलाह-"जे वाजिब होइ से कए लेब ।" एहिसँ बेसी ओ किछु नहि बजलाह । खैर !जे भेल,से भेल, आबो बात सम्हरि जाए ताहि दिसामे प्रयास केलहुँ । प्रात भेने फेर ओहिठाम पहुँचलहुँ आ ओहिमे रहनिहार विद्यार्थीसभकेँ सभबात खोलि कए कहलिऐक । ओ सभ कहलक –

“हमरा सभसँ तँ भाड़ा लए लेने अछि आ फाजिल टाका अछिओ नहि । परीक्षा छोड़ि कए हम सभ कतए जाएब?"

“परीक्षा कहिआ धरि छैक ।"

"काल्हि भरि छैक । परसू दूपहरिआमे हमसभ अपने चलि जाएब ।"

हम ओकरासभक बात मानि लेलहुँ ,कारण ओकरा सभक कोनो गलती नहि छलैक । बाहरसँ आएल छल । एतेक छल -प्रपंच नहि बुझि सकल । रचना हमरासँ गप्प करबाक कैकबेर प्रयास केलक ,मुदा हम बिना किछु गप्प केनहि वापस अपन डेरापर चलि अएलहुँ । हम माधवकेँ तकलिऐक । मुदा ओ तँ चंपत भए गेल छल । साइत एहूमे ओकर कोनो चालि छलैक?

अबैत-अबैत हम एतबा साफ कहि देलिऐक-"अहूँसभ अपन डेरा ताकि लिअ ।"

रचना बिना किछु बजने पाछू घुमि गेलीह ।

-33-

मदनबाबूक कोठी खाली भए गेलैक । विद्यार्थीसभ परीक्षा खतम होइते अपन-अपन ठामपर चलि गेलाह । रचना आओर माधव सेहो ओहिकोठीकेँ छोड़ि कतहुँ आनठाम रहए लगलाह । बादमे कहिओ कुसुम कहलथि-

"अहाँ माधवकेँ जनैत छलिऐक की?"

"की बात?"

"ओ अहाँक चर्चा करैत रहैत छल ।"

"अहाँ ओकरा कोना जनैत छिऐक?"

"हमरा ओतए काजक हेतु आएल रहए । अहाँक परिचय देलक । हम एकटा काज देबो केलिऐक । मुदा ओकरा संगे तँ बहुतभारी दुर्घटना भए गेलैक?"

"की भेलैक?"

"ओ काजपर गेल छल । रचना घरे पर रहैक । ओकरा की फुरेलैक जे ओहिदिन बसस्टापेपरसँ वापस भए गेल । घर पहुँचैए तँ कोठरी अन्दरसँ बंद छल । कान पाथि कए सुनलक तँ विचित्र तरहक आबाजसभ सुनाइ । बाहर ककरो जुता राखल सेहो देखलक । मोन तामसे व्यग्र भए गेलैक । ओ केबारपर जोरसँ लात मारलक । कमजोर केबार छलैक । धराम दए खसि पड़लैक। रचना आ किसुन धरफरा कए बाहर निकलल । मुदा माधव तँ पिशाच भए गेल छल । ओहिठाम राखल कुरहरि उठओलक आ किसुनपर बजारि देलक । किसुनक माथसँ खूनक फुचक्का निकलि रहल छल । रचना कतबो प्रयास केलक ओकरा नहि बचा सकलि। अस्पताल जाइत-जाइत ओकर मृत्यु भए गेलैक ।"

"तखन?"

"तखन की? माधव पकड़ल गेल । जहलमे बंद अछि ।"

"ई तँ बड़ अनर्थ भए गेल । "

“दामोदर हमरा ओहिठामसँ किछुदिनसँ संपर्कमे छल । ओकर किछु कारबारसभ चलैत छलैक जाहि हेतु हमरा ओहिठामसँ आदमी लए जाइत छल। ओ सभ कष्टमे छल, परेसान छल, तेँ हम दामोदरक ओहिठाम एकरासभकेँ पठा देलिऐक । यद्यपि दामोदरक गतिविधि संदेहास्पद तँ छलहे । ओएहसभ ओकर रहबाक हेतु डेरा सेहो अपने लगपास ताकि देलक । घटनाक्रम एहन रुखि लेत से के जनैत छल?"

हम सोचमे पड़ि गेलहुँ । कैकबेर मोन मे होअए जे बेकारे एकरासभकेँ काजपर सँ निकालि देलहुँ । साइत एहि झंजटमे नहि पड़ैत । साइत जान बचि जइतैक । तखने इहो सोचाए जे की

पता,हमरे किछु अनट कए दैत । कोठीमे बिदति तँ कइए देने रहए। हमरा परेसान देखि कुसुम बजलीह-

"अहाँ तँ चिंतामे पड़ि गेलहुँ । ककर-ककर की-की देखैत रहब? अपन काजसँ मतलब राखी ।"

"फेर ओएह बात । आदमी छी तँ संवेदना हेबे करत,हेबेक चाही । कोनो यंत्र थोड़े छी?"

हम कुसुमसँ गप्प करितहि रही की लताक फोन आएल।

सुनलहुँ जे अहाँ हमरे ओहिठाम छी । हम आबिए रहल छी । अगुताएब नहि ।"

आब जखन ओ रोकिए लेलीह तँ कोना चलि अबितहुँ । बैसल कुसुम संगे गप्प-सप्प करए लगलहुँ । गप्पेक क्रममे ओ कहलीह -"दामोदर नीक लोक नहि अछि । "

"ओ कोन नव गप्प अछि ।"

"अखन अहाँकेँ बहुत बात नहि बूझल अछि ।"

"किछु विशेष गप्प छैक की?"

अहाँकेँ पता अछि जे ओ जहलसँ कोना छुटल?"

"हम की जाने गेलिऐक?"

"तँ सुनू । दामोदर आ ओकर संगीसभकेँ नीरजक हत्या ओ डकैतीक मामिलामे सजा तँ भेनहि रहैक । मुदा ओ सभ कोना ने कोना पुलिसक सभटा सबूत हथिआ लेलक । केसक जिरह होइत रहैक । जज बेर-बेर सबूत माँगैक । पुलिसक फाइले बिला गेलैक । कतबो प्रयास केलक फाइल नहि भेटलैक । हारि कए सबूतक अभावमे जज एकरासभकेँ छोड़ि देलक। ओकरा लगमे आओर कोनो विकल्प नहि रहि गेलैक । ऐहिबातसँ खुस भए

दामोदर वैष्णवदेवीक दर्शन करए गेल छल कि एमहर ई कांड भए गेलैक ।"

किसुन मारल गेल । ताहिसँ पहिने बटुक स्वयं पानिमे डुबि कए मरि गेल । माधव किसुनक हत्याक आरोपमे जहलमे बंद अछि । आब रचना की करितए? पहुँचल दामोदर लग। ओ वैष्णवदेवीसँ लौटले छलाह । मालती पहिनहिसँ ओतहि रहथि । रचनाक माथा काज नहि कए रहल छलैक । ओ विक्षिप्त भए गेल छलीह । करवनो बटुक, तँ करवनो माधव, तँ करवनो किसुनक नाम लैत चिकरैत छलीह । दामोदर रचनाक बगए देखि डरा गेल। मालती लाख बुझाबक प्रयास केलकैक , ओ नहि रुकल,चिकरिते-चिकरिते ओहि घरक देबालसँ बाहर चलि गेलि। तकरबाद ओ कतए गेल,ककरा संगे गेल आइ धरि किछु पता नहि चलि सकल।

-34-

कहबी छैक जे भगवानक घरमे देर अछि ,अन्हेर नहि अछि । सएह बात दामोदरक मामिलामे भेल । दुनिआकेँ तँ अहाँ ठकि सकैत छी मुदा अपना आपसँ कोना बाचब? दामोदरक मोन तँ ई बात सदरिकाल कहैत रहैक जे ओ अनीति ओ अन्यायक चौकठिपर ठाढ़ भए बहुत दिन धरि ठहाका नहि पाड़ि सकैत अछि। मुदा लोभ आ लालच आदमीक पतन कराइए कए मानैत अछि। दामोदरक संगे सएह भेलैक । जँ से नहि रहैत तँ ओ सरकारी नौकरी कए शांतिपूर्वक जीवि सकैत छल । लंद-फंद कए मनुक्खक न्यायलयसँ तँ ओ बँचि गेल ,मुदा भगवानसँ नहि बचि सकल ।

दामोदर कुसुमक कार्यालयमे किछु काजसँ गेल रहथि । लौटतीमे कुसुम संग भए गेलखिन । हुनको सरोजिनीनगर मार्केटमे काज रहनि । रविदिन रहैक। सरोजिनीनगर मार्केटमे चुट्टी ससरबाक जगह नहि रहैक । सभकाज संपन्न कए बिदा छल कि कुसुमक किछु सामान दोकानेमे छुटि गेलैक । ओ कारसँ नीचाँ उतरलि आ दोकान दिस बिदा भेले छलीह की बड़ी जोरक आबाज भेल । लागल जेना कोनो बम फुटल हो। दामोदरक कार धू-धू कए जड़ए लागल। कारमे स्वचालित ताला लागल छलैक । दामोदर लाख कोशिश केलक जे कारसँ भागी,किछु नहि कए सकल। सभटा गेट जाम भए गेलैक । चारूकात हंगामा भए गेल। पुलिस,फायरब्रिगेड सभ दौड़ल । मुदा ताबे सभ किछु खतम छल। कार धू-धू कए जरि गेल। सभ किछु खाक भए गेल छल। सौंसे सरोजिनीनगर मार्केटमे जेना भूकंप भए गेल । लोकसभ जहाँ-तहाँ भागि रहल छल। ककरो नहि बूझल रहैक जे आखिर भेलैक की? केओ किछु,केओ किछु अनुमान लगबैत रहल।

संयोग एहन रहैक जे हम लताक संगे सरोजिनीनगर मार्केटेमे रही ,मुदा दोसर दिस । चारूदिस लोककेँ भागैत देखि हमरो उत्सुकता भेल जे आखिर बात की छैक । हम आगू बढ़लहुँ। कनीके दूरपर कुसुम देखेलीह । ओ डरसँ हाँफि रहल छलीह । किछु कहए चाहथि ,मुदा बजले नहि होनि । पुलिस चारूकात घेराबंदी कए देलक । हमसभ कहुना कए ओतएसँ निकलि अपन घर वापस अएलहुँ ।

एहि दुर्घटनाक बाद दामोदरक घरपर पड़ल छापामे पुलिसकेँ बहुत महत्वपूर्ण जानकारीसभ भेटलैक । दिल्ली अबैत काल ट्रेनसँ मालतीक अपहरण आओर कनाटप्लेसक गहनाक

दोकानक डकैतीसँ जुड़ल फाइल ओकर आल्मीरासँ निकलल । नीरज द्वारा आयोजित अपन समाजक बैसारमे भेल हंगामासँ जुड़ल कागजात सेहो ओकरे लगमे छल । एहि फाइलसभसँ ई स्पष्ट भेल जे दामोदर एहि घटनासभमे लिप्त छल । मुदा आबकी? आब तँ ओ मरि चुकल छल । ई सभ बात एकटा इतिहास छल ।

-35-

दिल्ली अएला हमरा कतेको साल गुजरि गेल । ऐहिक्रममे एकसँ -एक नीक लोक भेटलाह ,खरापो लोक भेटलाह । मुदा मदनबाबू सन केओ नहि भेटलाह । ओ अपना-आपमे एकटा दृष्टान्त छलाह । जाबे दिल्लीमे रहथि ताबे तँ मदति करिते रहलाह,देशसँ बाहर गेलाक बादो ओ ओहिना ध्यान रखैत रहलाह। सप्ताहमे एकदिन अवश्य फोन करितथि । दिल्लीक गतिविधि खास कए अपन समाज संस्थाक बारेमे जरूरसँ ओ पुछितथि । विदेशमे हुनकर कारबार ततेक बढ़ि गेल छल जे दिल्लीक चीज-वस्तुक ने प्रयोजन बुझानि ने ओकर देखभाल करब संभव छल । हम असगरे कतेक की करितहुँ? बीचमे माधव आ रचना उकबा कइए देने रहए ।

ताहिसँ अदकल रहबे करी । ओहिदिन जखन हुनकर फोन आएल तँ हम कहलिअनि-

" दिल्लीमे अपन मकानक किछु व्यवस्था किएक नहि कए लैत छी?"

"की कहैत छी? एसगरे कतए-कतए देखबैक ? हमरा इच्छा अछि जे एहि मकानकेँ अपन समाज संस्थामे दान दए

दिऐक। एहि संस्थाकेँ मजगूत करब बहुत जरुरी अछि जाहिसँ दिल्लीमे अएनिहार अपन समाजक लोककेँ एकटा आश्रय होइक।"

"मुदा ताहू हेतु तँ सही आदमी चाही । एहिठाम लोक गामसँ भने उठि कए चलि आएल अछि ,मुदा माथा गामेक छैक। ओहिना गोलैसी, जाति-पाँतिक उठा-पटक होइत रहैत अछि । कोनो आन प्रान्तक लोकमे एहन समस्या नहि अछि । केरल, कर्णाटक, तामिलनाडु, आनो, आनो प्रान्तक अपन संस्था छैक, अपन भाषाक इसकूल छैक ,मुदा अपना सभक किछु नहि अछि जखन की गामक-गाम उठि कए आब एतहि चलि आएल अछि।"

"समस्या तँ छैहे । मुदा समाधानो तँ हमही-अहाँ करबैक। नीक लोक जँ आगू नहि आओत तँ जाहिर छैक जे बेजाए लोक आक्रमक भए जाएत । गुन्डा-अबारा राज करत आ नीक लोक नुकाइत रहत । अहीं कहू से नीक होएत? नहि ने? तेँ हमरा सभकेँ आगू आबए पड़त। हम अपन मकान आ दिल्लीक आओर संपत्ति अपन समाज संस्थाकेँ दान देबाक निर्णय केलहुँ अछि। एहि संस्थाक काज नीक लोकक हाथमे जाए से प्रयास करू। नीक इसकूल,कालेज सभ बनाउ । अपन भाषामे लोक लिखए-पढ़ए तकर ओरिआन करू ।"

हम सोचलहुँ जे मदनबाबूक अभिलाषाकेँ साकार करबामे योगदान करक चाही । कालान्तरमे ई अपन समाजक हेतु एकटा महान प्रकाश स्तंभ बनि सकैत अछि । केहनो समय आबि गेलैक तैओ नीक लोकक पुछारी रहबे करतैक । मुदा हम एसगरे एतेक झंझटिकेँ सम्हारबाक स्थितिमे नहि रही । अस्तु,हम हुनका कहलिअनि-

“अपने अएबैक तखने ई काजसभ आगू बढ़त ।"

"हमरा आबक कोन छैक । जखने कहब, आबि जाएब। मुदा अहाँ काज शुरु तँ करू।"

“ठीक छैक ।"

मदनाबाबूक इच्छाक अनुसार अपन समाज संस्थाकेँ शरद पूर्णिमाक रातिमे बैसार करबाक निर्णय भेल । मदनबाबू सेहो उपस्थित रहथि । दिल्लीक समस्त प्रावासी एहिमे आमंत्रित छलाह। सबेरे सकाल लोकक अएनाइ शुरु भए गेल । दक्षिणी दिल्लीक प्रतिष्ठित मोहल्ला जोरबागमे मदनबाबूक घर छल । ओतहि बैसार भए रहल छल ।

सभामंडप सुसज्जित छल । कनीके कालमे लोक खचाखच भरि गेल । आगू पाँतिमे महिला समाजक प्रमुख लोकसभ छलीह । मालती आओर कुसुम ‘जय जय भैरवि’ गेलथि’। मैथिलीक प्रतिष्ठित महिला कवि ओ साहित्यकार बैसारक अध्यक्षता कए रहल छलीह । कार्यक्रमक शुरुआतेमे मदनबाबू दिल्लीक अपन समस्त संपत्ति अपन समाज संस्थाकेँ दानमे देबाक घोषणा केलाह । सभामंडप हुनक घोषणाक करतल ध्वनिसँ स्वागत केलक । बैसारक प्रयोजन स्पस्ट करैत मदनबाबू बजलाह-

“समय एकटा एहन वस्तु अछि जकरा केओ आइ धरि नहि देखलक, मुदा एहि संसारकक समस्त प्राणी एकर चपेटमे अबिते अछि, अबिते रहल । केओ एकर अपवाद नहि भए सकल। हम गामकेँ छोड़ि रोजी-रोटीक फिराकमे दिल्ली अएलहुँ। तहिआ गाम छोड़नाइ कोनो सोहनगर गप्प नहि रहैक । लोक कुचेष्टा करैक । मुदा हालति एहन होइत गेलैक जे आब दिल्ली

लोकक घर-आङन भए गेल । जे जतएसँ आएल जेना-तेना अपन खोपड़ी ठाढ़ कए लेलक । एतहि बसि गेल । महानगरक चक्रव्युहमे जे जतहि फँसल से फँसले रहि गेल। साइते केओ वापस गेल ।

एहिठाम लोक बसि तँ गेल ,मुदा अधिकांश परिचयहीन भए गेल । बेसक ओ अखनो अपनगामक नाम लए लेथु ,मुदा हुनका अपनो बूझल छनि जे जँ गाम जेताह तँ अपन परिचय देबाक हेतु माइक लगाबए पड़तनि । एहन बात तँ नहि अछि जे जतेक गोटे एहिठाम अएलाह से सभ कोठीएमे छथि। अखनो कतेको गोटे सड़कक कातमे भोर जाइत काल देखाइत छथि आ साँझमे जखन वापस जाइत रहैत छी तँ ओहिनाक ओहिना रहैत छथि। मुदा ककरो लगमे कोनो विकल्प नहि रहि गेल छैक । जेना गाम आपसीक संभावनाकेँ अपनहि लोक निठ्ठाहक डाहि देलकैक जाहिसँ ओ घुरि नहि जाए,जाहिसँ जे किछु किछु खेत-पथार बाँचल छैक से सभ सोलहन्नी ओकरे संतानकेँ रहि जाइक,केओ बाँटै नहि ।

अस्तु,अधिकाँश लोक जे महानगरक मायामे पड़लाह से सामाजिक/ सांस्कृतिक विकलांगताक सिकार भए गेलाह । समस्या अछि जे अपन समाज संस्था एहन लोकक किछुओ कल्याण कए सकत कि नहि ? अपन समाजक एहन लोकसभक समस्याक समाधानमे मदति भए सकतैक कि नहि ? हमसभ बहुत आशावान लोक छी। सभकेँ बूझल अछि जे अपन समाज केहन अछि । मुदा तेँ की ? जकर माए आन्हर होइत छैक सएह गामक इनार भरैत अछि । अपन लोकक काज आन के करत आ किएक करत ?”

आजुक बैसारमे अद्भुत शांति छल । लगैत छल जेना सभ एकहि परिवारक लोक छथि। बैसारमे कतेको महत्वपूर्ण निर्णय भेल। अपन भाषाक इसकूलक स्थापनक सेहो निर्णय भेल। ऐहन बैसार भविष्योमे होइत रहए ताहि हेतु एकटा समिति बनाओल गेल।

लोक जीवन भरि संपत्ति जोड़ैत रहि जाइत अछि आ अंतमे सभ किछु छोड़ि अंतहीन यात्रापर चलि जाइत अछि । अंत-अंत धरि संपत्तिकेँ बकोटने रहैत छथि । एहन कमे लोक होइत छथि जे समय रहिते चेति जाथि। मदनबाबू एहने लोक छथि । ओ एकटा मामुली आदमी छलाह । भाग्य संग देलकनि । आगू बढ़ए लगलाह तँ कहिओ पाछू घुमि कए नहि देखलाह। मुदा कोनो वस्तुक व्यर्थ मोह नहि रखलनि । दिल्लीक एतेक मुल्यवान घर आ आन-आन संपत्तिकेँ जाइत-जाइत अपन समाज संस्थाकेँ दए गेलखिन । ततबे नहि जेबासँ पहिने ई सुनिश्चित कए केलाह जे कुसुम,मालती आ एहन-एहन आओर महिलासभक अपने लोकक देल गेल त्रासदीसँ मुक्ति भेटए जाहिसँ ओ सभ मर्यादित जीवन जीवि सकथि । गाम-घरसँ फटकी रहितहुँ अपन लोकसभ अपन भाषा अपन संस्कृतिसँ जुड़ल रहथि ताहि हेतु पर्याप्त जोगार कए गेलाह । जाइत-जाइत इहो कहि गेलाह -"अहाँ सभ आगू बढ़ू । हम सदिखन अहाँक संगे ठाढ़ भेटब ।" मदनबाबू सन-सन लोक जाहि समाजमे होएत से कदापि पाछू नहि रहत,बढ़बे करत ,सभ एतबे बात बाजथि ।

हम एतेक दिनसँ मदनबाबूक संपर्कमे छी, हमरे गामक छथि से अखन धरि नहि बूझल छल । हुनकर अतीतक बारेमे बहुत कम बूझल अछि । कैकबेर मोनमे होअए जे पुछिअनि । ओहिदिन अपन समाज संस्थाक कार्यक्रमक बाद हमरा संगे अपना ओहिठाम लेने गेलाह । हमसभ सोफापर बैसले रही कि एकटा बेस गरिमायुक्त महिला बहरेलीह । हुनका देखितहि मदनाबाबू कहैत छथि -" हिनका चिन्हलिअनि? इएह छथि हमर श्रीमतीजी-मोहिनी । अपनसभक गामेक लगेमे इहपुर हिनकर गाम छनि । मुदा कहिओ गाममे रहलथि नहि । हिनकर पिता कलकत्तामे बहुतदिनसँ रहैत छलाह । ओतहि हुनकर नीक व्यापार छल। हमरा संगे बिआह भेलाकबाद थोड़बे दिन गाममे रहलीह। मुदा ओहिठाम कोनो सुविधा नहि छलैक । हम हुनका संगे दिल्ली आबि गेलहुँ । चाह-पानक दोकान खोललहुँ, की-की नहि केलहुँ। तहिआसँ कहिओ घुमि कए नहि देखलहुँ । कोनो काज करबामे हमरा कहिओ संकोच नहि भेल ,मुदा गलत काज कहिओ नहि केलहुँ ,ने गलत आदमीक संगे रहलहुँ । हमर सफलताक इएह मूलमंत्र बनि गेल,जे बहुत कारगर साबित भेल। आब अपनो आश्चर्य लगैत अछि जे हम कोना एतेक कए सकलहुँ। हमरो तरह-तरहक परेसानी भेल । बहुत गोटे मदतिओ केलक । मुदा हम अपन काजमे लागल रहलहुँ । ”

हमसभ गप्प कइए रहल छलहुँ कि मोहिनी स्वयं चाह लेने अएलीह ।

"चाह पीबू । ई तँ एहिना अहाँकेँ फदका सुनबैत रहि जेताह"- हुनकर श्रीमतीजी बजलीह ।

हमरा हुनकर बात सुनि कए हँसी लागि गेल । चाह-पान होइत रहलैक आ गप्पो बढ़ैत रहल ।

गप्पकेँ आगू बढ़बैत ओ कहैत छथि -"ओहि समय दिल्लीमे अपना ओहिठामक लोककेँ हालति ठीक नहि रहैक । बेसीलोक छोटमोट काज कए गुजर करए । किछुगोटे नीको-नीको पदपर रहथि ,मुदा ओहो सभ की करितथि ? कतेक केँ पार लगबितथि । फेर अपना ओहिठामक लोकोसभ तँ तेहने फसादी । जाही थारीमे खाएब,ताहीमे भूर करब । एहन बहुत दृष्टान्तसभ होइत रहल ।

"धुर! जाए दिअ, बितलबातसभकेँ बिसरु । एकरा गीरह बान्हि कए रखने जिनगी चलत?"-मोहिनी बजलीह ।

"से अहाँ सही कहि रहल छी ,मुदा मोन तँ पड़िए जाइत छैक । "- मदनबाबू बजलाह ।

"आगू एहन प्रयास करू जाहिसँ फेर दोसर लोकसभकेँ एहन समय नहि देखए पड़ए ।"

"आब ओ हालति नहि छैक । मुदा अखनो आपसी सहयोगसँ रहबाक आवश्यकता तँ अछिए ।"

आइ पहिलबेर मदनबाबूक मुँहे ई गप्प-सप्प सुनि रहल छलहुँ ।

“हमरासभकेँ एकहिटा संतान छथि-दीपा । ओ सभदिन हमरासभक संगे बाहरे रहलीह । विदेशी भाषा ओ संस्कृतिसँ प्रभावित हुनकर जिनगी सभ दिन फराके रहल । ओहिठाम एकटा अंग्रेज दोस्तकसंग बिआह कए लेलीह आ आब ओहीठामक भए कए रहि गेलीह । हमसभ एतेक संपत्ति अरजलहुँ। मुदा तकर

होएत की? सएह सोचैत -सोचैत परेसान भए गेलहुँ तँ अहाँकेँ एकदिन फोन कए अपन समाज संस्थाक चर्चा केलहुँ ।"

“छोड़ु ई गप्प-सप्प । धीआ -पुता सुखी रहए ताहिसँ बढ़ि कए की भए सकैत अछि? -मोहिनी बजलीह ।

हम हुनकर सभहक गप्प सुनि कए गुम्म रहि गेलहुँ । मदनबाबूक बातमे बहुत पीड़ा छलनि । मुदा मोहिनी शांत छलीह। बातकेँ घुमबैत कहलीह-

" गाम जाइ छी की नहि?"

"बहुत दिनसँ नहि जा सकलहुँ ।"

"हमरा तँ गामक रस्तो मोन नहि अछि ।"

सभ हँसए लगलाह । हम जएबाक हेतु आज्ञा लए बिदा भेलहुँ ।

“काल्हि साँझमे हमरासभकेँ जेबाक अछि । "-मदनबाबू बजलाह।

“एतेक जल्दी चलि जेबैक?"

“जेबाक मोन नहि होइत अछि । गामघर तँ सदतिकाल मोन पड़िते रहैत अछि । मुदा कएल की जाए? ओहिठामक कारबारके सम्हारत? "-मदनबाबू बजलाह ।

प्रात भेने हम हुनकासभक संगे हवाइअड्डा धरि गेलहुँ ।

हमसभ हवाइअड्डाक लगीचमे पहुँचि गेल रही कि मोहिनी बजैछथि-" जुलुम भए गेल ।"

"की भेल?"-मदनबाबू बजलाह ।

" छोटकी बाकस घरेमे छुटि गेल ।"

"आब जाए दिऔ । जहाजक छुटबाक समय लगीच छैक ।"

"ओहि बिना हम किन्नहु नहि जा सकैत छी।"

"ओहिमे की छै जे एना परेसान छी ?"

"हमर नैहरक माटि आ सिमरिआसँ आनल गंगाजल ओहीमे राखल अछि । कोनो उपायसँ ओकरा मंगाउ ।"

मदनबाबू हमरा दिस ताकए लगलाह । हम तुरंते दोसर गाड़ी कए मदनबाबूक घर पहुँचलहुँ तँ देखैत छी कुसुम बाहरे बाकस लेने ठाढ़ि छथि ।

“हम तँ फोन लगबैत, लगबैत थाकि गेलहुँ । ककरो फोन नहि लागल । हारि कए तखनसँ एतहि बैसलि छी ।"-कुसुम बजलीह । हुनकासँ बाकस लए कए चोट्टे लौटि गेलहुँ । संयोग रहैक जे छुट्टीक दिन हेबाक कारण रस्तामे जाम नहि रहैक । मदनबाबू बाहरे भेटि गेलाह। बाकस देखि कए मोहिनीकेँ जान-मे-जान अएलनि ।

हवाइ जहाज छुटबाक घोषणा भए रहल छल । ओ सभ झटकारि कए आगू बढ़ि गेलाह।

-37-

हमरा दिल्ली अएला कैक साल भए गेल । एहिबीच समयक चक्र कतए सँ कतए पहुँचि गेल । एकटा मामुली मजदूरसँ हम सुव्यवस्थित कारखानाक मालिक भए गेल छी । कतेको लोककेँ हमरा ओहिठाम नौकरी भेटल छैक । अपन तीन महला मकान अछि । दिल्लीमे समाज तँ नहि छैक ,मुदा परिचित लोकक बीचमे हमर धाख अछि । अपन समाज संस्थाक गतिविधिमे सेहो हम सक्रिय छी । सभ किछु भेल ,मुदा हमर गिरहस्ती अखनो

अपूर्ण अछि । कतेको बेर लता अपना दिस सँ प्रयास केलीह । मुदा हमरा आगू बढ़बाक साहस नहि भेल । ओ की-की सोचैत रहलीह,की-की कहैत रहलीह । हुनका हिसाबे हम बड़ लजकोटर छी । महानगरमे रहै जोकर नहि छी । मुदा हम जे छी,से छी । तकर की कए सकैत छी? । सत्य पुछैत छी तँ एतेक दिन धरि परिचित रहितहुँ हम लताकेँ चिन्हि नहि पाबि रहल छी । पता नहि ओ हमरा बारेमे की सोचैत छथि? मुदा हुनका हमरा प्रति एकटा आकर्षण छनि से तँ बहुत दिनसँ बुझा रहल अछि। से तहिओ छलनि जखन हम एकटा मामुली मजदूर छलहुँ । मुदा ई महानगर थिक । कैकबेर कैकगोटे ई बात कहि चुकल छथि ।

ककरो संगे कनीकाल हँसि-बाजि लेब दोसर बात छैक,मुदा बिआह कए जीवन भरि रहबामे बहुत सोचबाक काज छैक। लोक कोनो अपने लेल नहि जीबैत अछि । समाजक मर्यादक सम्मान करए पड़ैत छैक,करबाक चाही नहि तँ काल्हि जा कए हमरसभक धीया-पूता कतए ठाढ़ होएत ? ततबे नहि,लताकेँ सभदिन संपन्नतामे रहबाक आभ्यास छनि । हम सभदिन संघर्षेमे रहलहुँ । मानलहुँ जे आब हमरो हालति बहुत बदलि गेल ,मुदा तेँ की ? इएहसभ मोनमे घुमैत रहैत छल । हम ई बात लताकेँ कैकबेर कहबो करिअनि ,मुदा ओ तकरा बुझबाक प्रयास नहि करथि ,हँसि कए टारि देथि ।

ऐमहर लताक कारबार सभ बढ़लनि । अपनो एमबीए कए गेलीह । विदेशी कंपनीसँ बहुत नीक पैकेजपर नौकरी सेहो भेटि गेलनि । ई गप्प ओ हमरा अपने नहि कहलीह,कोनो आने माध्यमसँ पता लागल । साइत जानिए कए नहि कहने हेतीह जे ई

बात बुझि कए हम हुनकासँ आओर कन्नी ने काटि ली । एहिबातक अविआस हुनका छलनिहें आ से कोनो बहुत गलत नहि रहनि ।

एकदिन एहिना हम अपन मकानक छतपर पड़ल छलहुँ कि घंटी बाजल । गेटपर लता ठाढ़ि छलीह । हम धरफराएल नीचाँ उतरलहुँ । ओ किछु-किछु बड़बड़ाइत छलीह ।

"की बात छैक, आइ अहाँ बहुत चिंतित लागि रहल छी?"-हम पुछलिअनि ।

"आइ हम अहाँसँ निर्णय करए अएलहुँ अछि ।"

"कथीक निर्णय करबै?"

"देखू, बातकेँ जिलेबी जकाँ घुमाउ नहि ।

"हम अहाँक जोकर कतहुसँ नहि बुझाइत छी? । कहाँ राजा भोज आ कहाँ भोजबा तेली?"

" अहाँ हमरा अखनो टरका रहल छी ।"

"से बात नहि छैक ।"

" तँ की छैक? किछु तँ निर्णय करक चाही कि नहि? हम तँ किछुदिनक हेतु नौकरीक प्रशिक्षणक हेतु सिंगापुर जा रहल छी । तकर बाद आनो-आनो देश जाए पड़त । कुल मिला कए दू साल धरि ई प्रशिक्षण चलत । तकरबाद अपने देशमे रहब ।"

"हमरा ई गप्प बूझल अछि ।"

ओ हमरा दिस बकर-बकर देखैत रहि गेलीह ।

हम किछु स्पष्ट आश्वासन नहि दए सकलिअनि । ताहि बातसँ तमसा कए ओ चाहो नहि पीलथि,चलि गेलीह । कनीकालक हेतु हम सोचमे पड़ि गेलहुँ फेर भेल जे भगवान जे करैत छथि से नीके करैत छथि।

ओहिदिन ओसारापर बैसले-बैसल आँखि लागि गेल । सपनामे देखैत छी एकटा बुढ़िआ कें । ओ बेर-बेर हमर माथ हँसोथि रहल छथि । किछु-किछु कहिओ रहल छथि ।

"अहाँ के छी?"

"लएह सभ दिन अबंडे रहि गेलह । हम छी अहाँक माए ।"

" ओ! मुदा अहाँ तँ दोसर रंग लागि रहल छी । अहाँक पैर सोझ किएक नहि अछि? अहाँ नीकसँ ठाढ़ किएक नहि होइत छी?"

हमर पैर अहीं सोझ कए सकैत छी ।"

"से कोना?"

"हमर मोन अहींमे अटकि गेल अछि । जा धरि अहाँकें सभतरहें सुखी नहि देखि लेब, हम मुक्त नहि भए सकैत छी ।"

"हम तँ आब केहन सुखी, संपन्न छी ।"

" की बात कए रहल छी? अहाँ संपन्न तँ छी ,मुदा सुखी नहि छी ।"

"से की?"

" हमरासँ बात नहि नुकाउ । राति भरि अहाँ करोट बदलैत रहैत छी । हम ई दृश्य देखैत-देखैत आजिज भए गेल छी ।"

" अहाँ से सभ कोना देखैत रहैत छी? अहाँ कतए रहैत छी?"

"सभटा बात अहाँ नहि बुझि सकैत छी । हमर बात ध्यानसँ सुनू । दिल्लीकेँ तँ देखिए लेलिऐक । ई तँ एकटा बजार छैक । अपन माटि-पानि अपने होइ छैक । अपन गाम घुरि जाउ । जे धन-संपत्ति कमेलहुँ ओकरा सदुपयोग गामेमे भए सकैत अछि । हम अहाँ लेल एकटा कनिआ ठीक केने छी । ओकरासँ बिआह कए लिअ । अहाँ सभ दिन सुखी रहब । अहाँके सुखित देखिते हम मुक्तभए जाएब ।

" ओ के छथि?"

" अहींक बालसखा-कान्ता। अहाँ दिल्लीमे बड़का लोक बनबाक फेरमे पड़ि गेलहुँ । जहिआ अहाँ टीसनपर ट्रेन पकड़ैत रही तहिओ अहाँक पाछू-पाछू ओ आएल रहथि। "

"हमरा से बुझाएल । मुदा ताबे ट्रेन ससरि रहल छल । ओ ट्रेनक संगे कनीकाल दौड़लि, हाथ हिला-हिला कए किछु कहए चाहलीह । ट्रेन गति धए लेलक आ प्लेटफार्मसँ आगू बढ़ि गेल ।"

"जखन हम टीसनपरसँ अहाँकेँ बिदा कए घुरैत रही तँ ओकरा सिसकी पाड़ैत देखलिऐक। संकोचवश ओ किछु बाजलि नहि । हमहु नहि टोकलिऐक, हम आगू बढ़ि गेल रही । तहिआसँ ओ अहाँक बाट ताकि रहल छथि ।"

"ओ छथि कतए?"

"चिंता नहि करू। हम सभटा ओरिआन केने छी । काल्हिभोरे ओसभ अपने अओताह।"

" अहाँ एतेक दिन हमरा चलते बौआइत रहि गेलहुँ, हमरा पहिने किएक नहि कहलहुँ?"- से कहि हम ठोह पड़ि कए कानए लगैत छी ।

"अहाँ एहि लेल बेसी नहि सोचू । सभबातक समय होइत छैक । जखन जे हेबाक छैक, तखने होइत छैक ।"

एतबा गप्प कहि ओ निपत्ता भए गेलीह । हमर निन्न टुटि गेल । सपनाक बात अखनो हमरा मोनमे घुरिआ रहल छल, लगैत छल जेना माए अखनो सद्यः ठाढ़ि होथि । माएक मुँहे कान्ताक नाम सुनिते सीनेमाक रील जकाँ सभबात मोनमे घुमए लागल । केना इसकूलमे ओ हमरा लेल कैकबेर जलखै अनैत छलीह आ जाबे हम नहि खइतहुँ ओ किन्नहु नहि खइतथि । कैकबेर संगतुरिआसभसँ हमरा चलते झगड़ा कए लितथि । आओर कतेको बात सभ ध्यानमे अबैत रहल ।

भोर भए गेल छल । हम उठले छलहुँ कि केओ केबार ठकठकओलथि । देखैत छी जे हमर काका एकटा अपरिचित व्यक्तिक संगे ठाढ़ छथि। हुनका संगे एकटा अत्यंत सौम्य,तेजस्वी कन्या सेहो छथि ।

हम काकाकेँ प्रणाम करैत छी आ उत्सुकतासँ हुनकासभ दिस देखि रहल छी ।

"इहो सभ अपने लोक छथि । मदनबाबू अहाँक बारेमे फोन कए कहने रहथिन । हिनकर कन्या छथिन । हिनकर नाम छनि मोहित । सभदिन गामेकेँ धेने रहलाह । ताहिसँ हिनका कष्टो भेलनि, मुदा समाजक बहुत उपकार केलाह । हिनका सभटा जड़ी-बूटीक ज्ञान छनि । केहनो विमारीक इलाज कए दैत छथि। आ ई छथि हिनकर एकमात्र संतान-कान्ता। हिनका प्रणाम करिअनु ।"- हमर काका बजलाह ।

हम हुनका प्रणाम करैत छी । दुनूगोटे हमरा आशीर्वाद दैत छथि । मोहितबाबू कान्ताक हाथ हमरा पकड़बैत कहैत छथि- अहाँक धरोहर अहींकेँ समर्पित अछि ।"

ओहि राति जखन हम सुतए गेलहुँ तँ आँखि लगिते माएकेँ पुष्पक विमानमे उड़ैत देखलहुँ ।

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।